Booster Academy

Way To Success.....

SUBJECT :

प्राचीन भारत का इतिहास

BOOSTER NOTES

हड़प्पा संस्कृति:-कांस्य-युगीन सभ्यता

- हड़प्पा सभ्यता या सिंधु घाटी सभ्यता को इस नाम से इसलिए जाना जाता है क्योंकि इसके प्रथम अवशेष हड़प्पा नामक स्थल से प्राप्त हुए थे तथा इसके अतिरिक्त आरम्भिक स्थलों में से अधिकांश सिंधु नदी के किनारे अवस्थित थे।
- सर्वप्रथम 1826 ई. में चार्ल्स मेसन ने हडप्पा टीलों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया।
- 1856 में ब्रंटन बंधुओं (जॉन ब्रंटन व विलियम ब्रंटन) ने हड़प्पा टीलों की ईटों का प्रयोग लाहौर से कराची रेलवे लाईन बिछाने में किया।

❖ अलेक्जेण्डर कनिघंम

- भारतीय पुरातत्व विभाग की स्थापना (1861, कलकत्ता में, लॉर्ड कैनिंग के समय)
- कनिघंम ने तीन बार हड़प्पा टीले का सर्वेक्षण किया (1853, 1856 तथा 1872-73)

Note:- भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिदेशक सर जॉन मॉर्शल के निर्देशन में राय बहादुर साहनी ने 1921 में हडप्पा का तथा राखलदास बनर्जी ने 1922 में मोहनजोदड़ों का अन्वेषण किया।

- **नामकरण : इस सभ्यता के लिए तीन नामों का प्रयोग किया जाता है –**

  (1) हड़प्पा सभ्यता
  (2) सिंधु सभ्यता
  (3) सिंधु घाटी सभ्यता

  Note:- पुरातत्व परम्परा के अनुसार प्रथम उत्खनित स्थल के आधार पर सम्पूर्ण सभ्यता का नामकरण किया जाता है। अत: प्रथम उत्खनित स्थल हड़प्पा के आधार पर इस सभ्यता का सर्वाधिक उपयुक्त नाम **"हड़प्पा सभ्यता"** है।

- सर्वप्रथम जॉन मार्शल ने 1924 में **"Illustrated London News"** में प्रकाशित लेख में इसे **"सिंधु सभ्यता"** कहा।
- **"Gordon Childe"** ने अपनी पुस्तक **"The Urban Revolution"** में सिंधु सभ्यता को **प्रथम नगरीय क्रांति** कहा। क्योंकि भारत में प्रथम बार नगरों का उदय इसी सभ्यता के समय हुआ।
- हड़प्पा सभ्यता को **"तृतीय कांस्य-युगीन"** सभ्यता भी कहा जाता है, इसकी समकालीन अन्य **दो कांस्य युगीन सभ्यताएं-**
  (1) मिश्र (ii) मेसोपोटामिया

- **विशेषताएं**
  - कांस्य युगीन सभ्यता
  - नगरीय सभ्यता
  - विश्व की सबसे बड़ी सभ्यता
  - यह भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान में फैली हुई है।

BOOSTER ACADEMY

हड़प्पा सभ्यता का विस्तार

माण्डा (जम्मू की चेनाब नदी के किनारे)

1600 कि.मी.

सुत्कागेंडोर (ब्लुचिस्तान, पाकिस्तान – दाश्क नदी)

1400 कि.मी.

आलमगीरपुर (उत्तरप्रदेश- हिण्डन नदी के किनारे)

दैमाबाद (अहमदनगर, महाराष्ट्र – गोदावरी की सहायक प्रवरा नदी के किनारे)

Note:- हड़प्पा सभ्यता का भारतीय सीमा में सर्वाधिक **उत्तरी छोर माँडा (जम्मू)** जबकि सभ्यता का सर्वाधिक **उत्तरी छोर शोर्तुगई (अफगानिस्तान)** है।

- हड़प्पा सभ्यता का कुल क्षेत्रफल **लगभग 13 लाख वर्ग किलोमीटर** है एवं आकार त्रिभुजाकार है।
- सर्वप्रथम जॉन मार्शल ने 1931 ई. में सारगोन (मेसोपोटामिया) अभिलेख के आधार पर हड़प्पा सभ्यता की तिथि 3250-2750 ई.पू. निर्धारित की थी।

❖ हड़प्पा सभ्यता का काल निर्धारण:-

विद्वान	तिथि
फेयर सर्विस	2000 ई. पू. 1500 ई. पू.
अर्नेस्ट मैके	2800 ई. पू. 2500 ई. पू.
सी. जे. गैड	2350 ई. पू. 1750 ई. पू.
डी. पी. अग्रवाल व रोमिला थापर	2300 ई. पू. 1750 ई. पू.
N.C.E.R.T.	2500 ई. पू. 1800 ई. पू.

Note:- रेडियो कार्बन 14 (C-14) के विश्लेषण के आधार पर D.P. अग्रवाल द्वारा हडप्पा सभ्यता की तिथि 2300 ई.पू. से 1750 ई. पू. मानी गयी है। यह मत सर्वाधिक मान्य प्रतीत होता है।

❖ सिन्धु सभ्यता के निर्माता

विद्वान	सिंधु सभ्यता के निर्माता
1. डा. लक्ष्मण स्वरूप व रामचन्द्र	आर्य
2. राखलदास बनर्जी	द्रविड़
3. फेयर सर्विस व रोमिला थापर	ग्रामीण संस्कृति
4. अमलानंद घोष व धर्मपाल अग्रवाल	सोंथी संस्कृति

✓ हड़प्पा सभ्यता के लोग मुख्यत: भूमध्य सागरीय थे।

✓ हड़प्पा सभ्यता के निर्माता संभवत: द्रविड़ थे।

BOOSTER ACADEMY

❑ मुख्य पुरातात्विक स्थलः-

❖ हडप्पाः-

- पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के पुराने मोण्टगोमरी जिलें व वर्तमान शाहीवाल जिले में **रावी नदी** के बायें तट पर स्थित हडप्पा टीले की खोज सर्वप्रथम चार्ल्स मेसन ने की।
- 1921 ई. दयाराम साहनी ने इसका सर्वेक्षण किया व बाद में इस स्थान का उत्खनन किया।
- ऋग्वेद के हरियूपिया का समीकरण हडप्पा से किया गया है।

❖ महत्वपूर्ण अवशेष:-

- स्त्री के गर्भ से निकलते हुए पौधे वाली मृणमूर्ति।
- मनुष्य के शव के साथ बकरे का अस्थिपंजर।
- हड़प्पा के आवाास क्षेत्र के एक कब्रिस्तान है, जिसे **कब्रिस्तान आर – 37 / कब्रिस्तान – H नाम** दिया है, जिसका उत्खनन जे. एम. केनोयर (J.M. Kenoyer) ने किया।
- हडप्पा से लकडी के ताबूत में शवाधान का साक्ष्य प्राप्त हुआ है।
- यहाँ के कंकालों में गठिया या जोडों के दर्द के साक्ष्य मिले।
- हड़प्पा क्षेत्र से 6-6 की दो पंक्तियों में निर्मित कुल बारह कक्षों वाले एक **अन्नागार** का साक्ष्य प्राप्त हुआ है। प्रत्येक अन्नागार **50×20 फीट** का है।
- ईटों के वृत्ताकार चबूतरें, कर्मचारियों के आवास व मजदूरों के बैरक।
- सर्वाधिक अभिलेख युक्त मुहरें हड़प्पा से प्राप्त हुई है, जबकि सर्वाधिक मुहरें मोहनजोदडों से मिली है।
- काँसे का दर्पण, प्रसाधन मंजूषा, ताँबे की मानवाकृतीय आकृति।

❖ मोहनजोदडों: (सिन्ध का नखलिस्तान, मृतकों का टीला)

- यह सिंध के लरकाना जिले में **सिन्धु नदी** के दाहिने तट पर स्थित है। इसकी खोज राखलदास बनर्जी ने 1922 ई. में की। यहां से सभ्यताओं के **सात क्रमिक स्तर** मिलते है।

❖ महत्वपूर्ण अवशेष:-

- मोहनजोदडों की सबसे बडी इमारत इसका विशाल अन्नागार है। (क्षेत्रफल 45. 71 मी. लम्बा X 15.23 मी. चौडा)
- **विशाल स्नानागार**
  - यह 39 फीट (11.89 मीटर) लम्बा, 23 फीट (7.01 मीटर) चौड़ा एवं 8 फीट (2.44 मीटर) गहरा है। जॉन मार्शल ने इसे तत्कालीन विश्व का एक आश्चर्यजनक निर्माण कहा है।
  - वृहत् स्नानागर की तुलना डी. डी. कोशाम्बी ने **पुष्कर / कमलताल** से की है।
  - विश्व में वाटर प्रुफिंग का पहला उदाहरण मोहनजोदड़ो स्नानागर से ही मिला है।
- मोहनजोदडों के पश्चिमी भाग में स्थित दुर्ग टीले के ऊपर कुषाण शासक कनिष्क ने एक स्तूप का निर्माण करवाया था, अतः इसे **'स्तूप टीला'** भी कहा जाता है।
- मोहनजोदडों से प्राप्त सबसे महत्वपूर्ण धातु निर्मित मूर्तियों में काँस्य नर्तकी व प्रस्तर की योगी की मूर्ति है।

BOOSTER ACADEMY

- मोहनजोदडों से किसी भी कब्रिस्तान के साक्ष्य नहीं मिले।
- मुद्रा पर अंकित पशुपतिनाथ (शिव) की मूर्ति, हाथी का कपालखण्ड, घोडे के मृणमूर्ति, ऊँट की हड्डियाँ, सर्वाधिक कुओं की प्राप्ति, चाँदी के बर्तन में कपड़े के अवशेष, कूबडदार बैल का खिलौना, मलेरिया का साक्ष्य, बकरे के पीछे चाकू लिए हुए व्यक्ति का चित्रण आदि।

❖ चन्हूदडों:-

- **नदी - सिन्धु नदी**
- **खोज -** 1931 N.G. मजूमदार
- **उत्खनन - 1935 अर्नेस्ट मैके**

Note:- चन्हूदडों से प्राक् हडप्पा संस्कृति, जिसे झूकर और झांगर संस्कृति कहते है, के अवशेष मिले है।

❖ महत्वपूर्ण अवशेष:-

- चन्हूदडों एकमात्र पुरास्थल है जहां से वक्राकार ईंटें मिली है तथा चन्हूदडों से किसी दुर्ग का अस्तित्व नहीं मिला है।
- चन्हूदडों **मनके** बनाने का प्रमुख केन्द्र था।
- स्याही, लिपिस्टिक, अलंकृत हाथी के खिलौने आदि।

❖ लोथल:-

- **भोगवा नदी** (गुजरात)
- **खोज:-** 1957 S.R. राव
- लोथल हडप्पा सभ्यता का प्रमुख बंदरगाह था तथा इसके पूर्वी भाग में जहाज की गोदी (डॉक -यार्ड) मिली है। इसका आकार 214 x 36 मीटर है। तथा गहराई 3.30 मीटर है।
- लोथल का गोदीबाडा सबसे विशाल हडप्पा संरचना है।
- लोथल से चावल का प्रथम साक्ष्य मिला है।
- लोथल की समुद्री देवी का नाम सिकोतरी माता है।
- बाजरे का साक्ष्य, फारस की मुहर, **तीन युग्ल समाधियां** (एस. आर. राव ने इसे सती प्रथा का प्रतीक माना है।), घोडे की लघु मृणमूर्ति, **अग्निकुण्ड के साक्ष्य,** पंचतंत्र की कहानियां (लोथल से प्राप्त मृद्भाण्ड पर एक कौवा तथा एक लोमड़ी उत्कीर्ण है) आदि।

Note:- हड़प्पा सभ्यता की सबसे बड़ी संरचना क्रमश : लोथल का गोदीबाड़ा, हड़प्पा का अन्नागार, मोहनजोदड़ो का अन्नागार, मोहनजोदड़ो का स्नानागार है।

❖ कालीबंगा:

- घग्घर नदी (पुरानी सरस्वती व दृषद्वती नदी), हनुमानगढ़ जिला (राजस्थान)
- **खोज:-** 1952 ई. में अमलानंद घोष ने
- **उत्खनन:-** 1961 ई. में B.K. थापर व B.B. लाल ने, सभ्यता के पांच स्तर मिले है।

Note:- अलंकृत ईंट व पूरा हाथी दांत केवल कालीबंगा से मिला है।

BOOSTER ACADEMY

Booster Academy
Way To Success.....

- कालीबंगा से प्राक् हडप्पा काल के **''जुते हुए खेत का''** (दक्षिणी पूर्वी भाग में) साक्ष्य मिला है। दो फसलों के साक्ष्य चना व सरसों।
- कालीबंगा व लोथल से खोपडी की शल्य चिकित्सा के प्रमाण मिले है।
- कालीबंगा में घर **''कच्ची ईटों''** के बने है, अतः कालीबंगा दीनहीन बस्ती प्रतीत होती है।
- कालीबंगा से मातृदेवी की कोई भी मूर्ति नहीं मिली।
- भूकम्प के प्राचीनतम साक्ष्य मिले।
- **आयताकार 7 अग्निवेदिकाएं /हवन कुण्ड, कुएं, बेलनाकार मुहरें, ऊंट की अस्थियां, लकड़ी की नालियां आदि।**

  Note:- कालीबंगा से मिट्टी की काले रंग की चूडियां प्राप्त हुई है अतः इसका नाम कालीबंगा रखा गया।

❖ सुरकोटदा:

- गुजरात के कच्छ जिले में
- **खोज:- 1964 में जगतपति जोशी ने**
- शोपिंग कॉम्पलेक्स के साक्ष्य।

  Note:- सुरकोटदा से घोड़े की अस्थियां मिली है। यह महत्वपूर्ण खोज हैं क्योंकि घोडे की अस्थियां अन्य किसी भी हडप्पाकालीन स्थल से नहीं मिली।

❖ बनवाली:-

- हरियाणा के हिसार जिले में, **घग्घर नदी के किनारे**
- **खोज -** 1973 रविन्द्र सिंह विष्ट
- बनवाली में भी कालीबंगा की तरह प्राक् – हड़प्पा एवं हड़प्पा कालीन संस्कृति मिलती है।

Note:- बनवाली में जल निकास प्रणाली, जो सिंधु सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी, का अभाव है।

- खिलौने के रूप में हल आकृति, जौ के अवशेष, धावन पात्र (Wash Basin), तिल व सरसों के ढेर आदि महत्वपूर्ण अवशेष मिले है।

❖ राखीगढ़ी:-

- हरियाणा में स्थित, **घग्घर नदी के किनारे**
- **खोज:-** रफीक मुगल ने

  Note:- 2015-16 ई. में हुई खोज के आधार पर राखीगढ़ी का क्षेत्रफल 410 हेक्टयर माना गया है। इस आधार पर कुछ विद्वान राखीगढ़ी को समस्त हड़प्पा स्थलों में सबसे बड़ा मानते है।

❖ धौलावीराः-

- गुजरात के कच्छ जिले में, मानसर व मानहर नदियों के किनारे।
- **खोज:-** 1967- 1968 ई. में जगतपति जोशी द्वारा।
- **उत्खनन -** 1990 - 91 में रविन्द्र सिंह विष्ट।

92162 61592,
92562 61594
Download The App Now : Booster Academy
/KAPIL CHOUDHARY RTS
/BOOSTER ACADEMY RAS

- धौलावीरा को सफेद कुआँ / वींरा का कुआँ, आयताकार नगर कहा जाता है।
- धौलावीरा के उत्थान एवं पतन के **सात सांस्कृतिक चरण** प्राप्त होते हैं।
- हड़प्पा सभ्यता की पहली **खगोलीय पर्यवेक्षणशाला** धौलावीरा से मिली है।
- सुनामी जैसे समुद्री तूफान का प्राचीनतम् साक्ष्य यहाँ से मिला है। यहाँ 16 तालाब भी मिले हैं।
- धौलावीरा से खेल के स्टेडियम तथा सूचना पट्ट के साक्ष्य मिले है।
- धौलावीरा से बांध निर्माण (जल संग्रहण) व नहर प्रणाली के साक्ष्य भी मिले है।

❖ मीत्ताथल:-

- हरियाणा के भिवानी जिले में
- **खोज:-** 1968 ई. में सुरजभान ने
- **अवशेष:-** तांबे की कुल्हाडी व **कुनाल** नामक स्थान से दो चांदी के मुकुट मिले है।

❖ रोपड़:-

- पंजाब में **सतलज** नदी के तट पर
- **खोज:-** 1950 - बी. बी. लाल ने।
- **उत्खनन** – 1953 - 1956 में यज्ञदत्त शर्मा द्वारा।
- स्वतंत्रता के पश्चात् **भारत में खोजा गया प्रथम स्थल।**
- रोपड़ की खुदाई में गुप्तकाल व मध्यकाल तक के संस्कृति के पांच स्तरीय क्रम मिले है।

Note:- रोपड़ से मानव की कब्र के साथ कुत्ते के शवाधान के प्रमाण भी मिले है।
Note:- रोजदी (गुजरात) स्थल से हाथी के अवशेष मिले है।
Note:- हरियाणा स्थित **भीराना** प्राचीनतम हड़प्पा स्थल माना जाता है।
Note:- **सनौली** (बागपत, उत्तरप्रदेश) हड़प्पा सभ्यता का ज्ञात अंतिम कब्रगाह स्थल है। इसे **विश्व का विशालतम कब्रगाह** स्थल माना जाता है।
Note:- कालीबंगा, बनवाली व राखीगढ़ी प्राक् हडप्पन स्थल है, जबकि रंगपुर (गुजरात) व रोजदी हडप्पोत्तर कालीन स्थल

BOOSTER ACADEMY

❖ नगर नियोजन (Town Planing)

नियोजित शहरी केन्द्र

- पश्चिमी टीला (अधिक ऊँचाई पर) → दुर्ग (दुर्ग टीला) → पुरोहित वर्ग
- पूर्वी टीला (कम ऊँचाई पर) → निचला शहर (नगर टीला) → व्यापारी, नागरिक, सैनिक व शिल्पी वर्ग

❖ अपवाद:-

- धौलावीरा तीन भागों में (1 दुर्ग, 2. मध्य नगर, 3. निचला नगर) विभक्त था, चन्हूदड़ो एकमात्र नगर था जो दुर्गीकृत नहीं था। **Note:-** केवल लोथल व सुरकोटदा के दुर्ग और नगर एक ही रक्षा प्राचीर से घिरे है।
- **सड़के**
  - सिन्धु सभ्यता के नगर नियोजन में समकोण एवं ग्रिड प्रणाली के आधार पर सड़कों का निर्माण किया गया, साथ ही नगर में एक मुख्य सडक (जिसे राजपथ कहा गया) उत्तर से दक्षिण की ओर गुजरती थी तथा सहायक सडके समकोण पर इससे मिलती थी।
  - नगर की प्रमुख सड़क को प्रथम सड़क कहा गया है। नगरों में प्रवेश पूर्वी सड़क से होता था और जहाँ प्रथम सड़क से मिलती थी, उसे **"ऑक्सफोर्ड सर्कस"** कहा गया है। सड़के मिट्टी की बनी होती थी।
  - मोहनजोदड़ो की सबसे चौडी सड़क 10 मीटर से कुछ अधिक चौडी थी।
- **नालियां** –
  - जल निकास प्रणाली सिंधु सभ्यता की अद्वितीय विशेषता थी जो अन्य समकालीन सभ्यताओं में नहीं मिलती है।
  - बनावली में नालियों का अभाव था, कालीबंगा में लकड़ी की नालियों के साक्ष्य मिले।
- **ईंटें**
  - हड़प्पा सभ्यता के भवन एवं नालियाँ पक्की ईटों से बने हुए थे।
  - सिंधु सभ्यता में ईटों का अनुपात 4:2:1 था। सामान्यत: एक ईंट का आकार 10.25 × 5 × 2.25 था।
  - केवल कालीबंगा में अलंकृत ईटों का प्रयोग हुआ।
  - कालीबंगा व रंगपुर में कच्ची ईटों का प्रयोग हुआ है।

BOOSTER ACADEMY

❖ राजनीतिक व्यवस्थाः-

- हन्टर के अनुसार मोहनजोदड़ों का शासन राजतंत्रात्मक न होकर जनतंत्रात्मक था।
- हड़प्पा काल में व्यापार वाणिज्य के विकास को देखकर लगता है कि संभवतः हड़प्पा का शासन **''वाणिज्य वर्ग''** के हाथ में था।

प्रशासनिक राजधानी

↓

सभ्यता के शहर → हड़प्पा
↓
अरबी शहर → मुल्तान
↓
कुषाण शहर → पुरूषपुर (पेशावर)

मोहनजोदड़ों → स्टुअर्ट पिग्ट ने जुडवां राजधानी कहा
↓
मंसूरा → मार्टिन व्हीलरः- अरब शहर से तुलना की
↓
मथुरा → स्टुअर्ट पिग्टः कुषाण शहर से तुलना

Note:- स्टुअर्ट पिग्गट ने हड़प्पा व मोहनजोदड़ों को एक **"विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानी"** कहा है।
Note:- कालीबंगा भी सैंधव साम्राज्य की **'तीसरी राजधानी'** थी।

❖ सामाजिक जीवनः-

- मुहरों पर अंकित चित्र व मातृदेवी की मूर्ति से यह लगता है कि हड़प्पा समाज सम्भवतः **मातृ सत्तात्मक** था।
- मनोरंजन हेतु पासे का खेल (शतरंज), नृत्य, पशुओं की लड़ाई आदि साधन थें।
- हड़प्पा से आंशिक शवाधान, मोहनजोदड़ों से कलश शवाधान तथा कालीबंगा से प्रतीकात्मक शवाधान के साक्ष्य मिले है।

❖ धार्मिक जीवनः-

- हड़प्पा सभ्यता के लोग मातृदेवी, पुरूष देवता (पशुपति नाथ), लिंग-योनि, वृक्ष, जल आदि की पूजा करते थे। सबसे ज्यादा पूजा **''मातृदेवी''** की होती थी। मार्शल ने मातृदेवी कहा है।
- **पशुपति मुहरः-** मोहनजोदड़ों से प्राप्त पशुपति शिव मुहर को जॉन मार्शल ने **''आद्यशिव''** की संज्ञा दी थी। इसमें एक त्रिमुखी पुरूष को चौकी पर पद्मासन मुद्रा में बैठे दिखाया गया है।
- उसके सिर में सींग है। तथा उसके दायें ओर बाघ (व्याघ्र) व हाथी तथा बांयी ओर गैंडा व भैंसा तथा चौकी के नीचे 2 हिरण उत्कीर्ण हैं अतः इस मुहर में जानवरों की कुल संख्या 6 है। जबकि जानवरों के कुल प्रकार 5 है।
- हड़प्पा सभ्यता से मिले स्वास्तिक व चक्र **''सूर्यपूजा''** के प्रतीक है। मूर्तिपूजा का आरम्भ सिंधु सभ्यता से ही होता है।
- पीपल सबसे पवित्र वृक्ष तथा बत्तख को पवित्र पक्षी माना जाता था।

BOOSTER ACADEMY

❖ आर्थिक जीवन:-

- हड़प्पाकालीन अर्थव्यवस्था कृषि, पशुपालन एवं आन्तरिक व विदेशी व्यापार पर निर्भर थी। अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार **''कृषि''** ही था।
- हडप्पा सभ्यता में 9 प्रकार की फसलों की अब तक पहचान की गई है चावल, गेंहूँ (तीन किस्में), जौ (दो किस्में), खजूर, तरबूज, मटर, राई, तिल, कपास।
  Note:- हड़प्पा सभ्यता के लोगों का मुख्य खाद्यान्न गेंहूँ व जौ थे।
- सिंधु सभ्यता के लोग रागी से अपरिचित थें।
- लोथल से चावल व बाजरे के, बनवाली से जौ, तिल, सरसों के तथा हडप्पा से गेंहूँ व जौ के दाने साक्ष्य मिले है।
- सर्वप्रथम कपास उगाने का श्रेय सिंधु सभ्यता के लोागें को है।

❖ पशुपालन:-

- सुरकोटदा से घोडें के अस्थिपंजर व राणाघुडई (ब्लूचिस्तान) से घोडे के दांत (जबड़ा) के अवशेष मिले है। लोथल से घोडें की मृणूर्तियां मिली है। परन्तु सिंधुवासी घोडें से अपरिचित थें।
- सिंधुवासियों को गैंडा (भारतीय गैंडा का एकमात्र प्रमाण) आमरी से मिला है। परन्तु शेर का कोई भी साक्ष्य नहीं मिला।
- हडप्पा सभ्यता के लोग बैल, गाय, भेड, बकरी, सुअर आदि पालते थें, परन्तु गाय की कोई आकृतियुक्त मूर्ति नहीं मिली
- हडप्पा संस्कृति में कूबड वाला बैल विशेष महत्व रखता था।

❖ व्यापार वाणिजय:-

- हडप्पा सभ्यता मुख्यत: व्यापार प्रधान थी। व्यापार **''वस्तु विनिमय''** (Bartar System) द्वारा होता था। धातु के सिक्कों का प्रयोग नहीं होता था।
- सिंधु सभ्यता के सुमेरियन सभ्यता व मिस्र की सभ्यता से व्यापारिक सम्बन्ध थे।
- लोथल से फारस की मुहरें तथा कालीबंगा से बेलनाकार मुहरें मिली है।
- बहरीन (दिलमुन) के व्यापारी विदेशी व्यापार में बिचोलियों का कार्य करते थे।
- मेसोपोटामिया (सुमेरिया) के अभिलेखों में **मेलुहा (सिंधु प्रदेश** – नाविकों का देश एवं काले विदेशी लोगों की भूमि कहा गया है।) के साथ व्यापार के दो मध्यवर्ती केन्द्रों का उल्लेख किया है।
  1. दिलमुन(बहरीन) - सुमेरियन लेखों में उगते सूर्य, साफ-सुथरा नगर तथा हाथियों का देश कहा है।
  2. माकन (ओमान) -

  Note:- हडप्पावासियों को चांदी की जानकारी थी ये लोग राजस्थान की जावर व अजमेर खानों से चांदी प्राप्त करते थे।

❖ प्रमुख आयातित वस्तुएँ

वस्तुएं	क्षेत्र
टिन	अफगानिस्तान, ईरान
ताबां	खेतडी, (राजस्थान) ब्लूचिस्तान
चांदी	ईरान, अफगानिस्तान
सोना	अफगानिस्तान, फारस, दक्षिणी भारत
लाजवर्द	मेसोपोटामिया, अफगानिस्तान

सेलखड़ी	ब्लूचिस्तान, राजस्थान, गुजरात
नीलरत्न	बदख्शां (अफगानिस्तान)
शंख / कौडियां	सौराष्ट्र, दक्षिणी भारत

❖ शिल्प कला व धातुः-

- हडप्पा सभ्यता कांस्युगीन सभ्यता थी।
  Note:- हडप्पा सभ्यता के मृदभाण्ड **''लाल एवं काले''** रंग के होते थें।
- हडप्पा सभ्यता के लोग लोहे से परिचित नहीं थे।

❖ लिपिः-

- सिंधु लिपि को सर्वप्रथम पढने का प्रयास 1925 ई. वेडेन ने किया। (के.एन.वर्मा, प्रो. एस. आर राव एवं आई. महादेवन ने लिपि पढ़ने का प्रयास किया।)
- सिंधु लिपि भावचित्रात्मक (Pictographic) है तथा उनकी लिखावट क्रमश: दांयी ओर से बांयी ओर की जाती है।
- सिंधु/ हडप्पा लिपि में 52/64 मूल चिह्न व 250 -400 तक चित्राक्षर है।
- इस लिपी में सर्वाधिक U आकार का प्रयोग हुआ है। तथा इस लिपि का सर्वाधिक प्रचलित चित्र **मछली** का है।
- हडप्पा सभ्यता में मानकीकृत मापतोल प्रचलित था तोल की इकाई 16 के अनुपात में थी जैसे 16, 64, 160, 320, 640 आदि इनके बाट दशमलव प्रणाली पर आधारित थे।
- मोहनजोदड़ो से सीप का बना हुआ तथा लोथल से हाथीदांत का बना हुआ पैमाना (स्केल) मिला है।

❖ मुहरेः-

- हडप्पाकालीन मुहरे सेलखडी (Steatite) की बनी है।
- लोथल व देसलपुर से ताम्बें की बनी मुहरे प्राप्त हुई है। लोथल से **बटन** के आकार की मुहर मिली है।
- सैन्धव मुहरे वर्गाकार, आयताकार, गोलाकार व बेलनाकार है तथा सबसे अधिक मुहरें **''वर्गाकार''** है।
- हडप्पा सभ्यता की मुहरों पर सर्वाधिक अंकित पशु एक श्रृंग पशु है।

क्र.सं.	विद्वान	पतन के कारण
1.	गार्डन चाइल्ड, व्हीलर, पिग्गट	आर्यो का आक्रमण
2.	फेयर सर्विस, रफीक मुगल, बी. के थापर	पारिस्थितिकी असंतुलन
3.	एस. आर. राव. जान मार्शल मैके	बाढ़
4.	धर्मपाल अग्रवाल, रफीक मुगल	घग्गर, हकरा नदी क्षेत्र का सूख जाना
5.	H.T. लैम्बिरिक, माधोस्वरूप, डेल्स	सिंधु नदी का मार्ग बदलना
6.	आर.एल. स्टाइन, ए.एन.घोष	शुष्कता एवं जलवायु परिवर्तन
8.	एम. आर. साहनी, रॉबर्ट राइक्स	भू- तात्विक परिवर्तन (भकूम्प के कारण बाढ़)

BOOSTER ACADEMY

वैदिक संस्कृति / आर्य संस्कृति

- आर्य शब्द गुण का द्योतक है जिसका अर्थ है – श्रेष्ठ/उत्तम।
- सिन्धु सभ्यता नगरीय थी, वहीं वैदिक सभ्यता मूलत: ग्रामीण थी।
- वैदिक संस्कृति सिन्धु सभ्यता के बाद अस्तित्व में आई। इसकी जानकारी वेदों से मिलने के कारण इसे वैदिक संस्कृति कहा जाता है।

❒ वेदः-

- **वेदः- ''वेद''** धातु से निर्मित, अर्थ – जानना
- वे ग्रंथ जिनमें ज्ञान का भंडार निहित है, वेद कहलायें।
- **4 वेदः-** ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद
- चारों वेदों का सम्मिलत रूप **संहिता** कहलाता है।
  अपौरूषेयः- दैवीय रचना होने के कारण वेद को "अपौरूषेय" कहा गया ।
  श्रुतिः- श्रवण परंपरा पर आधारित होने के कारण वेदों को "श्रुति" कहा गया।

❖ ऋग्वेदः-

- **उपनाम** - दसतयी
- **उपवेद** – आयुर्वेद
- **कार्य** - देवताओं को यज्ञ में बुलाना और ऋचाओं का पाठ करते हुए देवों की स्तुति करना।
- **पुरोहित** - होतृ/होता
- ऋग्वेद में कुल दस मंण्डल, 1028 सूक्त (इनमें 11 बालखिल्य सूक्त है, ये आठवें मण्डल में है) व 10600 मंत्र है।
- **ऋग्वेद की पॉंच शाखाएँ हैं-** शाकल, वाष्कल, आश्वलायन, शांखायन तथा मांडुक्य। इनमें से वर्तमान में शाकल संहिता ही उपलब्ध है।
- ऋग्वेद का **2 से 7 वां मंडल सर्वाधिक प्राचीन** है, इसे वंश मंडल/परिवार मंडल के नाम से जाना जाता है। क्योंकि इनका संबंध किसी न किसी ऋषि परिवार से है।
- 3^{rd} मंडल में प्रसिद्ध **गायत्री मंत्र** दिया गया है। जो सवितृ नामक देवता को समर्पित है। इस मंडल का संबंध विश्वामित्र से है।
- 4^{th}मंडल ने कृषि प्रक्रिया का उल्लेख है।
- 7^{th} मंडल वरूण देवता को समर्पित है इसमें अश्वमेघ यज्ञ का उल्लेख है।
- 9^{th}मंडल सोम देवता को समर्पित है। इसे सोम मंडल भी कहते है।
- 10^{th} मंडल सबसे नवीनतम मंडल है। इस मंडल के प्रमुख सूक्तों में पुरूष सूक्त, नासदीय सूक्त, नदी सूक्त, विवाह सूक्त, आदि का नाम आता है।
- पुरूष सूक्त में सृष्टि की उत्पत्ति का सिद्धांत दिया गया है। एवं इसमें चारों वर्गों की उत्पत्ति विराट पुरूष के विभिन्न अंगों से बताई गई है। **जैसे**:-

BOOSTER ACADEMY

मुख-ब्राह्मण भुजा- क्षत्रिय जंघा- वैश्य पैर - शुद्र

❖ सामवेद:-

- **उपवेद-** गन्धर्ववेद
- **कार्य -** ऋचाओं का सस्वर गायन करना।
- **पुरोहित -**उद्गाता/ उद्गात्रि
- साम का अर्थ **''गान''** होता है।
- यह भारतीय संगीत का प्राचीनतम ग्रंथ है।

3 पाठ

कौथुम	जैमिनीय	राणायनीय
↓	↓	↓
गुजरात क्षेत्र	**कर्नाटक क्षेत्र**	**महाराष्ट्र क्षेत्र**

- सामवेद का प्रथम दृष्टा वेदव्यास के शिष्य जैमिनी को माना जाता है।
- गीता में श्री कृष्ण ने स्वयं को वेदों में सामवेद कहा है।

❖ यजुर्वेद:-

- **उपवेद-** धनुर्वेद
- **कार्य-** याज्ञिक कर्मकांडों का समुचित अनुष्ठान
- **पुरोहित-** अध्वर्यु
- यह कर्मकांड प्रधान वेद है, जिसमें यज्ञीय कर्मकांडों का विवेचन किया गया है। इसके दो भाग है।

✓ शुक्ल यजुर्वेद
✓ कृष्ण यजुर्वेद

- **यजुर्वेद पॉंच शाखाओं में विभाजित है-**
  1. काठक 2. कपिष्ठल 3. मैत्रायणी 4. तैत्तिरीय 5. वाजसनेयी

BOOSTER ACADEMY

➢ **कृष्ण यजुर्वेद तथा शुक्ल यजुर्वेद में अंतरः-**

शुक्ल यजुर्वेद	कृष्ण यजुर्वेद
यह नवीन है।	यह प्राचीन है।
यह केवल पद्यात्मक है।	यह गद्य-पद्य में लिखित है।

❖ अथर्ववेदः-

- **उपवेद** – शिल्पवेद
- **कार्य-** यज्ञ का पूरा निरीक्षण करना, यह तीनों अन्य पुरोहितों के यज्ञ संपादन का निरीक्षण भी करता था, सर्वोच्च पुरोहित था
- लौकिक जीवन से संबंधी, अवैदिक प्रभाव।
- **उपनाम -** ब्रह्म वेद,महा वेद, भेषज्य वेद।
- इस वेद में अवैदिक परंपरा का प्रभाव मिलता है तथा इसमें जादू टोना, तंत्र-मंत्र, औषधि विज्ञान, अकाल, सती प्रथा तथा लौकिक जीवन के बारे में जानकारी दी गई है। इस कारण इसे वेदत्रयी से बाहर रखा गया है।
- **इसकी दो शाखायें उपलब्ध होती है।**

✓ **शौनक शाखा -** सर्वाधिक प्रमाणिक

✓ पिप्पलाद शाखा

वैदिक साहित्य

वेद	ब्राह्मण ग्रंथ	आरण्यक	उपनिषद
ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषीतिकी	ऐतरेय, कौषीतिकी	ऐतरेय, कौषीतिकी
शुक्ल यजुर्वेद	शतपथ	वृहदारण्यक	वृहदारण्यक, ईश
कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय	तैत्तिरीय	कठ, मैत्रायणी, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर
सामवेद	पंचविशं, षडविंश, जैमिनीय	छान्दोग्य, जैमिनीय	छान्दोग्य, जैमिनीय, केन
अथर्ववेद	गोपथ	कोई आरण्यक नहीं	मुण्डक, माण्डुक्य, प्रश्न

❑ ब्राह्मण ग्रंथः-

- वेदों की सरल व्याख्या करने हेतु ब्राह्मण ग्रंथ की गद्यात्मक रूप से रचना की गई।
- यहाँ ब्रह्म का अर्थ यज्ञ से है। अतः यज्ञीय विषयों का प्रतिपादन करने वाले ग्रंथ ब्राह्मण कहलाये, प्रत्येक वेद के लिए अलग-अलग ब्राह्मण ग्रंथों का विधान किया गया।
- शतपथ ब्राह्मण को **''लघु वेद''** कहा गया है।

❑ आरण्यक ग्रंथ

- आरण्यक ग्रंथों में मंत्रों का गूढ एवं रहस्यवादी अर्थ बताया गया हैं इनका पाठ केवल एकांत में ही संभव है। और जंगलों में पढें जाने के कारण ये आरयण्क कहलाये।
- कालांतर में इन्हीं आरण्यक ग्रंथों से उपनिषद ग्रंथों का विकास हुआ।

BOOSTER ACADEMY

Booster Academy
Way To Success.....

❑ उपनिषद:-

- गुरू के समीप बैठकर एकांत में जिस विद्या का अध्ययन किया जाता है, उसे उपनिषदों में समाहित किया गया हैं।
- यह मूलतः ज्ञानमार्गी रचनायें है जिनमें आत्मा, परमात्मा तथा अन्य रहस्यात्मक विषयों पर चर्चा की गई है।
- उपनिषदों की रचना मध्यकाल तक चलती रही। जैसे- अकबर के काल में अल्लोपनिषद् की रचना की गई।
- मुक्तिकोपनिषद् के अनुसार इनकी कुल संख्या 108 मानी जाती है।
- मुण्डकोपनिषद - **''सत्यमेव जयते''**
- माण्डुक्य उपनिषद् सबसे छोटा उपनिषद् है एवं वृहदारण्यक उपनिषद् सबसे बड़ा है।
- छान्दोग्य उपनिषद् (सबसे प्राचीन उपनिषद्) में **सत्काम जाबाल** की कथा है।
- **"तमसो मा ज्योतिर्गमय"** वृहदारण्यक उपनिषद् में है।

❑ वेदांग:-

- वेदों को सरलता से समझने एवं वैदिक कर्मकांडों में सहायता के उद्देश्य से वेदांग साहित्य की रचना की गई।
- सर्वप्रथम इनका वर्णन मुण्डकोपनिषद में मिलता है।
- वेदांग साहित्य की कुल संख्या 06 है।

1. शिक्षा (नासिका):-

- वैदिक स्वरों का शुद्ध उच्चारण करने के लिए शिक्षा वेदांग का निर्माण हुआ। प्राचीनतम ग्रंथ - प्रातिशाख्य सूत्र है।

2. कल्प (हाथ) :-

- कर्मकांडों का विवेचन करने एंव यज्ञ संबंधी विधि नियमों को सरल भाषा में समझने के लिए कल्प की रचना की गई।
- यह गद्य साहित्य में सूत्र रूप में लिखे गये। **श्रौत सूत्र, गृहसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्व सूत्र**

कल्प

- **श्रोत सूत्र** → **यह विधि विधानों की विवेचना**
- **गृह सूत्र** → **गृहस्थ संबंधी नियमों की विवेचना**
- **धर्म सूत्र** → **न्याय एवं विधि की विवेचना**
- **शुल्व सूत्र** → **शुल्व (नापने की डोरी)** → **यह ज्यामितीय/रेखा गणित का प्राचीनतम ग्रंथ है।**

3. व्याकरण (मुख):-

- वैदिक शब्दों की मीमांसा करने वाले ग्रंथ व्याकरण कहलाये। इनका संबंध भाषा संबंधी नियमों से था।
- व्याकरण का सबसे प्राचीनतम ग्रंथ पाणिनि की **''अष्ठाध्यायी''** है। पाणिनी की अष्ठाध्यायी पर महर्षि पंतजलि के द्वारा **''महाभाष्य''** की रचना की गई।

BOOSTER ACADEMY

4. निरूक्त (कान):- भाषा विज्ञान संबंधी

- कठिन वैदिक शब्दों के संकलन **"निघण्टु"** की व्याख्या हेतु यास्क ने पॉचवी शताब्दी ई. पूर्व में **''निरूक्त''** की रचना की।

5. छंद (पैर):-

- पद्यों को सूत्रबद्ध करने के लिए छन्द की रचना हुई। गायत्री, उष्णिक, त्रिष्टुप, आदि छन्दो का प्रयोग हुआ है, ऋग्वेद में सर्वाधिक लोकप्रिय छन्द त्रिष्टुप है इसका 4253 बार प्रयोग हुआ है।

6. ज्योतिष (नेत्र):-

- शुभ मुर्हूत में याज्ञिक अनुष्ठान करने के लिए व ग्रहों और नक्षत्रों का अध्ययन करने के लिए।
- इसका प्राचीनतम ग्रंथ लगध मुनि का **''वेदांग ज्योतिष''** है।

Note:- "प्रस्थान-त्रयी"- उपनिषद, ब्रह्मसूत्र तथा गीता के सम्मिलित रूप को कहते हैं।

❑ पुराण:-

- **शाब्दिक अर्थ:-** प्राचीन आख्यान
- **कुल संख्या** – 18
- **रचयिता -** महर्षि लोमहर्ष के पुत्र उग्रश्रवा

प्रमुख पुराण

- **विष्णु पुराण**
  मौर्य राजवंश की जानकारी
- **वायु पुराण**
  गुप्त राजवंश की जानकारी
- **मत्स्य पुराण**
  शुंग, सातवाहन वंश की जानकारी

❖ वैदिक काल (1500 B.C. – 600 B.C.)

- **वैदिक काल दो भागों में बाँटा जा सकता है।**

ऋग्वैदिक काल : (1500 ई.पू. से 1000 ई. पू.)
उत्तर वैदिक काल : (1000 ई.पू. से 600 ई.पू.)

❖ मूल निवास स्थान :-

- भगवान दास गिडवानी ने अपनी पुस्तक **"रिटर्न ऑफ दि आर्यन्स"** में आर्यों का मूल निवास स्थान भारत माना है।
- बाल गंगाधर तिलक की पुस्तक **"आर्कटिक होम इन दी वेदाज"** में आर्यों का मूल निवास उत्तरी ध्रुव माना गया है।

BOOSTER ACADEMY

- **आर्यों के मूल निवास स्थान के बारे में विद्वानों के मत**

क्र.सं.	विद्वान	आर्यों का मूल निवास स्थान
1.	मैक्स मूलर	मध्य एशिया (बेक्ट्रिया)
2.	गाइल्स (Giles)	हंगरी या डेन्यूब नदी घाटी
3.	पेन्का, हर्ट (Penka, Heart)	जर्मन स्केण्डेनेविया
4.	नेहरिंग, गार्डन चाइल्ड	दक्षिण रूस
5.	बाल गंगाधर तिलक	उत्तरी ध्रुव
6.	गंगानाथ झा	ब्रह्मर्षि देश
7.	दयानंद सरस्वती एवं पार्टीजर	तिब्बत
8.	एन.सी.ई.आर.टी.	आल्पस पर्वत के पूर्व में येरेशिया के पास

❖ ऋग्वैदिक काल (1500 B.C. – 1000 B.C.)

- ऋग्वैदिक संस्कृतिक ग्रामीण, पशुपालन आधारित एवं राजतंत्रीय थी।
- पशुपालन उनका मुख्य व्यवसाय था। घुमक्कड़ जीवन शैली के कारण कृषि का पूर्ण विकास नहीं हो पाया था।
- इस काल का प्रमुख ग्रन्थ ऋग्वेद ही है। ऋग्वेद की अनेक बातें ईरानी भाषा के प्राचीनतम् ग्रन्थ जेंद अवेस्ता (Zend Avesta) में मिलती है। ऋग्वेद सबसे प्राचीन वेद है।

❖ वैदिक नदियाँ-

- मुख्यत: ऋग्वैदिक आर्य सिन्धु एवं उसकी सहायक नदियों के क्षेत्रों में रहते थे, जिसे सप्तसैन्धव प्रदेश कहा गया है।
- वैदिक संहिताओं में कुल 31 नदियों का उल्लेख है। ऋग्वेद में 25 नदियों का उल्लेख हैं, जबकि ऋग्वेद के 10 वें मण्डल के नदी सूक्त में 21 नदियों का उल्लेख है, जिसमें वर्णित पहली नदी गंगा है तथा अन्तिम नदी गोमल है।
- सर्वाधिक उल्लेख/ वर्णन एवं स्तुति सिन्धु नदी की है।
- ऋग्वैदिक काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी सिन्धु/हिरण्या है।
- ऋग्वेद की सबसे पवित्र नदी सरस्वती है।

ऋग्वैदिक कालीन नदियाँ	
वर्तमान नाम	**प्राचीन नाम**
सतलज	शतुद्रि
चिनाब	अस्क्नि
व्यास	विपासा
रावी	परूष्णी (इरावती)
झेलम	वितस्ता
गंडक	सदानीरा

BOOSTER ACADEMY

❑ ऋग्वेद कालीन राजनीतिक व्यवस्था:-

❖ प्रशासनिक इकाईयाँ

- **कुल** - सबसे छोटी राजनीतिक इकाई थी, जो कई परिवारों का समूह थी।
- **ग्राम** - ऋग्वेद में ग्राम सामान्यतः स्वजनों के एक समूह को इंगित करता था न कि एक गाँव को।
- **विश-** अनेक ग्रामों का समूह, जिसका प्रधान विशपति होता था। विश शब्द का 170 बार उल्लेख मिलता है।
- **जन** - अनेक विशों का समूह, जिसका मुखिया जनपति या राजा कहलाता था। ऋग्वेद में जन शब्द का उल्लेख 275 बार हुआ है, जो कि सर्वाधिक है, जबकि जनपद शब्द का उल्लेख एक बार भी नहीं हैं राजा एवं पृथ्वी शब्द का उल्लेख एक बार हुआ है।
- ऋग्वेद में देश या राज्य के लिय पहली बार राष्ट्र शब्द काम आया है, किन्तु यह प्रभुसत्ता सम्पन्न राज्य सूचक नहीं है।

❖ राजा:-

- ऋग्वैदिक काल में राजा का पद आनुवंशिक हो चुका था, किन्तु राजा को असीमित अधिकार नहीं थे। समिति द्वारा भी राजा को चुनने के उल्लेख मिलते है।
- ऋग्वेद एवं ऐतरेय ब्राह्मण में राजा के निर्वाचन संबंधी सूक्त है।
- राजा को कबीले का संरक्षण (गोपा जनस्य) तथा पुराभेत्ता (नगरों पर विजय पाने वाला) कहा गया है। राजा के लिए गोप शब्द का प्रयोग हुआ है।

❖ प्रशासनिक संस्थाएं:-

- **सभा** - यह वृद्ध एवं अभिजात लोगों की संस्था थी। इसे **मंत्रिपरिषद्** कहा जा सकता है। सभा न्यायिक कार्य भी करती थी। ऋग्वेद में इसका उल्लेख **8 बार** हुआ है।
- **समिति** - यह सामान्य जनता की प्रतिनिधि सभा थी। यह राजा पर नियंत्रण रखती थी। समिति के सभापति को **ईशान** कहा जाता था। ऋग्वेद में इसका उल्लेख **9 बार** हुआ है।
- **विदथ** - यह आर्यों की सबसे प्राचीन संस्था थी। इसमें कबीलाई तत्वों की प्रमुखता थी इसकी बैठक में सैनिक लूट के विभाजन संबंधी कार्यों का निपटारा एवं धार्मिक कार्य होते थे। ऋग्वदे में इसका उल्लेख 122 बार हुआ है।
- ऋग्वैदिक काल में महिलाएँ भी सभा एवं विदथ में भाग लेती थी।

❖ दाशराज्ञ युद्ध:-

- ऋग्वेद के **सातवें मण्डल में परूष्णी (रावी)** नदी के तट पर लडे गयें दाशराज्ञ / दशराज युद्ध (Battle of the Ten Kings) का वर्णन है यह युद्ध भारत वंश (तृत्सु कबीले) के राजा सुदास तथा अन्य दस राजाओं के समूह के बीच हुआ। इस राजाओं में पाँच आर्य एवं पाँच आर्येत्तर राजा थे। इनका नेतृत्व पुरू जन का राजा कर रहा था।
- दाशराज्ञ / दशराज युद्ध में भरत जन के राजा सुदास का पुरोहित वशिष्ठ था तथा पराजित राजा का पुरोहित विश्वामित्र था। इस युद्ध का कारण यह था कि सुदास ने विश्वामित्र को पुरोहित पद से हटाकर वशिष्ठ को पुरोहित बना दिया, अतः विश्वामित्र ने दस राजाओं का संघ बना लिया एवं सुदास से युद्ध किया। सृजंय (srinjay) कबीले ने सुदास का पक्ष लिया।
- **पुरप:-** यह दुर्गपति होता था।

- **स्पश:-** ये जनता की गतिविधियों को देखने वाले गुप्तचर होते थे।
- **व्राजपति (Vrajapati)-** यह गोचर भूमि का अधिकारी होता था।
- **कुलप (गृहपति):-** यह परिवार का मुखिया होता था।
- **प्रश्नविनाक:-** वैदिक कालीन न्यायाधीश।

❑ सामाजिक जीवन:-

❖ परिवार:-

- आर्य समाज पितृसत्तात्मक था। पिता की सम्पति का पुत्र ही उत्तराधिकारी होता था।
- ऋग्वेद में पिता शब्द 335 बार एवं माता शब्द 234 बार आया है।
- संयुक्त परिवार पथा प्रचलित थी।

❖ वर्ण व्यवस्था:-

- ऋग्वेद में वर्ण व्यवस्था जन्म आधारित न होकर कर्म आधारित थी।
- ऋग्वैदिक काल में दास प्रथा का प्रचलन था।

❖ वस्त्र एवं आभूषण:-

- निष्क गले का एक स्वर्ण आभूषण था, जिसे विनिमय के माध्यम के रूप में भी काम लिया जाता था।
- विवाह के समय वर द्वारा पहने जाने वाला वस्त्र वाधूय कहलाता था।
- **न्योचनी एवं कुरीर** विवाह के समय कन्याओं द्वारा पहने जाने वाले आभूषण थे।
- **कुम्भ एवं कुरीर** - सिर के आभूषण
- **रुक्म** - वक्षस्थल का आभूषण
- **खदि** - कंगन
- **वीणा** - प्रमुख वाद्य यंत्र था।

❖ विवाह:-

- ऋग्वेद काल में बाल - विवाह, विधवा विवाह एंव सती प्रथा का प्रचलन नहीं था।
- अन्तर्जातीय विवाह एवं बहु - विवाह प्रचलित थें।
- पर्दा प्रथा एवं तलाक प्रथा प्रचलित नहीं थे।

❖ स्त्रियों की स्थिति:-

- आजीवन अविवाहित रहने वाली कन्याओं को **अमाजू:** कहा जाता था।
- ऋग्वैदिक स्त्रियों को सम्पत्ति में अधिकार नहीं थें। वे केवल सभा तथा विदथ में भाग ले सकती थी, किन्तु स्त्रियों को कोई राजनैतिक अधिकार नहीं थे। स्त्रियाँ युद्ध में भाग लेती थी, लेकिन युद्ध में सेना का नेतृत्व पुरूष ही करते थे।

- कन्या की विदाई के समय जो उपहार दिये जाते थे, उसे **वहतु** कहते थे।
- ऋग्वैदिक काल में पुत्री का उपनयन संस्कार होता था।
- ऋग्वेद के **आठवें मण्डल** में लोपामुद्रा, घोषा, सिकता, निवावरी, अपाला, आत्रेयी, शची, पौलोमी, काक्षावृती, इन्द्राणी एवं विश्वारा जैसी विदुषी स्त्रियों का उल्लेख हुआ है। इन विदुषी स्त्रियों को ऋषि कहा जाता है।

❑ आर्थिक जीवन:-

❖ कृषि एवं पशुपालन

- ऋग्वैदिक काल का मूल आधार पशुपालन एवं कृषि था।
- ऋग्वेद में अश्व की चर्चा 215 बार, गाय की 176 बार एवं वृषभ की 170 बार हुई है।
- भूमि राजा की निजी सम्पत्ति न होकर उस पर सम्पूर्ण कबीले का सामूहिक स्वामित्व होता था।
- ऋग्वेद में प्रजा राजा को स्वेच्छा से जो अंश देती थी, उसको बलि कहा गया है।
- गाय आर्यों का मुख्य आर्थिक आधार था अधिकांश लड़ाईयाँ गायों एवं पशुओं के लिए लड़ी जाती थी।
- **पणि:-** ऋग्वेद काल में पणि मवेशियों के चोर होते थे तथा वे व्यापार भी करते थे।
- घोडा आर्यों का बहुत उपयोगी पशु था।
- ऋग्वेद में एक ही अनाज यव (जौ) का उल्लेख हुआ है।
- ऋग्वेद में नमक एवं कपास का उल्लेख नहीं हुआ है।
- ऋग्वेद में बाघ एवं गैडें का उल्लेख नहीं है।

❖ व्यापार:-

- बेकनाट (सूदखोर) वे ऋणदाता थे जो बहुत अधिक ब्याज लेते थे। उधार लिये गये ऋण के लिये कुसीद तथा उधार देने के कार्य को कुसीदवृत्ति कहा गया है।
- व्यापार वस्तु विनिमय (Barter System) द्वारा होता था।
- ऋग्वैदिक आर्य लोहे से परिचित नहीं थे।

❖ ऋग्वैदिक धर्म

- ऋग्वैदिक ऋषियों ने जिस समय जिस देवता की प्रार्थना की, उसे ही सर्वोच्च मानकर उसमें संपूर्ण गुणों का आरोपण कर दिया। मैक्समूलर ने इसे **हीनोथीज्म** कहा है।
- ऋग्वैदिक आर्य एक सार्वभौम सत्ता में विश्वास करते हुए भी बहुदेववादी हो गये थे। आर्यों ने सर्वप्रथम द्यौस एवं पृथ्वी की उपासना शुरू की, द्यौस को आर्यों का पिता कहा जाता है।
- ऋग्वेद में कुल 33 देवताओं का उल्लेख है।
- **ऋग्वैदिक आर्यों के देवताओं की तीन श्रेणियाँ थी।**
  - ✓ आकाश के देवता:- सूर्य, द्यौस, वरूण, मित्र, पूषन, अदिति, उषा, अश्विन।
  - ✓ अन्तरिक्ष के देवता:- इन्द्र, रूद्र, मरूत, वायु, पर्जन्य।
  - ✓ पृथ्वी के देवता:- अग्नि, सोम, पृथ्वी, बृहस्पति, सरस्वती।

BOOSTER ACADEMY

❖ प्रमुख देवता

- **इन्द्र: -** इन्द्र ऋग्वेद का सबसे महत्वपूर्ण देवता है, इसे पुरन्दर भी कहा गया है। ऋग्वेद में दूसरे मण्डल में इन्द्र की स्तुति में सर्वाधिक 250 सूक्त है। इन्द्र को वर्षा का देवता माना गया है। इन्द्र के लिए स्थेष्ट, विजयेन्द्र, वृत्रहन/वृत्रहन्ता (वृत्र नामक राक्षस का वध करने के कारण) आदि नामों का प्रयोग भी किया गया है। इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी (शची) है।
- **अग्नि:-** 200 सूक्त अग्नि की स्तुति में है, अग्नि देवताओं एवं मनुष्यों के मध्य मध्यस्थ था इसके माध्यम से देवताओं को आहुतियाँ दी जाती थी। ऋग्वेद में अग्नि को देवताओं का मुख कहा गया है ऋग्वेद में प्रायः सभी मण्डलों के प्रथम सूक्त अग्नि को समर्पित हैं।
- **वरूण:-** इसका 30 बार उल्लेख मिलता है, यह नदियों, जल एवं समुद्र का देवता था। वरूण को प्राकृतिक घटनाओं एवं ऋत का संयोजक समझाा जाता था। वरूण को **'ऋतस्य गोपा'** कहा गया है। वरूण को **असुर** भी कहा गया है। उत्तर वैदिक काल में ऋत पूर्णत: लुप्त हो गया। ईरान में जेंद अवेस्ता में वरूण को आहुरमजदा के नाम से जाना जाता था और वे प्रकाश के देवता थे।
- **पूषण:-** ऋग्वैदिक काल में पशुओं का देवता, जो उत्तर वैदिक काल में शुद्रों का देवता हो गया। पूषण (पूषण) का रथ बकरे खींचते थे। पूषण मार्ग का संरक्षण, भटके हुए पशुओं को मार्ग दिखाने वाला देवता था। यह विवाह के भी प्रमुख देवता थे। ऋग्वेद का विवाह सूक्त इन्हीं को समर्पित है।

❖ उत्तर वैदिक काल

- ऋग्वैदिक काल में आर्य सभ्यता का केन्द्र सप्त सैंधव प्रदेश था, जबकि उत्तर वैदिक काल में आर्य सभ्यता का विस्तार कुरूक्षेत्र एवं गंगा - यमुना दोआब (ब्रह्मर्षि देश) तक हो गया।
- कुरू एवं पांचाल को आर्य संस्कृति की धुरी कहा गया।

❑ राजनीतिक व्यवस्था

❖ प्रशासनिक इकाईयाँ:-

- ऋग्वेद कालीन छोटे कबीले (जन) एक दूसरें में विलीन होकर बडें जनपदों का रूप ले रहे थे।
- पुरू एवं भरत मिलकर कुरू तथा तुर्वश एवं क्रिवि मिलकर पांचाल कहलाये।

❖ राजा:-

- ऋग्वैदिक काल में राजा कबीले का शासक होता था, जबकि उत्तर वैदिक काल में जीवन में कृषि के कारण आये स्थायित्व के कारण कबीले बड़े जनपदों में परिवर्तित हो गये तथा राजा बड़े प्रदेश पर शासन करने लगा।
- राजा निरंकुश नहीं थे। सभा एवं समिति राजा पर नियंत्रण रखती थी।
- अथर्ववेद में **सभा एवं समिति** को **प्रजापति की दो पुत्रियाँ** कहा गया है। सभा को अथर्ववेद में नरिष्ठा भी कहा गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है अनुल्लंघनीय। उत्तरवैदिक काल में विदथ का उल्लेख नहीं मिलता है।
- **ऐतरेय ब्राह्मण** में राजा की दैवी उत्पति सम्बन्धी विवरण मिलता है।

BOOSTER ACADEMY

क्र. सं.	दिशा	राज्य का नाम	उपाधि	यज्ञ
1.	पूर्व(प्राची)	साम्राज्य	सम्राट	वाजपेय यज्ञ
2.	पश्चिम	स्वराज्य	स्वराट	अवश्वेघ यज्ञ
3.	उत्तर	वैराज्य	विराट	पुरुषमेध यज्ञ
4.	दक्षिण	भौज्य	भोज (सर्वराट)	सर्वमेध यज्ञ
5.	मध्यदेश	राज्य	राजा	राजसूय यज्ञ

- **शतपथ ब्राह्मण** में राज्याभिषेक का उल्लेख मिलता है।
- सबसे पहले राज्याभिषेक की परंपरा उत्तर वैदिक काल में शुरू हुई। राज्याभिषेक का अनुष्ठान राजसूय यज्ञ के नाम से प्रसिद्ध था।
- वैराज्य में राजा नहीं होता था। जहाँ जनता अपना शासन स्वयं करती थी।

❖ कर प्रणाली:-

- उत्तर वैदिक काल में नियमित कर प्रणाली विकसित हुई।
- ऋग्वैदिक कालीन बलि, जो एक स्वैच्छिक कर था, वह उत्तर वैदिक काल में नियमित कर हो गया। वैदिक काल में राजा को बलिहर (बलि लेने वाला) एवं विशामत्ता भी कहा गया है।

❖ रत्निनः-

- यजुर्वेद में राज्य के उच्च पदाधिकारों को रत्नी/रत्निन कहा जाता था। रत्नी राज्याभिषेक के अवसर पर उपस्थित होते थे।
- **राजा सहित कुल 12 रत्निन होते थे।**

1. राजा
2. पुरोहित
3. सेनानी
4. युवराज
5. महिषी (रानी/पटरानी)
6. सूत (रथ सेना का नायक/ सारथी)
7. ग्रामणी (ग्राम का स्वामी)
8. क्षता (प्रतिहारी/ राजप्रासाद के रक्षक / क्षत्रिय)
9. संग्रहिता (कोषाध्यक्ष)
10. भागदूध (अर्थ मंत्री/वित्त मंत्री/कर संग्राहक)
11. अक्षवाप (पासे के खेल में राजा का सहयोगी)
12. पालागल (राजा का मित्र एवं संदेश वाहक)

BOOSTER ACADEMY
92162 61592, 92562 61594
Download The App Now : Google Play Booster Academy
/KAPIL CHOUDHARY RTS
/BOOSTER ACADEMY RAS

❖ सामाजिक स्थिति:-

- उत्तर वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था में कठोरता आने लगी तथा वर्ण व्यवस्था **कर्म के स्थान पर जन्म पर आधारित** हो गई।
- समाज स्पष्टतः चार वर्णों में विभक्त हो गया। ये थे- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र।
- ऐतरेय ब्राह्मण में सर्वप्रथम चारों वर्णों के कर्तव्यों का उल्लेख किया गया है।
- वाजसनेयी संहिता के पुरूषमेध सूक्त में सर्वप्रथम **चाण्डाल** का उल्लेख है।
- सर्वप्रथम गौत्र शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में हुआ है, लेकिन उत्तरवैदिक काल में गौत्र प्रथा स्थापति हुई। गौत्र का एक वंश, कुल या जाति के रूप में उल्लेख अथर्ववेद में होता है।
- उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की दशा में गिरावट आई। उन्हें पैतृक संपत्ति कें अधिकार से वंचित कर दिया गया।
- अथर्ववेद में पुत्री के जन्म पर खिन्नता प्रकट की गई है।
- ऐतरेय ब्राह्मण में पुत्री को कृपण कहा गया है तथा पुत्री को समस्त दुःखों का स्रोत माना गया है।

❖ आर्थिक जीवन:-

- उत्तर वैदिक काल में कृषि आर्यों का मुख्य व्यवसाय था।
- शतपथ ब्राह्मण में कृषि की चारों क्रियाओं जुताई, बुआई, कटाई तथ मड़ाई का उल्लेख हुआ है।
- इस काल की मुख्य फसल जौ के स्थान पर गेंहूँ एवं धान हो गई।
- भूमिदान का उल्लेख सर्वप्रथम उत्तर वैदिक कालीन ग्रन्थों में मिलता है।
- उत्तर वैदिक काल में ताँबें के अलावा लोहे का व्यापक प्रयोग शुरू हुआ। लोहे को श्याम अयस् कहा गया है।
- व्यापारिक श्रेणी के प्रधान को श्रेष्ठि कहा जाता था। श्रेष्ठि/ श्रेणी का उल्लेख ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है।
- शतपथ ब्राह्मण में **महाजनी प्रथा** का पहली बार उल्लेख हुआ है। सूदखोर को कुसीदिन कहा गया है।

❖ धार्मिक जीवन:

- उत्तर वैदिक काल में धार्मिक अनुष्ठानों एवं कर्मकाण्डों में वृद्धि हुई। यज्ञ में अधिक पुरोहितों की आवश्यकता होने लगी।
- ऋग्वैदिक देवता इन्द्र एवं अग्नि का महत्व कम हो गया तथा प्रजापति (ब्रह्म) को सृष्टि निर्माता के रूप में सर्वोच्च स्थान मिला।
- वैदिक देवता रूद्र उत्तर वैदिक काल में शिव के रूप में प्रतिष्ठित हुए।
- विष्णु भी सृष्टि के संरक्षक के रूप में पूजे जाने लगे।
- उत्तर वैदिक काल के बहुदेववाद एवं कर्मकाण्डों की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप उपनिषदों ने यज्ञों एवं कर्मकाण्डों की निदा की
- मुण्डक उपनिषद के अनुसार यज्ञ एक ऐसी नौका है, जिस पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

BOOSTER ACADEMY

Booster Academy
Way To Success.....

वैदिक संस्कृतिः तुलनात्मक अध्ययन

लौहे का ज्ञान 1000 ई. पू. उत्तर प्रदेश के एटा जिले के अतरंजीखेड़ा के प्राप्त

पशुपालक आर्य सर्वप्रथम केवल जौ (Barley) का उगाते थे।

ऋग्वैदिक काल या पूर्व वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.)

लौहे के ज्ञान से अनभिज्ञ
↓
रचनात्मक काल
↓
सप्त-सिंधु प्रदेश
↓
ब्रह्मवर्त
↓
काले व लाल मृदभांड
↓
वंश की संकल्पना → संयुक्त परिवार
↓
शासक: राजन (जन)
↓
पद वंशानुगत नहीं
↓
व्यवसाय: पशुपालक → वस्तु विनिमय प्रणाली
↓
स्वेच्छा से कर (बलि-चढ़ावा)
↓
उपनयन संस्कार + सभा व समिति में महिलाओं का प्रवेश स्वीकृत

उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.)

लौहे के ज्ञान से परिचित
↓
परिवर्तनशील काल
↓
गंगा - यमुना दोआब
↓
ब्रहर्षि देश
↓
चित्रित धूसर मृदभांड
↓
गोत्र की संकल्पना → संयुक्त परिवार
↓
शासक राजा (जनपद)
↓
पद वंशानगुत हुआ
↓
व्यवसायः कृषि → वस्तु विनिमय प्रणाली
↓
नियमित कर व्यवस्था
↓
उपनयन संस्कार + सभा व समिति में महिलाओं का प्रवेश वर्जित व विदथ की समाप्ति

BOOSTER ACADEMY

आश्रम व्यवस्था

- उत्तर वैदिक काल में आश्रम व्यवस्था स्थापित हुई, आश्रम का अर्थ - श्रम करने के बाद विश्राम करना। छांदोग्य उपनिषद में केवल 3 आश्रमों का उल्लेख मिलता है। वर्ण शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद के 10 वें मंडल के पुरूष सूक्त में हुआ है। जबकि जाति शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम महर्षि यास्क के निरूक्त में कृष्ण जाति के रूप में हुआ है।
- **सर्वप्रथम जाबालोपनिषद् में 4 आश्रम बताये गये है।**

आश्रम	**आयु**	**कार्य**	**पुरूषार्थ**
ब्रह्मचार्य	0-25 वर्ष	ज्ञान प्राप्ति	धर्म
गृहस्थ	26-50 वर्ष	सांसारिक जीवन	अर्थ व काम
वानप्रस्थ	51-75 वर्ष	ईश्वर ध्यान	मोक्ष
सन्यास	76-100	मोक्ष हेतु तपस्या	मोक्ष

- **विशेष:** गृहस्थ आश्रम को सभी आश्रमों में श्रेष्ठ माना गया है। इसी आश्रम में पंचमहायज्ञ व त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, काम) व त्रि-ऋण से निवृत्त होना आवश्यक था।
- **त्रि-ऋण:** मनुष्य को गृहस्थ आश्रम में 3 ऋणों से उत्तीर्ण होना आवश्यक था।
  1. ऋषि ऋण: वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन करना,
  2. 2. पितृ ऋण: पुत्र की उत्पत्ति,
  3. 3. देव ऋण: यज्ञ करवाना

अष्ट विवाह

- मनुस्मृति में विवाह के 8 प्रकारों का उल्लेख किया गया है जिसमें प्रथम 4 विवाह प्रशंसनीय तथा शेष 4 निंदनीय माने जाते थे।
- **ब्रह्म विवाह:** समान वर्ग में विवाह दैव विवाह: यज्ञ करने वाले के साथ कन्या का विवाह (दक्षिणा सहित)
- **आर्ष विवाह:** कन्या के पिता को वर एक जोड़ी बैल प्रदान करता था।
- **प्रजापत्य विवाह:** बिना लेन - देन के योग्य वर में विवाह।
- **असुर विवाह:** कन्या को उसके माता-पिता से खरीद लिया जाता है।
- **गंधर्व विवाह:** प्रेम संबंधों के आधार पर विवाह (दुष्यंत-शकुंतला विवाह)
- **राक्षस विवाह:** पराजित राजा की पुत्री, बहन या पत्नी से उसकी इच्छा के विरूद्ध विवाह।
- **पैशाच विवाह:** यह विवाह प्रायः विश्वासघात द्वारा किया जाता था।

BOOSTER ACADEMY

वैदिक कालीन शब्दावली

वैदिक शब्द	वर्तमान शब्द
गोधूम	गेहूँ
तन्दुल	चावल
ब्रीहि	धान
यव	जौ
कीनाश	हल चलाने वाले
उर्दर	अनाज नापने वाले पात्र
पयस्	दूध
कुल्या	नहर

BOOSTER ACADEMY

महाजनपद काल

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व में लोहे के इस्तेमाल से कृषि एवं अन्य आर्थिक गतिविधियों में परिवर्तन आया तथा कृषि के विकास से कबायली जीवन का स्थान स्थायी निवास की जीवन शैली ने ले लिया।
- **नोट:-** प्रथम नगरीकरण हड़प्पा सभ्यता के समय को माना जाता है।

❖ द्वितीय नगरीकरण:-

- द्वितीय नगरीकरण का प्रारम्भ गंगाघाटी में छठी शताब्दी ई.पू. माना जाता है। इसमें लोहे के प्रयोग की महत्वपूर्ण भूमिका थी।
- उत्तरी काले चमकीले मृद्भाण्ड (N.B.P.W.) द्वितीय नगरीकरण की विशेषता है।
- बौद्ध ग्रन्थ **अंगुत्तरनिकाय** में सोलह महाजनपदों के नाम मिलते है।
- जैन ग्रन्थ भगवती सूत्र में भी सोलह महाजनपदों की सूची मिलती है।
- 16 महाजनपदों में 14 राजतंत्रात्मक एवं 2 गणतंत्रात्मक (वज्जि एवं मल्ल) थे।

अंगुत्तरनिकाय में दिये गये 16 महाजनपद	
महाजनपद	**राजधानी**
काशी	वाराणसी
कोशल	उत्तरी कोशल- श्रावस्ती दक्षिणी कोशल – कुशावती
अंग	चम्पा
मगध	गिरिव्रज, राजगृह
वत्स	कौशाम्बी
वज्जि	वैशाली एवं मिथिला
मल्ल	कुशीनारा एवं पावा
अवन्ति	उत्तरी अवन्ति – उज्जयिनी दक्षिण अवन्ति – माहिष्मति
चेदि	सोत्थिवती (शुक्तिमति)
अश्मक	पोटन (पोटली)
कुरू	इन्द्रप्रस्थ, हस्तिनापुर
पांचाल	उत्तरी पांचाल – अहिच्छत्र दक्षिणी पांचाल – कांपिल्य
मत्स्य	विराटनगर, बैराठ
सूरसेन	मथुरा
कम्बोज	हाटक अथवा राजपुर
गांधार	तक्षशिला

BOOSTER ACADEMY

❖ काशी

- **संस्थापक** - द्रिवोदास
- सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है।
- वर्तमान वाराणसी (उत्तर प्रदेश) के आस - पास का क्षेत्र काशी महाजनपद था।
- काशी को **''अविमुक्तक्षेत्र अभिधान''** कहा जाता है।
- बौद्ध भिक्षुओं के वस्त्र काशी में तैयार होते थे। काशी सूती एवं रेशमी वस्त्रों तथा घोडों के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था।

❖ कोशल

- वर्तमान फैजाबाद (उत्तर प्रदेश) के आस- पास का क्षेत्र कोशल था।
- श्रावस्ती की पहचान आधुनिक **महेत** से एवं जेतवन विहार के अवशेषों की पहचान **सहेत** से की जाती है। इन्हीं को सम्मिलित रूप से **''सहेत- महेत''** कहा जाता है।
- प्रसेनजीत बुद्ध के समकालीन राजा थे।
- प्रसेनजीत ने अपनी पुत्री वजिरा **(Vajira)** का विवाह मगध नरेश अजातशत्रु के साथ किया एवं काशी का प्रदेश दहेज के रूप में दिया।

❖ अंग

- **भागलपुर व मुंगेर जिला क्षेत्र**
- चम्पा को पुराणों में **''मालिनी''** कहा गया हैं चम्पा नदी (Champa River) अंग एवं मगध के बीच सीमा निर्धारण करती है।
- शासक – **ब्रह्मदत्त**
- वास्तुकार – **महागोविंद**

❖ मगध

- मगध सर्वाधिक शक्तिशाली महाजनपद था, इसने बाद में अन्य जनपदों का विलय कर लिया।
- अंग एंव मगध का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है ।

❖ वत्स

- वर्तमान इलाहाबाद व बांदा जिला।
- गौतम बुद्ध का समकालीन वत्स का राजा पौरव वंश का उदयन था। प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु पिण्डोल ने उदयन को बौद्ध मत में दीक्षित किया।
- चण्ड प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता का विवाह उदयन के साथ हुआ।

BOOSTER ACADEMY

❖ वज्जि

- वज्जि का शाब्दिक अर्थ पशुपालक समुदाय है यह आठ राज्यों का संघ था, इसमें वज्जि के अलावा वैशाली के लिच्छवि, मिथिला के विदेह एवं कुण्डग्राम के ज्ञातृक प्रसिद्ध थे।
- मगध एवं वज्जि के मध्य गंगा नदी सीमा का निर्धारण करती थी।

❖ मल्ल

- पूर्वी उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले में स्थित इस राज्य की दो शाखाएँ थी- पावा के मल्ल तथा कुशीनारा के मल्ल।

❖ अवन्ति:- (पश्चिमी एवं मध्य मालवा का क्षेत्र)

- उत्तरी अवन्ति की राजधानी उज्जयिनी तथा दक्षिणी अवन्ति की राजधानी माहिष्मति थी। अवन्ति की दोनों राजधानियों के बीच में वेत्रवती नदी बहती थी।
- बुद्ध के समकालीन अवन्ति के राजा **चण्ड प्रद्योत** थे। प्रद्योत महाकच्चायन के प्रभाव में बौद्ध बन गया। चण्ड प्रद्योत ने बुद्ध को अवन्ति आने के लिए आमंत्रित किया, किन्तु बुद्ध कभी अवन्ति नहीं जा सके।
- वत्स नरेश उदायिन को अवन्ति के राजा चण्ड प्रद्योत ने पराजित किया। उदायिन ने चण्ड प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता से विवाह किया।
- चण्ड प्रद्योत के बीमार होने पर बिम्बिसार ने अपने राजवैद्य **जीवक** को उसके उपचार हेतु भेजा।

❖ चेदि:- (आधुनिक बुलेन्दखण्ड एवं उसका समीपवर्ती भाग)

- महाभारतकालीन शासक शिशुपाल चेदि का शासक था। शिशुपाल का वध कृष्ण ने किया था।

❖ अस्सक: (अश्मक)

- संस्थापक – राजा मुलक (ईक्ष्वाकु वंश)
- यह गोदावरी नदी के तट पर स्थित था। केवल अश्मक महाजनपद दक्षिण भारत में स्थित था बुद्धकाल में अवन्ति ने अश्मक को जीत लिया था।

❖ कुरू:- (मेरठ, दिल्ली एवं थानेश्वर के आस - पास का क्षेत्र)

- कुरू की राजधानी हस्तिनापुर थी।
- महाभारत एवं पणिनी की **“अष्टाध्यायी”** में कुरू का उल्लेख मिलता है।

❖ पांचाल

- आधुनिक रूहेलखण्ड के बरेली, बदायूँ एवं फर्रूखबाद के जिले इसमें शामिल थे।
- गंगा नदी इस राज्य को दो भागों में बाँटती है। प्रसिद्ध कन्नौज नगर (कान्यकुब्ज) इसी राज्य में था।
- उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद जिले में स्थित कान्यकुब्ज अथवा कन्नौज का प्राचीन नाम **’महोदय नगर’** भी था।

BOOSTER ACADEMY

❖ **मत्स्य:-** (जयपुर, अलवर, भरतपुर के क्षेत्र)

- इसकी राजधानी विराटनगर थी।
- मत्स्य का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। इसके अलावा शतपथ ब्राह्मण एवं कौषीतिकी उपनिषद् में भी मत्स्य जनपद का उल्लेख मिलता है।

❖ **शूरसेन:-**

- मथुरा व ब्रजमण्डल (यमुना नदी के तट पर स्थित)।
- यहाँ यदुवंश शासन था कृष्ण यहाँ के राजा थे, बुद्ध के समय यहाँ का राजा अवन्ति का पुत्र था, जो बुद्ध का शिष्य था।
- मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक **"इण्डिका"** के शूरसेन का उल्लेख किया है।

❖ **गांधार:-** (पाकिस्तान के पेशावर एवं रावलपिंडी जिले)

- रामायण के अनुसार इसकी राजधानी तक्षशिला की स्थापना भरत के पुत्र तक्ष ने की। पुष्कलावती इसका दूसरा प्रमुख नगर था। गांधार के राजा पुष्करसारिन ने अवन्ति के राजा चण्ड प्रद्योत को पराजित किया। पुष्करसारिन ने मगधराज बिम्बिसार के दरबार में दूत भेजा। पुष्करसारिन पैदल चलकर बुद्ध के दर्शन हेतु आया था।

❖ **कम्बोज:-**

- **दक्षिणी -** पश्चिमी कश्मीर एवं कपिशा के आस - पास का क्षेत्र कम्बोज में था। कौटिल्य ने कम्बोजों को **वार्ताशस्त्रोपजीवी** संघ अर्थात् वार्ता (कृषि, पशुपालन एवं वाणिज्य) तथा शस्त्रों द्वारा जीविका चलाने वाला कहा है। कम्बोज अपने श्रेष्ठ घोडों के लिए विख्यात था।

❖ **गणराज्य**

- बुद्ध के समय दस गणराज्य थे। इनमें आठ वज्जि के तथा दो मल्ल के अधीन थे।
- **बौद्ध साहित्य में वर्णित गणराज्य:-**

1. कपिलवस्तु के शाक्य
2. सुमसुमार पर्वत के भग्ग
3. रामग्राम के कोलिय
4. अल्ल कप्प के बुली
5. केसपुत्त के कालाम
6. कुशीनारा के मल्ल
7. पावा के मल्ल
8. पिप्पलिवन के मोरिय
9. वैशाली के लिच्छवि
10. मिथिला के विदेह

BOOSTER ACADEMY

छठी शताब्दी ईसा पूर्व श्रमण परम्परा (आजीवक, बौद्ध एवं जैन धर्म)

- ईसा पूर्व छठी शताब्दी में वैदिक धर्म के कारण समाज में वर्ण व्यवस्था और कर्मकाण्डों ने जगह बनाई तो दोषों के खिलाफ धार्मिक बौद्धिक आन्दोलन की शुरुआत हुई।
- **इस बौद्धिक- धार्मिक आंदोलन का नेतृत्व क्षत्रियों ने किया।** लोहे के बढ़ते प्रयोग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कृषि एवं व्यापार की बढ़ोत्तरी से अब उन्हें अधिक बल (राजस्व) प्राप्त हुआ। इसमें क्षत्रिय लोग पुरोहित वर्ग के विरुद्ध अपनी सामाजिक एवं राजनीतिक महत्ता के प्रति सचेत हुए।

नवीन धर्मों की उत्पत्ति के कारण:-

1. जाति प्रथा की जटिलता
2. वैदिक धर्म में कर्मकाण्ड
3. वैदिक ग्रन्थों की कठिन भाषा
4. वैश्य वर्ग के महत्व में वृद्धि
5. नवीन कृषि आधारित अर्थव्यवस्था
6. अनुकूल राजनीतिक दशा

सम्प्रदाय	संस्थापक
बौद्ध धर्म	गौतम बुद्ध
जैन धर्म	महावीर स्वामी
उच्छेदवादी (भौतिकवादी)	अजित केसकम्बलिन
आजीवक (भाग्यवादी)	मक्खलि पुत्त गोशाल
घोर अक्रियावादी (अकर्मवादी)	पूरन कस्यप
सन्देहवाही (अज्ञेयवादी)	संजय वेलपुत्त
नित्यवादी (घोर अकृतवादी)	पुकुध कच्चायन

आजीवक सम्प्रदाय

- **प्रवर्तक** - मक्खलि पुत्त गोशाल
- **जन्म** - सरावन (श्रावस्ती)
- **माता-पिता** - भद्दा व मंखा
- **मुख्य प्रचार केन्द्र** - श्रावस्ती में हलाहला नामक कुम्हारिन का घर।
- आजीवकों की मान्यता है कि समस्त प्राणी नियति/भाग्य के अधीन हैं।
- आजीवक जैन दिगम्बरों की भाँति निर्वस्त्र रहते थे एवं कठोर जीवन व्यतीत करते थे।
- आजीवक अशोक वृक्ष की पूजा करते थे तथा हथेली पर भोजन करने के कारण इन्हें **हत्थापलेखण** एवं दण्ड धारण करने के कारण **एकदिण्डन** भी कहा जाता है।
- महावीर स्वामी एवं गोशाल की प्रथम भेंट **नालन्दा** में हुई, महावीर स्वामी और गोशाल 6 वर्ष तक साथ में नालन्दा में रहे।

BOOSTER ACADEMY

❑ बौद्ध धर्म

- **संस्थापक -** गौतम बुद्ध, बचपन का नाम – सिद्धार्थ
- **जन्म -** 563 ई. पू. लुम्बिनी (कपिलवस्तु) नेपाल, शाक्य क्षत्रिय कुल में
- **बचपन का नाम** – सिद्धार्थ, गौत्र – गौतम
- अशोक का रूम्मिनदेई अभिलेख बुद्ध के जन्म का अभिलेखीय प्रमाण है।
- **पिता -** शुद्धोधन (कपिलवस्तु शाक्य गण के प्रधान) – इक्ष्वाकु वंशीय क्षत्रिय
- **माता – महामाया देवी** (कोलिय वंश से)
- **लालन - पालन -** मौसी प्रजापति गौतमी
- **पत्नी -** यशोधरा, पुत्र – राहुल
- कौन्डिन्य, कालदेव एवं ऋषि अतिश नामक ब्राह्मणों ने भविष्यवाणी की थी कि सिद्धार्थ महान सम्राट अथवा साधु बनेगा।
- **4 घटनाओं ने बुद्ध को प्रभावित किया-**
  1. वृद्ध व्यक्ति
  2. बीमार व्यक्ति
  3. मृत व्यक्ति
  4. सन्यासी (प्रसन्न मुद्रा में)
- ये चार दृश्य **मज्झिम निकाय** में है।

❑ महाभिनिष्क्रमण

- 29 वें वर्ष की उम्र में गृह त्याग किया, इस घटना को बौद्ध धर्म में महाभिनिष्क्रमण कहा गया है। घोड़े कन्थक व सारथी छन्दक को साथ लेकर गृहत्याग किया।
- गृहत्याग के बाद वैशाली के समीप सांख्य दर्शन के दार्शनिक आचार्य **आलारकलाम** प्रथम गुरु बने।
- अलार कालाम के बाद राजगृह के उद्रक (रूद्रक) रामपुत्त (Uddaka Ramaputta) सिद्धार्थ के गुरू बने, किन्तु सिद्धार्थ संतुष्ट नहीं हुए। रूद्रक ने **''नैवसंज्ञा-नासंज्ञायतन''** नामक योग का उपदेश दिया।
- गृहत्याग के पश्चात् 6 वर्ष तक बुद्ध द्वारा सत्य की खोज का प्रयास **आर्य पर्येषणा** कहलाता है।

❑ सम्बोधि

- गृहत्याग के 6 वर्ष बाद 35 वर्ष की आयु में उरुवेला में **पीपल वृक्ष** के नीचे समाधि के 49वें दिन **बैसाख पूर्णिमा** के दिन निरंजना (पुनपुन) नदी के तट पर सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्ति हुई, इस घटना को **सम्बोधि** कहा जाता है। ज्ञान प्राप्ति की घटना के दो दिन बाद ही सिद्धार्थ तथागत (सत्य का ज्ञान प्राप्त करने वाला) हो गया एवं गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुये।
- **मार- कामदेव**, जिन्होंने सिद्धार्थ (बुद्ध) की समाधि भंग करने का प्रयास किया था।

❑ धर्मचक्रप्रवर्तन

- **सर्वप्रथम सारनाथ में पाँच ब्राह्मणों को अपना प्रथम उपदेश पाली भाषा** में दिया जिसे बौद्ध ग्रन्थों में **'धर्मचक्रप्रवर्तन'** कहा गया। **ये पाँच ब्राह्मण/शिष्य:- (1) आंज (असंग) (2) कौंडिन्य, (3) अस्सजि वप्प (4) महानाम (5) भद्दिय।**
- सर्वप्रथम तपस्सु एवं भल्लिक नामक दो शूद्रों (बंजारों) को बौद्ध धर्म का अनुयायी बनाया।

92162 61592, 92562 61594
Download The App Now : GET IT ON Google Play Booster Academy
/KAPIL CHOUDHARY RTS
/BOOSTER ACADEMY RAS

- श्रावस्ती में अंगुलिमाल नामक डाकु को अपना शिष्य बनाया।
- सर्वाधिक उपदेश कोशल की राजधानी **श्रावस्ती** में दिये एवं मगध को अपना प्रचार केन्द्र बनाया। सर्वाधिक वर्षाकाल भी श्रावस्ती में व्यतीत किए।
- बुद्ध के प्रधान शिष्य उपालि एवं सर्वाधिक प्रिय शिष्य आनन्द थे।
- अपने प्रिय शिष्य आनन्द के कहने पर बुद्ध ने महिलाओं को संघ में प्रवेश की अनुमति दी। प्रजापति गौतमी प्रथम भिक्षुणी थी।
- राजगृह में बुद्ध एवं बिम्बिसार की प्रथम भेंट हुई एवं बिम्बिसार की पत्नी क्षेमा एवं अभय बुद्ध के शिष्य बने।
- मज्झिम निकाय के वर्णनानुसार कोशल नरेश प्रसेनजित ने बुद्ध के बारे में कहा कि - **''भगवपि कोशलको, अह्मपि कोशलको, अह्मपि असिट्ठिको, भगवपि असिट्ठिको।'' अर्थात् बुद्ध भी कोशल के हैं और मैं भी कोशल का हूँ। बुद्ध भी 80 साल के हैं और मैं भी 80 साल का हूँ।**

❑ महापरिनिर्वाण

- पावा में चुन्द नामक लुहार के घर सूकर मार्द्दव ग्रहण किया जिससे उदर विकार से पीड़ित हो गये।
- **483 ई. पू.** में 80 वर्ष की आयु में कुशीनगर **हिरण्यवती नदी** के तट पर मृत्यु हो गई। इस घटना को **'महापरिनिर्वाण'** कहा गया है।
- **कुशीनगर के रामसंभार नदी तट पर बुद्ध का अन्तिम संस्कार हुआ।**
- बुद्ध की मृत्यु पर सुभद्र ने कहा - **''चलो अच्छा हुआ कि बुद्ध नहीं रहे, अब हम स्वतंत्र है।''**
- महापरिनिर्वाण के बाद बुद्ध के अस्थि अवशेषों को 8 जगह भेजा गया। यहाँ **स्तूप** बनाए गए।
- मगध, वैशाली, कपिलवस्तु, अल्लकप्प, रामग्राम, पावा कुशीनगर, वेथादीप।

❑ बुद्ध के जीवन की घटनाएँ एवं उनके प्रतीक

घटना	**प्रतीक**
गर्भाधान	हाथी
जन्म	कमल एवं सांड
यौवन	वृषभ
गृहत्याग	अश्व
महाबोधि	बोधिवृक्ष
प्रथम उपदेश	धर्मचक्र
निर्वाण	पदचिह
मृत्यु/महापरिनिर्वाण	स्तूप
पाँच ब्राह्मण (प्रथम उपदेश दिया)	दाना चुगते हंस

BOOSTER ACADEMY

बुद्ध के अनुयायी शासक (समकालीन)

शासक	राज्य
बिम्बिसार, अजातशत्रु	मगध
प्रसेनजीत	कोसल
चण्ड प्रद्योत	अवन्ति
भद्रिक	शाक्य राजा
अवन्तिपुत्र	शूरसेन

बुद्ध के प्रमुख शिष्य	
आनन्द	बुद्ध का चचेरा भाई एवं प्रिय शिष्य
देवदत्त	आनन्द का बड़ा भाई एवं बुद्ध का विरोधी
मातंग	शूद्र
अनाथपिंडक	व्यापारी
जीवक	बिम्बिसार का राजवैद्य
नन्द	गौतमी का पुत्र
राहुल	बुद्ध का पुत्र

गौतम बुद्ध की प्रमुख अनुयायी स्त्रियाँ	
महाप्रजापति गौतमी	बुद्ध की मौसी
यशोधरा	बुद्ध की पत्नी
नन्दा	प्रजापति गौतमी की पुत्री
खेमा	मगध नरेश बिम्बिसार की पत्नी
आम्रपाली	वैशाली की गणिका
विशाखा	अंग जनपद के भद्दिय ग्राम के श्रेष्ठी की पुत्री थी। विशाखा बौद्ध संघ की संरक्षिका बनी।

- बिम्बिसार ने राजगृह में वेलुवन नामक विहार बनवाया। वेलुवन बौद्ध संघ को प्राप्त प्रथम विहार था।
- अनाथपिण्डक ने श्रावस्ती में बुद्ध के लिए जेतवन विहार बनवाया।

बौद्ध संघ

- बौद्ध संघ में प्रवेश को **'उपसंपदा'** कहा जाता था।
- बौद्ध संघ का प्रमुख **'विनयधर'** कहलाता था।
- सारनाथ में बौद्ध संघ की स्थापना की।
- वैशाली में भिक्षुणी संघ की स्थापना की।
- मतदान अधिकारी **'श्लाका ग्राहपक'** कहलाता था।
- जीवक को **'बौद्ध संघ का आभूषण'** कहा गया है।

BOOSTER ACADEMY

❑ बौद्ध संघ की शब्दावलियाँ:-

- **नत्ति-** बौद्ध संघ की सभा में प्रस्ताव को नत्ति कहा जाता है।
- **अनुस्वावन -** प्रस्ताव के पाठ को अनुस्सावन कहा जाता था। इसे कम्मवाचा भी कहते थे।
- **उपोसथ -** किसी विशेष अवसर पर जब सभी भिक्षु उपस्थिति होकर धर्मचर्चा करते थे, तो वह उपोसथ कहलाता था। कालान्तर में उपोसथ का प्रमुख कार्य अपराध स्वीकृति ही हो गया तथा उपोसथ (उपावस्था) के अन्तर्गत बौद्ध भिक्षु प्रत्येक पखवाड़े में पूर्ण चन्द्र एवं नवचन्द्र रात्रियों में एकत्र होकर अपने अपराधों को स्वीकार करते थे।
- **प्रवारणा (पवारणा) -** वर्षावास के अन्त में संघ में सम्मिलित होकर अपने अपराध की स्वीकृति करना आवश्यक था। इसको प्रवारणा कहा जाता था। जिस प्रकार उपोसथ (पखवाड़े की) परिशुद्धि के लिए आवश्यक था, वैसे ही प्रवारणा एक प्रकार की वार्षिक परिशुद्धि थी।
- **कथिन (Kathina) -** यह बौद्ध भिक्षुओं को वस्त्र वितरण के लिए होने वाला समारोह था। ये वस्त्र गेरूएँ रंग के होते थे।
- **उपासक -** गृहस्थ जीवन में रहकर बौद्ध धर्म को मानने वाले लोग।

❑ बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ एवं सिद्धान्त

- **बौद्ध धर्म के 'त्रिरत्न' - बुद्ध, धम्म, संघ।**
- बौद्ध धर्म के **'चार आर्य सत्य'-** (1) दुःख
  (2) दुःख कारण
  (3) दुःख निरोध
  (4) दुःख निरोध के मार्ग
- **'अष्टांगिक मार्ग'** - बुद्ध के चौथे आर्य सत्य में दुःख निरोध के उपाय बताए हैं। इसे **'मध्यम मार्ग'** या मज्झिम प्रतिपदा भी कहते हैं। **इसके आठ सोपान है-**
  (1) सम्यक् दृष्टि
  (2) सम्यक् संकल्प
  (3) सम्यक् वाणी
  (4) सम्यक् कर्मान्त
  (5) सम्यक् आजीव
  (6) सम्यक् व्यायाम
  (7) सम्यक् स्मृति
  (8) सम्यक् समाधि
- बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग का स्रोत तैत्तिरीय उपनिषद् है।

❑ क्षणिकवाद/अनित्यवाद

- दुनिया में सभी चीजों का अस्तित्व क्षण भर/अस्थायी है। केवल परिवर्तन ही स्थायी है।

BOOSTER ACADEMY

प्रतीत्य समुत्पाद

- **'कारणता के सिद्धान्त'** को प्रतीत्य समुत्पाद कहा गया है।
- **शाब्दिक अर्थ -** किसी वस्तु के होने पर किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति अथवा आश्रित उत्पत्ति का सिद्धान्त।

चार बौद्ध संगीतियाँ:-

संगीति	समय	स्थान	शासनकाल	अध्यक्ष	कार्य
प्रथम	483 ई. पू.	राजगृह	अजातशत्रु	महाकस्सप	सुत्तपिटक एवं विनयपिटक का संकलन किया।
द्वितीय	383 ई. पू.	वैशाली	कालाशोक	साबकमीर/सर्वकामनी	बौद्ध संघ स्थविर एवं महासंधिक में विभाजित।
तृतीय	251 ई. पू.	पाटलिपुत्र	अशोक	मोगलिपुत्ततिस्स	अभिधम्म पिटक का संकलन।
चतुर्थ	प्रथम शताब्दी ई.	कुंडलवन (कश्मीर)	कनिष्क	वसुमित्र (अध्यक्ष) अवश्घोष (उपाध्यक्ष)	बौद्ध धर्म हीनयान व महायान में विभाजित।

- बौद्ध धर्म अनात्मवादी एवं अनीश्वरवादी है। बुद्ध ईश्वर के मुद्दे पर मौन रहे। (अनात्मवाद)
- बौद्ध धर्म कर्मों के पुनर्जन्म में विश्वास करता है न कि आत्मा के पुनर्जन्म में।
- भगवान बुद्ध ने वर्ण व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था का विरोध किया है।
- बुद्ध ने **'पालि भाषा'** में उपदेश दिए।

बौद्ध साहित्य

- **सबसे प्राचीन बौद्ध ग्रन्थ त्रिपिटक हैं। इनके नाम हैं:-** सुत्त पिटक, विनय पिटक एवं अभिधम्म पिटक। ये पालि भाषा में हैं।
- त्रिपिटक शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग रिज डेविड्स (Rhys Davids) ने बुद्धिस्ट इंडिया (Buddhist India) में किया है।
- त्रिपिटकों को सर्वप्रथम लिपिबद्ध श्रीलंका के शासक वतगमनी (Vattagamanni) की देखरेख में किया गया।

1. **सुत्त पिटक -** इसमें बुद्ध के धार्मिक विचारों और वचनों का संग्रह है। यह त्रिपिटकों में सबसे बड़ा एवं श्रेष्ठ है। इसे बौद्ध धर्म का एनसाइक्लोपीडिया भी कहा जाता है। सुत्त पिटक पाँच निकायों में विभाजित है:- (1) दीर्घ निकाय (2) मज्झिम निकाय (3) संयुक्त निकाय (4) अंगुत्तर निकाय (5) खुद्दक निकाय।

- प्रथम चार निकायों में बुद्ध के उपदेश वार्तालाप के रूप में दिये गये हैं, जबकि खुद्दक निकाय पद्यात्मक है।
- **जातक कहानियाँ** खुद्दक निकाय का हिस्सा हैं। इसमें बुद्ध के पूर्वजन्म की काल्पनिक कथाएँ है। जातकों की रचना का आरम्भ ईसा पूर्व पहली सदी में हुआ। जातक ग्रन्थ गद्य और पद्य दोनों में लिखे गये हैं।

2. **विनय पिटक -** इसमें बौद्ध संघ के नियम, आचार-विचारों एवं विधि-निषेधों का संग्रह है।
3. **अभिधम्म पिटक -** यह दार्शनिक सिद्धांतों का संग्रह है। अभिधम्म पिटक में सर्वाधिक महत्वपूर्ण **कथावत्थु** हैं। इसकी रचना तृतीय संगीति के समय मोग्गलिपुत्त तिस्स ने की।

- ललित विस्तार महायान सम्प्रदाय का प्राचीनतम ग्रंथ है। ललित विस्तार को आधार बनाकर मैथ्यू अरनोल्ड ने Light of Asia (एशिया का ज्योतिपुंज) लिखा।

BOOSTER ACADEMY

Booster Academy
Way To Success.....

- **महावस्तु** को हीनयान व महायान के मध्य का पुल माना जाता है।
- नागार्जुन ने संस्कृत भाषा में **"माध्यमिक कारिका"** व **"प्रज्ञापारमितासूत्र"** लिखी। इसे **भारत का आइन्स्टाईन व प्राचीन भारत का लूथर** भी कहते है।
- **बुद्धघोष** ने संस्कृत भाषा में विसुद्धिमग्ग, सामन्तपासादिका, सुमंगलविलासिनी की रचना की।
- **अश्वघोष** ने बुद्धचरित, सौन्दरानंद, सारिपुत्र प्रकरण, सूत्रालंकार आदि रचनाऐं संस्कृत भाषा में लिखी।

BOOSTER ACADEMY

Booster Academy
Way To Success.....

हीनयान व महायान सम्प्रदाय

बौद्ध धर्म

हीनयान

रुढ़िवादी
बुद्ध को महापुरुष
मूर्तिपूजा में विश्वास नहीं
व्यक्तिवादी
(स्वयं के निर्माण हेतु प्रयासरत)
परमपद "अर्हत्"
भाषा-पालि

महायान

सुधारवादी
बुद्ध को ईश्वर
मूर्तिपूजा में विश्वास
पर सेवा में विश्वास
(मानववादी)
परमपद "बोधिसत्व"
भाषा-संस्कृत

- बौद्ध धर्म समर्थक राजा-अशोक, कनिष्क, हर्षवर्धन, पाल शासक।

❑ बौद्ध धर्म का योगदान

❖ वास्तुकला

- **विहार** - जहाँ बौद्ध भिक्षु रहते हैं।
- **चैत्य** - बौद्ध भिक्षु का पूजा घर।
- बौद्ध चित्र अजंता, एलोरा और बाघ गुफाओं में पाए जाते है।
- स्तूप निर्माण।

❑ बौद्ध धर्म का योगदान

- सरल धर्म की उत्पत्ति, जो कर्मकांडों से मुक्त था।
- जाति व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, पशुबलि का विरोध किया।
- बुद्ध ने समानता पर जोर दिया। महिलाओं को संघ में शामिल किया।
- नैतिक मूल्यों पर जोर दिया।

BOOSTER ACADEMY

जैन धर्म

- **प्रथम तीर्थंकर/संस्थापक** – ऋषभदेव / आदिनाथ / केसरियानाथ
- जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर हुए।

❑ पार्श्वनाथ

- **23वें तीर्थंकर**
- **जन्म** - काशी (वाराणसी)
- **पिता** – अश्वसेन,
- काशी के शासक
- सम्मेद पर्वत (झारखण्ड) पर कैवल्य प्राप्ति
- **चार महाव्रत** - सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय
- पाँचवां महाव्रत **ब्रह्मचार्य** इसमें महावीर स्वामी ने जोड़ा।
- इनके अनुयायियों को **'निर्ग्रन्थ' (बंधन रहित)** कहा गया।

❑ महावीर स्वामी

- 24वें एवं अन्तिम तीर्थकर, जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक।
- जन्म – 599 ई. पू. कुण्डग्राम (वैशाली)
- **बचपन का नाम** – वर्धमान।
- **पिता** - सिद्धार्थ, **माता**-त्रिशला (लिच्छवी शासक चेटक की बहिन)
- ज्ञातृक कुल, कश्यप गौत्र, ईक्ष्वाकु वंश
- **पत्नी** - यशोदा, पुत्री - प्रियदर्शनी, दामाद – जमालि
- जैन शब्द संस्कृत के **'जिन'** शब्द से बना है, जिसका अर्थ **'विजेता'** होता है। अर्थात् जिसने इन्द्रियों पर विजय पा ली हो।
- महावीर स्वामी ने 30 वर्ष की आयु में गृहत्याग किया।
- भद्रबाहु के कल्पसूत्र के अनुसार महावीर स्वामी ने ग्रहत्याग के 13 महीने बाद वस्त्र त्याग कर दिए।
- 42 वर्ष की आयु में गृहत्याग के 12 वर्ष पश्चात् जम्भिका गाँव में **ऋजुपालिका** नदी तट पर **साल वृक्ष** के नीचे महावीर को ज्ञान प्राप्ति हुई।
- महावीर स्वामी ने सर्वप्रथम 11 ब्राह्मणों को उपदेश दिया। इन्हें **'गणधर'** कहा गया। महावीर स्वामी की मृत्यु के समय केवल एक गणधर सुधर्मन जीवित था।
- भगवान महावीर के विरुद्ध पहला विद्रोह जमालि ने किया था।
- 72 वर्ष की आयु में पावापुरी में भगवान महावीर की मृत्यु हो गई।
- जैन धर्म में **युद्ध व कृषि** दोनों वर्जित है क्योंकि दोनों में हिंसा होती है।
- जैन धर्म पुनर्जन्म एवं कर्मवाद में विश्वास करता है। कर्मफल ही जन्म एवं मृत्यु का कारण है।

BOOSTER ACADEMY

❑ जैन धर्म की शिक्षाएँ

- मोक्ष (निर्वाण) जीवन का अन्तिम लक्ष्य है, जैन धर्म में सांसारिक तृष्णा एवं बंधन से मुक्ति को मोक्ष (निर्वाण) कहा गया है।
- **त्रिरत्न -** (1) सम्यक् ज्ञान
  (2) सम्यक् दर्शन
  (3) सम्यक् चरित्र (आचरण) – **सर्वाधिक बल इसी पर दिया गया है। पांच महाव्रत इसी का अंग है।**
- पंच महाव्रत/अणुव्रत-प्रथम चार व्रत पार्श्वनाथ ने दिए जबकि **पाँचवाँ 'ब्रह्मचार्य व्रत'** महावीर स्वामी ने जोड़ा।
  1. **अंहिसा -** जीव हत्या न करना।
  2. **सत्य -** सदा सत्य बोलना।
  3. **अपरिग्रह –** सम्पत्ति इकट्ठा न करना।
  4. **अस्तेय -** चोरी नहीं करना।
  5. **ब्रह्मचार्य -** इन्द्रियों को वश में करना।

  व्रत - अणुव्रत - ग्रहस्थ के लिए
  महाव्रत - जैन मुनियों के लिए

  - **जैन धर्म के 6 द्रव्य:-**

1. जीव (आत्मा)	2. पुद्गल (निर्जीव/भौतिक तत्व)
3. धर्म	4. अधर्म
5. आकाश	6. काल

❑ अनन्त चतुष्ट्य

- मोक्ष के बाद व्यक्ति को जन्म-मृत्यु से मुक्ति मिल जाती है और वह **'अनन्त चतुष्ट्य'** को प्राप्त कर लेता है।

1. अनन्त ज्ञान	2. अनन्त दर्शन
3. अनन्त शक्ति/वीर्य/बल	4. अनन्त सुख/आनन्द

- **पुद्गल -** शरीर/निर्जीव/भौतिक तत्व
- **आस्त्रव (बंधन) -** कर्म का जीव की ओर प्रवाह
- **संवर (ठहराव) -** जीव की ओर कर्मो का प्रवाह रुक जाए।
- **निर्जरा (रिलीज) -** संचित कर्मों का नष्ट होना।
- **मोक्ष -** आश्रव से जीव बंधन में पड़ता है तथा संवर व निर्जरा के कारण जीव को मुक्ति मिलती है, जिसे मोक्ष कहते है।
- जैन धर्म में वेदों को अप्रमाणिक माना है।
- बौद्ध साहित्य में महावीर स्वामी को **'निगण्ठ नाटपुत्त'** कहा गया है।
- जैन भिक्षु एवं भिक्षुणी संघ की स्थापना पावापुरी में की थी।
- चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री चन्दना महावीर स्वामी की प्रथम शिष्या एवं भिक्षुणी संघ की अध्यक्ष की।
- महावीर स्वामी ने अपना पहला उपदेश विपुलचल पहाड़ी (राजगृह) पर दिया।

BOOSTER ACADEMY

❑ अनेकान्तावाद

- जैन धर्म का **'तत्व मीमांसा का सिद्धान्त'** ।
- इसके अनुसार दुनिया में अनेक वस्तुएँ हैं और प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण है।
- यह यथार्थवादी एवं सापेक्षवादी बहुलवाद है।

❑ स्यादवाद/सप्तभंगीनय

- ज्ञान मीमांसा का सिद्धान्त।
- सापेक्षवादिता का सिद्धान्त।

❑ जैन साहित्य

- **कल्पसूत्र** : इसकी रचना भद्रबाहू ने की, इसमें प्रारंभिक जैन धर्म का इतिहास मिलता है। इसे तीन भागों में संकलित किया, जिनमें प्रथम भाग में महावीर स्वामी से पूर्व के 23 तीर्थकरों के जीवन का वर्णन, दूसरे भाग में जैन धर्म के नियम एवं सिद्धांत तथा तीसरे भाग में जैन गाथाओं का वर्णन है।
- **''आचरांग सूत्र''** में जैन भिक्षुओं द्वारा पालन किये जाने वाले नियमों का उल्लेख है।
- **''उवासगदसाओं''** में जैन उपासकों के विधि नियमों का संग्रह है।
- **'नायधम्मकहा सूत्र'** में महावीर की शिक्षाओं का वर्णन है।
- **हेमचंद्रकृत परिशिष्ट पर्व** में चंद्रगुप्त चौर्य की जानकारी मिलती है।
- हेमचंद्र सूरी ने **"त्रिषष्टिश्लाकापुरूषचरितम्"** की रचना की, इसमें 63 श्लाका पुरूषों का उल्लेख मिलता है, जिसमें कृष्ण को भी स्थान दिया गया है।
- उद्योतन सूरी की "**कुवलयमाला**" में हूण शासक तोरमाण के बारे में जानकारी मिलती है।
- मुनि सर्वनंदि ने **"लोक विभंग"** की रचना की।
- राष्ट्रकूट नरेश अमोघवर्ष ने संस्कृत भाषा में **'रत्नमालिका'** नामक ग्रन्थ की रचना की।

❑ जैन स्थापत्य

- मथुरा के पास कंकाली टीले से अनेक जैन मूर्तियां एवं यक्ष - यक्षणियों की प्रतिमाएं प्राप्त हुई है।
- जैन मठों को बसादि (बसदिस) कहा जाता है।
- जैन मूर्ति पूजा का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख से प्राप्त होता है।
- पुरी जिला (उड़ीसा) से उदयगिरी – खण्डगिरी में सबसे प्राचीन 35 जैन गुफायें मिली है।
- कांसे की प्राचीनतम जैन मूर्तियां चौसा (बिहार) से मिली है।
- अयोध्या से टेराकोटा निर्मित जैन प्रतिमाऐं मिली है।
- दिलवाड़ा के संगमरमर से निर्मित आदिनाथ मंदिर का निर्माण चालुक्य शासक भीमदेव प्रथम (गुजरात) के सामंत विमलशाह द्वारा 1031 ई. में करवाया गया।
- वास्तुपाल व नेमिनाथ ने भी दिलवाड़ा में 1230 ई. को नेमिनाथ के मंदिर का निर्माण करवाया।

गोतमेश्वर प्रतिमा

- स्थिति – श्रवणबेलगोला (कर्नाटक की चन्द्रगिरी पहाड़ी पर)
- निर्माणकर्ता – राजमल्ल चतुर्थ (गंग शासक) के मंत्री चामुण्डराय द्वारा 983 ईस्वी में
- ऊचांई – 57 फीट (17 मी. 50 सेमी.)

Note:- गोतमेश्वर / बाहुबली ऋषभदेव के पुत्र थे।

❑ जैन धर्म के सम्प्रदाय

- 300 ई. पू. मगध में अकाल पड़ने पर भद्रबाहू के नेतृत्व में मगध छोड़कर श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) जाने वाले दिगम्बर कहलाए।
- स्थलबाहू के नेतृत्व में मगध में ही निवास करने व श्वेत वस्त्र धारण करने वाले श्वेताम्बर कहलाए।

जैन धर्म

श्वेताम्बर	**दिगम्बर**
स्थलबाहू	भद्रबाहू
आगम (जैन साहित्य) में विश्वास	आगम में विश्वास नहीं
श्वेत वस्त्र धारण	नग्न रहते हैं
मगध	श्रवण बेलगोला
संथारा द्वारा देह त्याग	सल्लेखना द्वारा
उपसम्प्रदाय-पुजेरा/डेरावासी, थेरापंथी, ढुढिया / स्थानकवासी	उपसम्प्रदाय-तेरापंथी,तारणपंथी / समैया, तोतापंथी, बीसपंथी, गुमानपंथी

Note:- श्वेताम्बर परम्परा में 19वें जैन तीर्थकर मल्लिनाथ महिला माने गए है। जबकि दिगम्बर परंपरा में पुरूष।

- चन्द्रगुप्त मौर्य ने श्रवणबेलगोला में सल्लेखना द्वारा ही शरीर त्यागा।
- महावीर स्वामी ने **प्राकृत भाषा** में उपदेश दिए।
- जैन धर्म समर्थक राजा-उदायिन, बिम्बिसार, अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार, खारवेल, अमोघवर्ष।

तीर्थंकर	प्रतीक चिन्ह
ऋषभदेव	वृषभ
अजीतनाथ	हाथी
संभव	घोड़ा
शान्तिनाथ	हिरण
पार्श्वनाथ	सर्पफण
नेमिनाथ/अरिष्टनेमि	शंख
महावीर	सिंह

BOOSTER ACADEMY

❑ जैन संगीतियाँ

संगीति	समय	स्थान	अध्यक्ष	कार्य
प्रथम	300 ई. पू.	पाटलिपुत्र (बिहार)	स्थूलभद्र	जैन धर्म ग्रंथों (आगम) का संकलन जैन धर्म का विभाजन-श्वेताम्बर, दिगम्बर
द्वितीय	512-13 ई.	वल्लभी (गुजरात)	देवर्धि क्षमाश्रमण	धर्म ग्रंथों को अर्धमागधी भाषा में संकलित किया।

❑ जैन व बौद्ध धर्म में समानता

- दोनों के संस्थापक क्षत्रिय कुल के थे।
- दोनों ने वेदों के प्रति अनास्था प्रकट की। (नास्तिक दर्शन)
- दोनों अनिश्वरवादी दर्शन है।
- कर्मफल सिद्धान्त एवं पुनर्जन्म में विश्वास।
- दोनों ने संघ में महिलाओं को सम्मिलित किया।

❑ जैन व बौद्ध धर्म में असमानता

बौद्ध	जैन
- मुक्ति हेतु मध्यम मार्ग	- कठोर साधना
- जाति व्यवस्था की निन्दा	- महावीर ने नहीं की
- भाषा-**पालि**	- भाषा-**प्राकृत**
- विस्तार विश्व में	- विश्व में नहीं
- अस्थायी आत्मा में विश्वास	- नित्य आत्मा में विश्वास

BOOSTER ACADEMY

Booster Academy
Way To Success.....

मौर्य साम्राज्य

जानकारी के विभिन्न स्त्रोत

- **साहित्यिक साक्ष्य**
  - ब्राह्मण साहित्य
  - जैन साहित्य
  - बौद्ध साहित्य
- **विदेशी विवरण**
  - मेगस्थनीज
  - स्ट्रेबो, कर्टियस
  - प्लिनी, एरियन
- **पुरातात्विक साक्ष्य**
  - शिलालेख, स्तम्भलेख, स्तम्भलेख
  - गुहालेख, महल, स्तूप, मुद्रा

❑ साहित्य

(i) **ब्राह्मण साहित्य -** कौटिल्य कृत **अर्थशास्त्र**
सोमदेव कृत **कथासरित्सागर**
क्षेमेन्द्र कृत **वृहत्कथामंजरी**
पंतजलि का **महाभाष्य**
विशाखदत्त का **मुद्राराक्षस**

(ii) **बौद्ध साहित्य -** दीपवंश, महावंश, दिव्यावदान, महाबोधिवंश, दीर्घनिकाय।

(iii) **जैन साहित्य -** हेमचन्द्र सूरी का परिशिष्ट पर्व, भद्रबाहू का कल्पसूत्र।

❑ पुरातत्व

- महास्थान अभिलेख (बोगरा, बांग्लादेश) एवं सौहगोरा ताम्रपत्र (गोरखपुर, उत्तर प्रदेश) चन्द्रगुप्त मौर्य के अभिलेख है। अकाल से सामना करने के उपाय किये गये है।

❑ मौर्य वंश की उत्पत्ति सम्बन्धि मत

क्षत्रिय	जैन व बौद्ध साहित्य (सर्वाधिक मान्य)
शूद्र	ब्राह्मण साहित्य
वृषल (निम्न वर्गीय)	विशाखदत्त की मुद्राराक्षस
वैश्य	रोमिला थापर
निम्न परिस्थिति में जन्म	ग्रीक साहित्य

- विशाखदत्त की **'मुद्राराक्षस'** में चंद्रगुप्त मौर्य को वृषल (**निम्न कुल**) का बताया है।

BOOSTER ACADEMY

❑ चन्द्रगुप्त मौर्य (322-298 ई. पू.)

- चाणक्य की सहायता से अंतिम नन्द शासक धनानंद को पराजित कर 322 ई. पू. में मगध की गद्दी पर बैठा।
- ग्रीक साहित्य में इसे सेण्ड्रोट्स या एण्ड्रोकोट्स कहा गया है।
- विलियम जोन्स ने ही चन्द्रगुप्त मौर्य की सेण्ड्रोट्स के रुप में पुष्टि की।
- प्रथम भारतीय साम्राज्य का संस्थापक/भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम नायक/भारत का मुक्तिदाता।
- **प्लूटार्क एवं जस्टिन** के अनुसार **"चन्द्रगुप्त ने सम्पूर्ण भारत पर अधिकार कर लिया था।"**
- **"चन्द्रगुप्त मौर्य ने उत्तर – पश्चिम में हिन्दुकुश का पर्वत तक अपनी सीमा का विस्तार का सर्वप्रथम भारत की वैज्ञानिक सीमा को प्राप्त किया, जिसके लिए 18वीं – 19वीं शताब्दी में अंग्रेज भी संघर्षत रहे।" - विन्सेन्ट स्मिथ**
- 305-304 ई. पू. में यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर को पराजित किया।
- सेल्यूकस ने अपनी बेटी हेलेना का विवाह चन्द्रगुप्त से किया।
- सेल्यूकस ने अपने दूत मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा।
- **सेल्यूकस ने 500 हाथियों के बदले निम्न प्रदेश दिए -**

ऐरिया	अराकोसिया	जेड्रोसिया	पेरोपनिसडाई
(हेरात)	(कंधार)	(ब्लूचिस्तान)	(काबुल)

❑ बिन्दुसार (298 ई. पू. - 274 ई. पू.)

नाम	मत
अमित्रघात	पंतजलि
अमित्रोचेट्स	यूनानी लेखक
सिंहसेन	जैन साहित्य
अमित्रोकेड्स	स्ट्रेबो
मद्रसार	वायुपुराण

- बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- **इसके समय में तक्षशिला में दो विद्रोह हुए-**
  1. **प्रथम विद्रोह -** अशोक द्वारा दमन।
  2. **द्वितीय विद्रोह** - सुशीम द्वारा दमन।
- इसके समय अशोक अवन्ति (उज्जैन) का गवर्नर था।
- बिन्दुसार की सभा में 500 सदस्यों वाली मंत्रिपरिषद थी, जिसका प्रधान **खल्लाटक** था।

BOOSTER ACADEMY

❑ विदेशी सम्बन्ध

राज्यों के राजदूत दरबार में आए

मिस्त्र	सीरिया
टॉलमी द्वितीय 'फिलाडेल्फस'	एंटियोकस प्रथम
राजदूत-डायनोसिस	राजदूत-डायमेकस

- यूनानी लेखक एथिनियस के अनुसार बिन्दुसार ने सीरिया शासक एण्टियोकस प्रथम से **तीन वस्तुओं की माँग रखी-**
  (1) **मीठी शराब**
  (2) **सूखी अंजीर**
  (3) **दार्शनिक**
- सीरियाई शासक ने दार्शनिक के अलावा दोनों वस्तुएँ भिजवा दी।

❑ अशोक (273-232 ई. पू.)

- बौद्ध साहित्य (सिंहली अनुश्रुति) के अनुसार अशोक ने अपने 99 भाईयों की हत्या कर सिंहासन प्राप्त किया।
- अशोक का राज्याभिषेक 269 ई. पू. में हुआ था। इससे पूर्व बिन्दुसार के समय अशोक अवन्ति (उज्जैन) का राज्यपाल था। (चार वर्ष तक उत्तराधिकार संघर्ष चला)
- अशोक की माता सुभद्रांगी आजीवक सम्प्रदाय की अनुयायी थी।
- अशोक को अभिलेखों में **'देवनांप्रिय'** तथा **'देवानांप्रियदर्शी'** जैसी उपाधियों से विभूषित किया गया है।
- अभिलेख लिखवाने का विचार ईरानी शासक **दारा** से मिला।

❖ नगर स्थापना

अशोक - श्रीनगर (वितस्ता/झेलम नदी पर)
ललितपाटन (नेपाल में)

- अशोक के समय तीसरी बौद्ध संगीति का आयोजन **'मोगलीपुत्ततिस्स'** की अध्यक्षता में बुलाई।
- कगंनहल्ली (कर्नाटक) से अशोक की पाषाण की बनी मूर्ति मिली है।
- अशोक ने राज्याभिषेक के 8वें वर्ष (261 ई. पू.) में कलिंग पर आक्रमण किया, जिसका वर्णन 13वें शिलालेख में मिलता है

कलिंग को दो प्रशासनिक केन्द्रों में विभाजित

उत्तरी केन्द्र धौली	दक्षिणी केन्द्र जौगढ़
राजधानी-तोसली	राजधानी-समपा

- खारवेल के हाथीगुफा अभिलेख के अनुसार कलिंग आक्रमण के समय यहाँ का राजा नन्दराज था।

BOOSTER ACADEMY

Booster Academy
Way To Success.....

- इस युद्ध के बाद अशोक ने **'भेरी घोष'** (युद्ध द्वारा विजय) के स्थान पर **'धम्म घोष'** (धर्म द्वारा विजय) की नीति को अपनाया।

❑ अशोक का धर्म

- **कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार** अशोक पहले शिव भक्त था। उसने झेलम नदी किनारे श्रीनगर शहर बसाया और वहाँ शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
- दीपवंश व महावंश के अनुसार **निग्रोध** ने अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया।
- दिव्यावदान के अनुसार **उपगुप्त** ने अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया।
- **भाब्रू शिलालेख** से अशोक के बौद्ध होने की जानकारी मिलती है।
- अशोक ने अपने शासन के 10वें वर्ष **बोधगया** एवं 20वें वर्ष में लुम्बिनी की यात्रा की।
- अशोक मोगलीपुत्ततिस्स से बौद्ध धर्म की तरफ आकर्षित हुआ।

❑ अशोक का धम्म

- अशोक की आचार संहिता, जो इसने अपनी प्रजा के नैतिक उत्थान के लिए प्रस्तुत की, इसे अभिलेखों में धम्म कहा गया।
- इसका बौद्ध धर्म से सीधा सम्बन्ध नहीं था लेकिन यह बौद्ध धर्म से प्रभावित था।
- द्वितीय स्तम्भ लेख में अशोक पूछता है - **''धम्म क्या है/कियम् चु धम्मे?''**
- धम्म की परिभाषा दीर्घ निकाय के **राहुलोवादसुत्त** से ली गई है।
- दूसरे एवं सातवें स्तम्भ लेख में धम्म की परिभाषा मिलती है।
- इसमें लोगों का कल्याण, दान, दया, साधुता, मृदुता, सत्यवादिता जैसी शिक्षाएँ हैं।
- अशोक के शासन के 13वें वर्ष में धम्म महापात्र की नियुक्ति की।
- **'युक्तों, रज्जुको एवं प्रादेशिकों'** को प्रति पाचवें वर्ष धम्म प्रचार के लिए भेजा जाता था। अभिलेखों में इन्हें **'अनुसंधान'** कहा गया। इन तीनों का वर्णन **'तीसरे' वृह्त शिलालेख'** में मिलता है।

❑ अशोक द्वारा धर्म प्रचार हेतु भेजे गए धर्म प्रचारक

धर्म प्रचारक	स्थान
महेन्द्र व संघमित्रा	श्रीलंका
मज्झिम	हिमालय प्रदेश
महारक्षित	यवन देश
महादेव	महिष्मंडल (मैसूर)
महाधर्म रक्षित	महाराष्ट्र
धर्मरक्षित	अपरान्तक (पश्चिम भारत)
सोन व उत्तरा	सुवर्ण भूमि
मज्झन्तिक	कश्मीर व गान्धार

BOOSTER ACADEMY

❑ अशोक के उत्तराधिकारी

- वायु पुराण के अनुसार अशोक के बाद उसका पुत्र कुणाल शासक बना।
- कुणाल की मृत्यु के बाद उसके बेटों में मौर्य साम्राज्य का विभाजन हो गया।
  पूर्वी भाग का शासक - दशरथ
  पश्चिमी भागा का शासक - सम्प्रति
- दशरथ आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- सम्प्रति जैन धर्म का अनुयायी था।
- मौर्य वंश का अन्तिम शासक वृहद्रथ था जिसकी हत्या इसी के सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने 185 ई. पू. में कर दी।

❑ मौर्य प्रशासन

- मौर्य प्रशासन राजतंत्रात्मक निरंकुश, केन्द्रीकृत शासक व्यवस्था थी, जिसने भारत को पहली बार राजनैतिक एकता के सूत्र में बाँधा। यह प्राचीन भारत में सबसे विस्तृत नौकरशाही थी।
- **चाणक्य ने राज्य के सप्तांग बताये हैं-**
  1. राजा   2. राज्य
  3. अमात्य   4. दुर्ग
  5. बल/दण्ड/सेना   6. कोष
  7. मित्र
- **"राजत्व का दैवीय सिद्धान्त"** प्रसिद्ध था, इसलिए शासकों ने देवानांप्रिय की उपाधि धारण की।
- **मन्त्रिण:- 3-4 प्रमुख मंत्रियों को मंत्रिण: कहा जाता था।**
- **परिषा** - मंत्रिपरिषद् को परिषा कहा जाता था।
- **मंत्रिपरिषद्** के सदस्यों को 12,000 पण वार्षिक मिलते थे, जबकि **मन्त्रिण:** के सदस्यों को 48,000 पण वार्षिक वेतन मिला था। सेवकों एवं अंगरक्षकों को केवल 60 पण वेतन मिलता था। न्यूनतम केवल 60 पण वार्षिक था।

❑ केन्द्रीय प्रशासन

- राजा की सहयता केन्द्र हेतु 18 मंत्री होते थे, जिन्हें **'तीर्थ'** (महामात्य) कहा जाता था।

तीर्थ	**सम्बन्धित विभाग**
1. पुरोहित	प्रमुख धर्माधिकारी
2. सेनापति	युद्ध विभाग
3. समाहर्ता	राजस्व विभाग
4. प्रशास्ता	राजकीय आज्ञाओं को लिखने वाला
5. युवराज	राजा का उत्तराधिकारी
6. सन्निधाता	राजकीय कोषाध्यक्ष
7. प्रदेष्टा	कंटकशोधन (फौजदारी) न्यायाधीश
8. व्यावहारिक	धर्मस्थनीय (दीवानी) न्यायाधीश
9. नायक	सेना का संचालक

BOOSTER ACADEMY

10. कर्मान्तिक उद्योग/कारखानों का प्रधान
11. दण्डपाल सेना की सामग्री जुटाने वाला
12. नागरक नगर का प्रमुख अधिकारी
13. दुर्गपाल दुर्गों का प्रबन्धक
14. अन्तपाल सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक
15. दौवारिक राजमहलों की देख-रेख
16. आटविक वन विभाग प्रधान
17. अन्तर्वंशिक सम्राट की अंगरक्षक सेना का प्रधान
18. मंत्रिपरिषदाध्यक्ष मंत्री परिषद् का अध्यक्ष

- **तीर्थों के नियंत्रण में द्वितीय श्रेणी के पदाधिकारी थे, जिन्हें अध्यक्ष कहा जाता था। इनकी संख्या 26 थी।**

	अध्यक्ष	**सम्बन्धित विभात**
1.	मुद्राध्यक्ष	पासपोर्ट अधिकारी
2.	लवणाध्यक्ष	नमक अधिकारी
3.	लक्षणाध्यक्ष	मुद्रा एवं टकसाल का अध्यक्ष
4.	गणिकाध्यक्ष	वैश्याओं का निरीक्षक
5.	सुराध्यक्ष	आबकारी विभाग प्रमुख
6.	सूनाध्यक्ष	बूचड़खाने का अध्यक्ष
7.	सूत्राध्यक्ष	कताई-बुनाई वस्त्र विभाग प्रमुख
8.	पौतवाध्यक्ष	माप-तौल का अध्यक्ष
9.	पण्याध्यक्ष	व्यापार-वाणिज्य का अध्यक्ष
10.	बन्धनागाराध्यक्ष	जेल/कारागार प्रमुख
11.	सीताध्यक्ष	राजकीय कृषि विभाग प्रमुख
12.	आयुधागाराध्यक्ष	अस्त्र-शस्त्र रख-रखाव का प्रमुख
13.	शुल्काध्यक्ष	चूँगी वसूली का प्रमुख
14.	कुप्याध्यक्ष	जंगल की वस्तुओं का निरीक्षण
15.	आकराध्यक्ष	खनिज विभाग प्रमुख
16.	विविताध्यक्ष	चारागाहों का प्रमुख
17.	नवाध्यक्ष	नौसेना प्रमुख
18.	संस्थाध्यक्ष	व्यापारिक मार्गों का प्रमुख
19.	कोष्ठागाराध्यक्ष	भण्डारगृहों का प्रमुख
20.	स्वर्णाध्यक्ष	स्वर्ण उत्पादन एवं मानकीकरण अधिकारी
21.	मानाध्यक्ष	दूरी व संकेतक से संबंधी
22.	द्यूताध्यक्ष	जुआ अधिकारी
23.	पत्तनाध्यक्ष	बंदरगाहों का प्रमुख
24.	लोहाध्यक्ष	धातु विभाग का प्रमुख
25.	हस्तिाध्यक्ष	हाथियों की देखभाल का अधिकारी
26.	देवताध्यक्ष	धार्मिक संस्थाओं का अध्यक्ष

❑ प्रान्तीय प्रशासन

92162 61592, 92562 61594
Download The App Now : Google Play Booster Academy
/KAPIL CHOUDHARY RTS
/BOOSTER ACADEMY RAS

- प्रान्तों को **चक्र** कहा जाता था। चन्द्रगुप्त मौर्य के समय प्रान्तों की **संख्या 4** थी परन्तु अशोक द्वारा कलिंग विजय के पश्चात् यह **संख्या 5 हो** गई।

प्रान्त	**राजधानी**
1. उत्तरापथ (पश्चिमोत्तर)	तक्षशिला
2. दक्षिणापथ	सुवर्णगिरी
3. अवन्ति (पश्चिम प्रान्त)	उज्जैन
4. मध्यदेश (पूर्वी प्रदेश)	पाटलिपुत्र
5. कलिंग	तोसली

- **मौर्य प्रशासन का विभाजन निम्न प्रकार से था-**

केन्द्र
प्रान्त
मण्डल - प्रादेशिक/प्रदेष्टा
जिला/विषय/आहार - विषयपति
स्थानीय - 800 गाँवों का समूह
द्रोणमुख – 400 गांवों का समूह
खार्वटिक - 200 गाँवों का समूह
संग्रहण - 10 गाँवों का समूह
ग्राम - प्रशासन की सबसे न्यूनतम इकाई, ग्रामिक

- **प्रशासनिक अधिकारियों का आरोही क्रम-**

गोप - स्थानिक - युक्त - राजुक - प्रादेशिक - विषयपति - समाहर्ता - महामात्य - प्रान्तपति - राजा

- अशोक ने **"युक्त"** नामक अधिकारियों की नियुक्ति की, ये केन्द्र तथा स्थानीय शासन के बीच की सम्पर्क कड़ी थे।
- **मेगस्थनीज ने दो नगर अधिकारियों का जिक्र किया है-**
    1. **एस्टोनोमोई** - नगर अधिकारी
    2. **एग्रोनोमोई** - जिले में सड़क-भवन निर्माण
- नगर प्रशासन 6 समितियों में विभक्त था, प्रत्येक समिति में 5 सदस्य थे। इस प्रकार 30 सदस्यों का मण्डल नगर प्रशासन देखता था।
- **राजुक** – ग्रामीण क्षेत्रों की देखभाल हेतु, कर संग्रह एवं न्यायिक शक्तियों युक्त अधिकारी। यह सम्भवत: राज्याभिषेक के 27वें वर्ष में नियुक्त किया गया था।
- राजुक आधुनिक जिलाधिकारी / जिला कलेक्टर जैसे स्थिति का अधिकारी था, जो राजस्व के साथ न्यायिक कार्य भी करते थे। राज्याभिषेक के 27वें वर्ष में (26 वर्ष बाद) इनको न्यायिक एवं दण्डात्मक अधिकार सौंपें गए।
- **प्रादेशिक** – जिलाधिकारी (अर्थशास्त्र का प्रदेष्टा)
- **प्रादेशिक** वर्तमान संभागीय आयुक्त के समान, अर्थशास्त्र का प्रदेष्टा ही प्रादेशिक है।

BOOSTER ACADEMY

न्याय प्रशासन

न्यायालय	**न्यायाधीश**
दीवानी-धर्मस्थीय	व्यावहारिक
फौजदारी-कंटकशोधन	प्रदेष्टा

- राजुक-क्षेत्रीय न्यायाधीश का कार्य भी करते थे।

गुप्तचर व्यवस्था

- गुप्तचर प्रमुख-**महामात्यसर्प**
- अर्थशास्त्र में गुप्तचरों को **'गूढ़ पुरुष'** कहा गया है।
- दो प्रकार के गुप्तचर-
    1. **संस्था** - एक स्थान पर रहकर
    2. **संचार** - भ्रमणशील गुप्तचर
- राजा की व्यक्तिगत सुरक्षा हेतु महिला अंगरक्षिकाएँ होती थी। **मेगस्थनीज** एवं **स्ट्रेबो महिला अंगरक्षकों** को उल्लेख करते हैं।
- महिला अंगरक्षिकाओं को **"समारानुरांगिनी"** कहा जाता था।
- मेगस्थनीज एवं डियोडोरस ने गुप्चरों को **ओवरसियर्स** (एपिस्कोपई) तथा स्ट्रेबो एवं एरियन ने **इंसपेक्टर** (एफोरोई) कहा है।
- विदेशों में नियुक्त होने गुप्तचरों को **उभयवेतन** कहते थे।

सैन्य व्यवस्था

- सैनिक छावनियों को **"गुल्म"** तथा सैनिकों को वेतन **"गुल्मदेय"** कहलाता था।
- **कौटिल्य के अनुसार सेना के चार अंग** – पैदल, अश्व, रथ, हाथी थे।
- मौर्यो का वंश चिह्न मोर था।

मौर्यकालीन समाज

- **मेगस्थनीज ने भारतीय समाज को सात जातियों में विभक्त किया हैं-**

1. दार्शनिक	2. किसान	3. शिकार/पशुपालक	4. कारीगर/शिल्पी
5. सैनिक	6. निरीक्षक/गुप्तचर	7. सभासद/मंत्री	

- मेगस्थनीज व स्ट्रेबो के अनुसार भारत में दास प्रथा का प्रचलन नहीं था।
- मेगस्थनीज के अनुसार भारतीय डायोनिसियस (शिव) तथा हेराक्लीज (कृष्ण) की पूजा करते थे।
- मौर्य समाज चार वर्णों में विभक्त था-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।
- वर्ण व्यवस्था जन्म आधारित थी, जाति व्यवस्था आरम्भ हो चुकी थी।
- महिलाओं की स्थिति संतोषजनक थी। उन्हें पुनर्विवाह व नियोग की अनुमति थी। विवाह विच्छेद कर अनुमति थी, तलाक को अर्थशास्त्र में **'मोक्ष'** कहा गया है।

BOOSTER ACADEMY

- **छंदवासिनी -** विधवाएँ जो स्वतंत्र जीवनयापन करती थी।
- **रंगोपजीवी -** पुरुष कलाकार
- **रंगोपजीवनी -** महिला कलाकार
- **बन्धिकपोषक -** वैश्याओं के संगठन का अध्यक्ष
- **अनिष्कासिनी -** उच्च वर्ग की महिलाओं जो घर से बाहर नहीं निकलती थी
  प्रवहण - सामूहिक समारोह
  आहितक - अस्थायी आश्रित या बंधक दास
  ब्रह्मदेय - ब्रह्मणों को दी जाने वाली कर मुक्त भूमि
- कौटिल्य ने 9 प्रकार के दासों का वर्णन किया है

❑ मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था

- मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि, पशुपालन एवं वाणिज्य पर आधारित थी, जिसे सम्मिलित रुप से **'वार्ता'** (वृत्ति का साधन) कहा जाता था।
- **क्षेत्रक** – भूस्वामी
- **उपवास** – कास्तकार
- **भूमि के प्रकार** –
  (1) **अदेवमातृक -** बिना वर्षा के अच्छी खेती हो (कृत्रिम साधनों द्वारा)।
  (2) **देवमातृक -** सिर्फ वर्षा द्वारा खेती।
  (3) **कृष्ट -** जुती हुई भूमि।
  (4) **अकृष्ट -** बिना जुती भूमि।
  (5) **स्थल -** ऊँची भूमि।
- **द्रोण -** अनाज की माप।
- **निवर्तन -** भूमि माप की इकाई।
- **रज्जुग्राहक -** खड़ी फसल मापकर तय करने वाला बन्दोबस्त अधिकारी।
- अशोक के रूम्मिनदेई अभिलेख में केवल दो करों का उल्लेख मिलता है – **बलि** और **भाग।**
- निजी भूमि से प्राप्त आय भाग कहलाती थी एवं राजकीय भूमि से प्राप्त आय **सीता** कहलाती थी।
- राजकीय कृषि विभाग का अध्यक्ष **सीताध्यक्ष** कहलाता था। अर्थशास्त्र में हल से जोतकर उत्पन्न किये गये पदार्थ को **सीता** कहा गया है।
- **मेगस्थनीज** के अनुसार **भारत में अकाल नहीं** पड़ता, जबकि अर्थशास्त्र के अनुसार भारत में अकाल पड़ते थे। अर्थशास्त्र में अकाल के समय राजा द्वारा जनता की भलाई के उपायों का वर्णन है।
- कौटिल्य **चावल** की फसल को **सर्वोत्तम** एवं ईख को निकृष्ट बताते हैं।
- सिंचाई पर विशेष ध्यान दिया जाता था। **रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख** के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य के गर्वनर **पुष्यगुप्त वैश्य ने सौराष्ट्र में सुदर्शन झील** का निर्माण करवाया। अशोक के गर्वनर यवनराज **तुषास्प** ने इसकी मरम्मत करवाई थी।

BOOSTER ACADEMY

❑ विभिन्न कर:-

कर	सम्बन्धित विषय
सीता	राजकीय भूमि से होने वाली आय (1/2)
भाग	कृषकों से प्राप्त उपज का हिस्सा (1/6)
प्रणय	आपतकालीन कर (1/3 या 1/4)
हिरण्य	नकद कर
सेतुबन्ध	राज्य को सिंचाई प्रबंध की एवज में कर
बलि	एक प्रकार का राजस्व कर
प्रवेश्य	आयात कर
निष्क्राम्य	निर्यात कर
विष्टि	नि:शुल्क श्रम (बेगार)

- **पंकोदसन्निरोध** – सड़क पर कीचड फैलाने पर।
- **उद्क भाग** – सिंचाई कर

❑ मौर्यकालीन व्यापार

- व्यापार जल एवं थल दोनों मार्गों से होता था। जहाज निर्माण भी मुख्य उद्योग था।
- व्यापारी श्रेणियों में विभाजित थे, इनका मुखिया **'श्रेष्ठी'** कहलाता था, जातकों में 18 प्रकार की श्रेणियों का उल्लेख है।
- प्रमुख बंदरगाह-**पश्चिम भारत**-भृगुकच्छ (भड़ौच, गुजरात), सोपारा (महाराष्ट्र)
- **पूर्वी भारत**-ताम्रलिप्ति (तामलुक प. बंगाल)
- मौर्यकाल का सबसे प्रधान उद्योग सूत कातने व बूनने का था।
- **चीनीपट्ट-** चीन से आने वाला रेशम
- **पत्रोम-**पेड़ पत्तों या रेशों से बनाये गये वस्त्र
- **दुकुल** – श्वेत एवं चिकना वस्त्र (पेड़ की छाल से)
- **क्षौम** – एक प्रकार का रेशमी वस्त्र
- **कौसेय** – कौटिल्य द्वारा वर्णित एक प्रकार का वस्त्र
- यूनानी लेखक **कर्टियस** ने **श्वेत लोहे** की **तलवार** का उल्लेख किया है तथा यह भी कहा है कि मौर्यकाल में लौह उद्योग अत्यन्त विकसित अवस्था में था।
- **प्रमुख व्यापारिक संगठन**
  श्रेणी - शिल्पियों का संगठन।
  संघ - महाजनों का संघ।
  निगम - व्यापारियों का संगठन।
  सार्थवाह - कारवाँ व्यापारियों का प्रमुख।
- **मौर्यकालीन मुद्राएँ**
  मौर्यकालीन सिक्के आहत सिक्के (पंचमार्क) थे।

BOOSTER ACADEMY

सोने - सुवर्ण, निष्क।
चाँदी - कार्षापण, पण, धरण।
ताँबा - माषक, काकनी। (काकनी सबसे छोटा ताम्बे का सिक्का था।)

❑ मौर्यकालीन भौतिक संस्कृति का विस्तार

- मौर्यकालीन भौतिक संस्कृति का गंगाघटी क्षेत्र में विस्तार में **लोहे के उपयोग, आहत सिक्कों के उपयोग, उत्तरी काली पॉलिस मृद्भाण्ड के प्रयोग (NBPW), पकी ईंटों तथा मंडल कूपों (वलय कूप) के उपयोग** ने उत्तरी पूर्वी भारत में नगरों की संख्या में वृद्धि में योगदान दिया।
- पक्की ईंटों तथा मंडल कूपों का प्रयोग भी सबसे पहले मौर्यकाल में दृष्टिगोचर होता था।

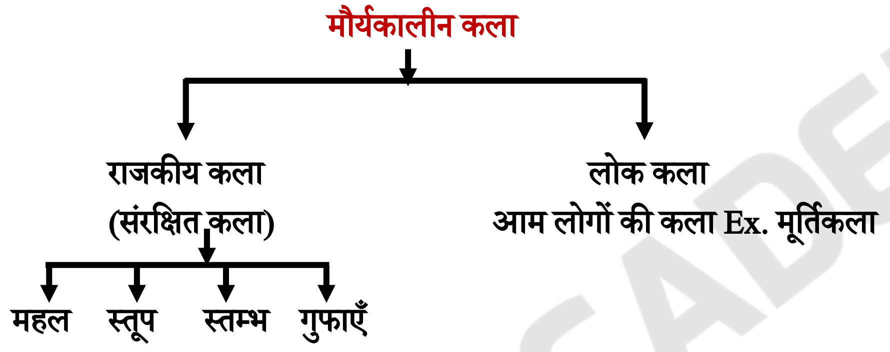

❑ लोक कला

- मौर्यकाल में यक्ष-यक्षणियों की मूर्तियाँ बनीं।
- **यक्ष मूर्ति (मणिभद्र) -** मथुरा के परखम गाँव से प्राप्त।
  यक्षिणी मूर्ति (चामर गृहिणी) - पटना के दीदारगंज से।
- **पटना के बुलन्दीबाग से -** नृतकी की मृणमूर्ति प्राप्त।
- धौली (उड़ीसा) से चट्टान काटकर हाथी की आकृति बनाई गई।

❑ राजकीय कला:-

❖ महल

- बुलन्दीबाग से नगर के परकोटे एवं कुम्रहार से 80 स्तम्भ वाले राजप्रसाद के अवशेष मिले है। इन्हें प्रकाश में लाने का श्रेय स्पूनर को जाता है।
- मौर्यकाल में काष्ट के स्थान पर पत्थर का प्रयोग हुआ है।
- पाटलिपुत्र नगर की लम्बाई 80 स्टेडिया एवं चौडाई 18 स्टेडिया थी, इसमें 64 द्वार तथा 570 बुर्ज थे।

BOOSTER ACADEMY

❖ स्तूप

- **बौद्ध साहित्य के अनुसार अशोक ने 84000 स्तूपों का निर्माण करवाया-**
  (1) साँची का स्तूप (भोपाल, मध्य प्रदेश)
  (2) धर्मराजिका स्तूप (सारनाथ, तक्षशिला)
  (3) पीपरहवा स्तूप (उत्तर प्रदेश)

❑ स्तम्भ

- अशोक को स्तम्भ लगवाने का विचार ईरानी शासक दारा से मिला।
- अशोक के **एकाश्मक स्तम्भ** (एक ही पत्थर को तराश कर बनाये गये) मौर्य कला के सर्वश्रेष्ठ नमूने हैं। इन पर चमकदार पॉलिश है। अशोक के स्तम्भ उत्तर प्रदेश के **चुनार (मिर्जापुर) के बलुआ पत्थर** से बने हैं।
- स्तम्भों को मुख्यत: **चार भागों** में बाँटा गया है – लाट/यस्टि, अवांगमुखी कमल/उल्टा कमल, चौकी, शीर्ष।

❑ अशोक व डेरियस के स्तम्भों के मध्य असमानताएँ

अशोक	डेरियस
एकाश्म पत्थरों का प्रयोग	पत्थरों को जोड़कर स्तम्भ निर्माण
स्वतंत्र रूप से स्थापित	चौकी या महल का हिस्सा
शीर्ष पर पशु आकृति	शीर्ष पर पशु आकृति नहीं
अवांगमुखी (उल्टा) कमल	सीधा कमल
लेखयुक्त स्तम्भ	लेख विहीन स्तम्भ
पॉलिशयुक्त व चमकदार	चमकदार व पॉलिश नहीं

अशोक के स्तम्भ	पशु
सारनाथ (उत्तर प्रदेश)	चार सिंह
साँची स्तम्भ (मध्य प्रदेश)	चार सिंह
संकिसा	हाथी
रामपुरवा	बैल
रामपुरवा	एक सिंह
वैशाली	एक सिंह
रुम्मिनदेई	घोड़ा
लौरिया नन्दनगढ़	एक सिंह

- **सारनाथ स्तम्भ की चौकी / फलक पर पशुओं का क्रम** – हाथी, वृषभ, घोडा, सिंह है।
- भारत का राष्ट्रीय चिह्न सारनाथ के स्तम्भ से लिया गया है। इस चक्र में मूलतः 32 तीलियाँ है, जबकि राष्ट्रीय चिह्न में 24 हैं

BOOSTER ACADEMY

Booster Academy
Way To Success.....

❑ गुहालेख

- यह लेख केवल ब्राह्मी लिपि एवं प्राकृत भाषा में है।

अशोक
↓
बराबर की पहाड़ियों में
↓
तीन गुफाओं का निर्माण
1. कर्ण चौपड़
2. सुदामा
3. विश्व झोपड़ी

दशरथ (अशोक का पौत्र)
↓ लोमश ऋषि 'बराबर की पहाड़ी'
↓ नागार्जुनी पहाड़ियों
↓
1. गोपी गुफा
2. वापी गुफा
3. पदथिक गुफा

उपर्युक्त गुफाएं आजीवक संप्रदाय के लिए बनाई गई।

❑ अशोक के अभिलेख

- **सर्वप्रथम खोज - 1750 ई.** में टीफेन्थेलर ने की। (दिल्ली मेरठ स्तम्भ लेख की)
- **सर्वप्रथम पढ़ा - 1837 ई.** में जेम्स प्रिंसेप ने। (दिल्ली टोपरा स्तम्भ लेख)
- **अभिलेख चार लिपियों में** ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक, अरेमाइक।
- **तीन भाषाओं** - प्राकृत, ग्रीक, अरेमाइक।
- **सबसे लम्बा अभिलेख** – भाब्रू शिलालेख।
- **सबसे छोटा अभिलेख** - रुम्मिनदेई अभिलेख।
- अशोक के अभिलेखों से उसके शासन के 8वें वर्ष से 27 वें वर्ष तक की घटनाओं की जानकारी मिलती है।
- **डी. आर. भण्डारकर ने मात्र अशोक के अभिलेखों से ही अशोक का इतिहास लिखा है।**

❖ अशोक के अभिलेख

- **शिलालेख** - शिलालेखों को दो भागों में बाँटा गया है - वृहत एवं लघु।

  (1) वृहत या मुख्य शिलालेख
- **14 लेखों का समूह आठ अलग-अलग स्थानों से प्राप्त किये है।**
  1. शाहबाजगढ़ी (पाक.)
  2. मानसेहरा (पाक.)
  3. गिरनार (गुजरात)
  4. धौली (ओडिशा)
  5. जौगढ़ (ओडिशा)
  6. कालसी (उत्तराखण्ड)
  7. सोपारा (महाराष्ट्र)
  8. एर्रगुडि (आन्ध्र प्रदेश)
- अशोक 13वें लेख में कलिंग आक्रमण की जानकारी देता है। धौली एवं जौगढ़ में समस्त प्रजा को अपनी संतान के समान बताया है।

  (2) लघु शिलालेख

BOOSTER ACADEMY

- लघु शिलालेखों को दो भागों में विभाजित किया गया है।
- कुछ में अशोक के व्यक्तिगत जीवन की जानकारी मिलती है तथा अन्य में अशोक के धम्म के बारे में जानकारी मिलती है।
- **ये कुल 18 स्थानों से प्राप्त हुए है। जिनमें से -**
  1. गुर्जरा (मध्य प्रदेश)
  2. मास्की (कर्नाटक)
  3. उदेगोलम (कर्नाटक)
  4. नेट्टूर (कर्नाटक)
  5. भाब्रू (राजस्थान)

  } अशोक के नाम का उल्लेख
- अन्य अभिलेखों में अशोक को देवानांमप्रिय/देवानामप्रियदर्शी का उल्लेख मिलता है।
- भाब्रू के दो शिलालेख **बैराठ की बीजक पहाड़ी** जयपुर से प्राप्त हुए है। इनकी खोज **कैप्टन बर्ट द्वारा 1837 ई.** में की गयी। यह अशोक को बौद्ध प्रमाणित करता है।
- कंधार (पाक) एवं लंघमान (अफगानिस्तान) में अरेमाइक लिपि में प्राप्त अभिलेख है।
- शर-ए-कूना (कंधार) द्विभाषीय अभिलेख है, जिसमें यूनानी एवं अरेमाइक भाषाओं का प्रयोग किया गया है।
- शाहबाजगढ़ी एवं मानसेहरा अभिलेखों की लिपि खरोष्ठी एवं भाषा प्राकृत है।
- एर्रगुड़ी अभिलेख द्विलिपीय है जिसमें खरोष्ठी एवं ब्राह्मी लिपि का प्रयोग किया गया है।

  स्तम्भ लेख - दो प्रकार - वृहत स्तम्भ लेख, लघु स्तम्भ लेख।

  (i) वृहत्त स्तम्भ लेख
- वृहत्त स्तम्भ लेखों की संख्या 7 हैं, जबकि यह 6 अलग-अलग स्थानों से प्राप्त हुए है।
- **ये केवल ब्राह्मी लिपि एवं प्राकृत भाषा में है।**

  (1) दिल्ली - टोपरा स्तम्भ लेख –

  ✓ यह मूलत: अम्बाला (हरियाणा) में था, किन्तु फिरोज शाह तुगलक ने इसे दिल्ली में गड़वा दिया। केवल दिल्ली – टोपरा स्तम्भ लेख पर सात अभिलेख (1 से 7 तक सभी) पूरे मिलते हैं। अन्य सभी पर केवल 1 से 6 तक ही लेख उत्कीर्ण मिलतें है।

  ✓ दिल्ली-टोपरा के सातवें स्तम्भ लेख में आजीवकों, **निग्रन्थों** आदि का संघ के साथ उल्लेख मिलता है।

  ✓ दिल्ली-टोपरा को अशोक की बड़ी लाट, फिरोज शाह तुगलक की लाट, भीमसेन की लाट एवं दिल्ली शिवालिक लाट कहा जाता है।

  ✓ फिरोज शाह तुगलक ने इसे स्वर्ण स्तम्भ या स्वर्ण मीनार कहा था।

  ✓ दिल्ली-टोपरा पर विग्रहराज चतुर्थ के तीन लेख उत्कीर्ण हैं।

  (2) दिल्ली-मेरठ स्तम्भ लेख - मेरठ से दिल्ली फिरोजशाह तुगलक, इसे छोटी लाट भी कहते है।

  (3) लौरिया - अरराज स्तम्भ लेख (बिहार)

  (4) लौरिया - नन्दनगढ़ स्तम्भ लेख (बिहार)

  (5) रामपुरवा स्तम्भ लेख (बिहार)

  (6) प्रयाग स्तम्भ लेख अकबर द्वारा कौशाम्बी से इलाहाबाद किले में लगवाया।
- इस पर रानी अभिलेख, समुद्रगुप्त अभिलेख (हरिषेण), बीरबल अभिलेख, जहाँगीर अभिलेख उत्कीर्ण है।

BOOSTER ACADEMY

(2) लघु स्तम्भ लेख

- अशोक की **'राजकीय घोषणाएँ'** लघु स्तम्भ लेख पर उत्कीर्ण है। ये केवल ब्राह्मी लिपि एवं प्राकृत भाषा में है।

(1) **साँची** - संघ भेद रोकने संबंधी आदेश।
(2) **सारनाथ** - संघ भेद रोकने के आदेश।
(3) **कौशाम्बी** - संघ भेद रोकने के आदेश।
इस अभिलेख में अशोक की पत्नी कारुवाकी एवं उसके पुत्र तीवर का उल्लेख है। इसे भी **'रानी का अभिलेख'** कहते हैं।
(4) रुम्मिनदेई लघु स्तम्भ लेख -

- शासन के 20वें वर्ष में धर्म यात्रा का उल्लेख है। अशोक द्वारा लुम्बिनी के भूमिकर को 1/6 से घटाकर 1/8 कर दिया था।
- इस अभिलेख से मौर्य काल की राजस्व नीति का पता चलता है। इसलिए इसे **'आर्थिक अभिलेख'** भी कहा जाता है।

(5) निग्लिवा (निगाली सागर) लघु स्तम्भ लेख - निगालीहवा (नेपाल)।

BOOSTER ACADEMY

❑ अशोक के 14 शिलालेख एवं उनकी विषय वस्तु-

शिलालेख	विषय वस्तु
प्रथम शिलालेख	1. पशुबलि व समाज (उत्सव) का निषेध।
द्वितीय शिलालेख	1. सीमान्त राज्य (चेर, चोल, पाण्ड्य, सतियपुत्र, श्रीलंका / ताम्रपणि)। का उल्लेख। 2. पशु व मनुष्य चिकित्सा, जुड़ी-बूटी। 3. लोक-कल्याणकारी कार्य।
तृतीय शिलालेख	युक्तों, राजुकों और प्रादेशिक को प्रति पाँचवें वर्ष दौरे का आदेश।
चतुर्थ शिलालेख	रणघोष के स्थान पर धम्म घोष।
पाँचवाँ शिलालेख	धम्म महामात्रों की नियुक्ति। तात्कालिक समाज व वर्णव्यवस्था की जानकारी।
छठा शिलालेख	प्रतिवेदकों को किसी भी समय सूचना देने के आदेश। कोई भी राजा से मिल सकता है।
सातवाँ शिलालेख	धार्मिक सहिष्णुता की बात।
आठवाँ शिलालेख	धम्म यात्राओं की जानकारी।
नवाँ शिलालेख	धम्म समारोह की चर्चा।
दसवाँ शिलालेख	धम्म की श्रेष्ठता पर बल। अशोक ने आदेश दिया राजा व अधिकारी हमेशा प्रजा की सोचे।
ग्यारहवाँ शिलालेख	धम्म नीति।
बाहरवाँ शिलालेख	धार्मिक सहिष्णुता का शिलालेख। धम्म महापात्र का उल्लेख।
तेरहवाँ शिलालेख	कलिंग-विजय, पड़ोसी राज्यों का उल्लेख, आटविक जातियों का उल्लेख।
चौदहवाँ शिलालेख	धम्म के सिद्धांतों की पालना को प्रेरित किया गया।

- **2, 13 शिलालेख -** संगम/दक्षिण राज्यों का उल्लेख।
- **2, 5, 13 शिलालेख -** विदेशी राज्य/राजाओं की जानकारी।
- **2, 5, 13 शिलालेख -** धर्मप्रचारक भेजने का उल्लेख।
- **5 वां शिलालेख -** अशोक के परिवार के सदस्यों का उल्लेख।

❑ अर्थशास्त्र

- **कौटिल्य कृत -** राजनीति विज्ञान की प्राचीनतम पुस्तक।
- संस्कृत भाषा गद्य-पद्य मिश्रित सूत्र शैली में है।
- इसे प्रश्नोत्तर प्रारुप में लिखा गया है।
- इस पुस्तक के 15 अधिकरण (भाग) है, 600 श्लोक, 180 प्रकरण, 141 अध्याय है।
- छठे अधिकरण में राज्य की सात प्रकृतियों या अंगों अर्थात सप्तांग सिद्धांत / मण्डल सिद्धांत (राजा, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड, मित्र) का विवेचन है।

- कौटिल्य ने चार आश्रम बताये है।
- कौटिल्य ने अपने ऊपर आश्रित बच्चों एवं पत्नी की समुचित व्यवस्था किये बिना भिक्षु बनने वालों के लिए दण्ड का विधान किया है।

BOOSTER ACADEMY

मौर्यत्तर काल

- स्थानीय वंश
  - शुंग
  - कण्व
  - सातवाहन
- विदेशी आक्रमण
  - यवन (इंडो-ग्रीक)
  - शक
  - पहलव(पार्थियन कुषाण)

- मौर्योत्तर काल **'वैदिक पुनर्जागरण का काल'** कहा जाता है।

❑ शुंग वंश (185 - 75 ई. पू.)

❖ पुष्यमित्र शुंग

- संस्थापक - शुंग वंश।
- 185 ई. पू. में मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या कर पुष्यमित्र ने शुंग वंश की नींव डाली।
- घोसुण्डी अभिलेख में पुष्यमित्र को सर्वतात का संकर्षण कहा गया है।
- धनदेव के अयोध्या अभिलेख के अनुसार पुष्यमित्र ने दो अश्वमेद्य यज्ञ किए और पंतजलि इनके राजपुरोहित थे।
- बौद्ध ग्रंथों के अनुसार पुष्यमित्र बौद्ध धर्म का उत्पीड़क था बौद्ध ग्रंथ दिव्यावदान के अनुसार पुष्यमित्र ने अशोक द्वारा निर्मित 84000 स्तूपों को नष्ट करवाया।
- पुष्यमित्र के काल को **''वैदिक पुनर्जागरण का काल''** भी कहा जाता है। इन्होंने ब्राह्मण धर्म को संरक्षण दिया।
- पुष्यमित्र शुंग के समय यवनों (इंडो-ग्रीक) का आक्रमण हुआ, जिसे पुष्यमित्र के पौत्र और अग्निमित्र के बेटे वसुमित्र ने विफल किया।
- **इस आक्रमण की जानकारी के स्रोत** –
  (1) कालिदास की मालविकाग्निमित्रम्
  (2) पंतजलि का महाभाष्य
  (3) गार्गी संहिता का युग पुराण खण्ड
- विदर्भ (बरार) के यज्ञसेन को शुंगों का **'स्वभाविक शत्रु'** बताया गया है।
- पुष्यमित्र के समय अग्निमित्र ने यज्ञसेन को पराजित किया।
- कालिदास के नाटक मालविकाग्निमित्रम् के अनुसार यज्ञसेन की चचेरी बहन मालविका व अग्निमित्र की प्रेम कथा के साथ विदर्भ विजय का भी वर्णन मिलता है।

BOOSTER ACADEMY

❖ अग्निमित्र

- पुष्यमित्र का उत्तराधिकारी, पुष्यमित्र के समय विदिशा का उपराजा था।
- यह कालिदास कृत मालविकाग्निमित्र का नायक है।
- इसकी सभा में **'भगवती कौशिकी'** नामक बौद्ध मतावलम्बी महिला भी रहती थी।

❖ भागभद्र

- इस वंश का 9वाँ शासक था।
- इसके दरबार में तक्षशिला के यवन शासन एण्टियालकिड्स का राजदूत हेलियोडोरस आया, जिसने भागवत धर्म स्वीकार किया। **(शासन के 14वें वर्ष में)**
- हेलियोडोरस ने विदिशा में भागवत धर्म के सम्मान में गरुड़ स्तम्भ स्थापित करवाया।

❖ देवभूति

- शुंग वंश का अंतिम शासक।
- इसके प्रधानमंत्री वासुदेव कण्व ने इसकी हत्या कर दी।
- शुंगकाल में मनुस्मृति की रचना हुई।
- शुंगकाल में स्तूपों के निर्माण में पाषाण का प्रयोग होने लगा।
- इस काल में संस्कृत का पुनरुत्थान हुआ। इसके उत्थान में पंतजलि का महत्वपूर्ण योगदान रहा। पंतजलि की रचनाएँ।

1. योगदर्शन **2. योगसूत्र**

3. महाभाष्य (पाणिनी की अष्टाध्यायी पर टीका)

❑ कण्व वंश (75 ई. पू. - 30 ई. पू.)

- कण्व वंश को पुराणों में **'शुगभृंत्य'** कहा है।
- **संस्थापक** – वासुदेव।
- वासुदेव के बाद भूमिमित्र, नारायण व सुशर्मा शासक बने।
- **सुशर्मन/सुशर्मा** - अन्तिम शासक, इसकी हत्या सिमुक ने कर सातवाहन वंश की स्थापना की।

❑ सातवाहन वंश

- इस वंश की स्थापना सिमुक ने कण्व वंश के सुशर्मा (सुशर्मन) को पराजित करके की।
- प्रारम्भिक राजधानी धान्यकटक (अमरावती) थी। शातकर्णी प्रथम ने सर्वप्रथम प्रतिष्ठान (पैठन) को राजधानी बनाया।
- भारत पर सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला वंश सातवाहन था (लगभग तीन शताब्दियों तक)।
- पुराणों में सातवाहन वंश को **आन्ध्रजातीय या आन्ध्रभृत्य** कहा जाता है।

BOOSTER ACADEMY

❑ शातकर्णी प्रथम

- सातवाहन वंश का प्रथम योग्य शासक, जिसकी उपलब्धियों की जानकारी नागनिका के नानाघाट अभिलेख (पूना) से मिलती है।
- इसने दो अश्वमेद्य एवं एक राजसूय यज्ञ किया।
- **'दक्षिणापथपति'** तथा **'अप्रतिहतचक्र'** की उपाधि धारण की।

❖ हाल

- इस वंश का 17वाँ शासक, जो प्रसिद्ध कवि एवं विद्वानों का आश्रयदाता था।
- इसकी रचना **''गाथासप्तमी''** श्रृंगार रस प्रधान एक काव्य है जिसमें 700 प्रेम कहानियाँ हैं।
- **दरबारी विद्वान** - गुणाढ्य - वृहत्कथा
  सर्ववर्मन – कातंत्र
- हाल के सेनापति विजयानन्द ने श्रीलंका पर आक्रमण किया था। हाल ने श्रीलंका की राजकुमारी लीलावती से विवाह किया।
- **लीलावे लीलावती ग्रंथ** में हाल की सैनिक उपलब्धियों का वर्णन है।

❖ गौतमी पुत्र शातकर्णी (106 ई. से 130 ई.)

- इस वंश का 23वाँ व सबसे महान शासक था।
- **उपाधियाँ** - 1. अद्वितीय/एक ब्राह्मण
  2. आगम निलय (वेदों का आश्रय)
  3. वेणुकटक स्वामी (वेणुकटक नामक नगर बसाया)
  4. क्षत्रियदपमानमदनस (क्षत्रियों का दर्प चूर करने वाला)
- इसकी जानकारी अपनी माँ गौतमी बलश्री की नासिक प्रशस्ति से मिलती है।
- प्रथम सातवाहन शासन जिसने सम्पूर्ण दक्षिणापथ पर अपना प्रभुत्व जमाया।
- इसने **वर्ण व्यवस्था पुनः स्थापित** करने का प्रयास किया।
- इसने **'आवक्ष मुद्रा'** चलाई।
- अभिलेखों के अनुसार इसके घोड़े तीन समुद्र का पानी पीते थे।
- इसने क्षहरात वंश के नहपान को पराजित किया। इसलिए इसने क्षहरात वंश का निर्मूलन करने वाली उपाधि धारण की।
- **गौत्तमी पुत्र शातकर्णी ने ग्राम दान किए-**
  1. नासिक बौद्ध संघ - अजयकालकिय
  2. कार्ले भिक्षु संघ - करजक

BOOSTER ACADEMY

❖ वशिष्ठी पुत्र पुलुमावी (130 - 154 ई.)

- इस वंश का 24वाँ शासक था।
- आंध्र प्रदेश पर विजय के कारण **'प्रथम आन्ध्र सम्राट'** कहा गया और नासिक प्रशस्ति लेख में इसकी उपाधि **'दक्षिणापथेश्वर'** (आंध्र का शासक) थी।
- एकमात्र सातवाहन शासक जिसका अभिलेख अमरावती से मिलता है।
- कन्हेरी अभिलेख के अनुसार यह शक शासक रुद्रदामन से दो बार पराजित हुआ।
- वशिष्ठी पुत्र पुलुमावी के कुछ सिक्कों पर **'दो पतवारों वाले जहाज'** अंकित है।

❖ यज्ञश्री शातकर्णी (174-203 ई.)

- सातवाहन वंश का अन्तिम महत्वपूर्ण शासक था।
- इसने शकों (रुद्रदामन) द्वारा जीते गए भू-भाग को पुनः हासिल किया।
- कोरोमण्डल तट से प्राप्त सिक्कों पर **'जहाज के चित्र'** अंकित है जो इसके समुद्र प्रेम एवं व्यापार के प्रति लगाव को दर्शाते है। इसके साथ ही नाव, मछली व सीप के चित्र भी मिलते हैं।
- **पुलुमावी चतुर्थ सातवाहन** वंश का अन्तिम शासक था।

❖ सातवाहन समाज, प्रशासन एवं संस्कृति

- समाज व प्रशासन में **'मातृसत्तात्मक'** ढाँचा था। शासक अपने माता का गोत्र प्रयोग करते थे।
- समाज चार जातियों में बँटा था, गौतमी पुत्र शातकर्णी को **'वर्ण व्यवस्था का रक्षक'** बताया है।
- ब्राह्मणों को भूमिदान देने की प्रथा सातवाहनों के समय प्रारम्भ हुई।
- भूमिदान का प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य **'नानाघाट अभिलेख'** है।
- इस वंश की भाषा-प्राकृत एवं लिपि-ब्राह्मी थी।
- सातवाहन प्रशासन मौर्य प्रशासन से प्रभावित था।
- **'कटक व स्कन्धवार'** यह शब्द **'सैनिक शिविरों'** के लिए प्रयोग में लाते थे, जो प्रशासन का केन्द्र थे।
- सातवाहनों का राजचिह्न **'चैत्य'** था।
- **गौल्मिक** - गाँव का प्रशासक एवं सैनिक टुकड़ी का प्रधान।
- सातवाहनों ने **'पोटीन, ताँबे, चाँदी, सीसे और काँसे'** के सिक्के चलाएँ।
- भड़ौच (गुजरात) इस समय का प्रमुख बन्दरगाह था।
- गन्धिक इत्र बनाने वाले शिल्पी थे।

❖ ईक्ष्वाकु वंश

- संस्थापक – शांतिमूल
- ईक्ष्वाकुओं ने अपनी राजधानी अमरावती (धान्यकटक) के स्थान पर नागार्जुनकोण्डा (विजयपुरी) बनायी

BOOSTER ACADEMY

- ईटों के मंदिरों का सर्वप्रथम निर्माण ईक्ष्वाकुओं ने किया।

Note:- इस वंश के शासक ब्राह्मण धर्म के अनुयायी थे परन्तु इनकी रानियां बौद्ध धर्म का पालन करती थी।

❑ विदेशी आक्रमण

❖ इंडो ग्रीक

- भारत में प्रथम यवन आक्रमण पुष्यमित्र शुंग के समय हुआ। भारत में दो इंडो ग्रीक वंशों ने शासन किया।

डेमोट्रियम वंश
↓ राजधानी
शाकल / स्यालकोल
↓ शासक
डेमेट्रियस, यूथीडेमस, मीनाण्डार, स्ट्रेट प्रथम एवं द्वितीय

यूक्रेटाइडीज वंश
↓ राजधानी
तक्षशिला
↓ शासक
यूक्रेटाइडीज (संस्थापक) एण्टियालकीड्स

❖ डेमोट्रियम वंश

- **संस्थापक** – डेमेट्रियस
- **डेमेट्रियस**
  - पहला इण्डो ग्रीक शासक जिसने अपना राज्य भारत में स्थापित किया।
  - पहला इण्डोग्रीक शासक जिसने यूनानी एवं खरोष्ठी दोनों लिपियों वाले सिक्के चलाये।

❖ मीनाण्डार (160 B.C. – 120 B.C)

- बौद्ध भिक्षु **नागसेन** से बौद्ध धर्म की दीक्षा ली, बौद्ध ग्रंथ 'मिलिन्दपन्हो' में इनकी दार्शनिक वार्ता संकलित है। इस पालिभाषा के ग्रंथ की रचना नागसेन ने की।
- रेह एवं शिनकोट अभिलेख मीनाण्डर के है।
- भारत में (पश्चिमोत्तर क्षेत्र) सर्वप्रथम सोने के सिक्के मीनाण्डर के चलाये, जबकि युक्रेटाइडीज सबसे ज्यादा धर्म मुद्राएं जारी करने वाला इण्डो – ग्रीक शासक था।
- मीनाण्डर ने त्रिभाषिक लेख युक्त मुद्राएं चलायी।
- बैराठ से मीनाण्डर की मुद्राएं मिली है।

❖ इण्डो ग्रीक शासन का प्रभाव

- सर्वप्रथम लेखयुक्त व सोने के सिक्के जारी किए।
- साँचों से सिक्का निर्माण पद्धति (पहले - आहत)।
- सर्वप्रथम द्विभाषी व द्विलिपी मुद्रा यूनानियों ने चलाई।
- यवनिका (पर्दा) प्रारम्भ - भारतीय रंगमंच में।
- भारत में **'हैलिनिस्टिक कला'** का विकास।

BOOSTER ACADEMY

❐ शक

- मध्य एशिया की बर्बर जाति, जो बोलन दर्रे से भारत आए।
- भारतीय साहित्य में शकों को सीथियन कहा है।
- शक राजाओं को **'क्षत्रप'** कहा जाता था। भारत में **'क्षत्रप प्रणाली'** का प्रचलन शकों ने किया था, इसे शकों ने ईरान से ग्रहण किया था।
- शक शासक **'मुरूण्ड' (स्वामी)** की उपाधि धारण करते थे।

शक
- **उत्तरी शक**
  - **तक्षशिला**
  - **मथुरा**
- **पश्चिमी शक**
  - **उज्जैन**
    - **चष्टन वंश/कार्दमक वंश**
      - **रुद्रदामन**
  - **नासिक**
    - **क्षहरात वंश**
      - **नहपान**

❖ नहपान

- शकों की नासिक शाखा का क्षहरात वंश का प्रमुख राजा था।
- सातवाहन शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी से पराजित हुआ।
- शक मुद्राओं पर भगवान शिव-पार्वती के चित्र अंकित है।

❖ रुद्रदामन

- उज्जैन शाखा का शकों में सबसे प्रसिद्ध राजा था।
- रुद्रदामन ने सातवाहन शासक वशिष्ठी पुत्र पुलुमावी को दो बार पराजित किया।
- इसने **'महाक्षत्रप'** की उपाधि धारण की।
- रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख संस्कृत में लिखा गया पहला अभिलेख था।
- रुद्रदामन के समय सुदर्शन झील का पुनर्निमाण किया गया, इस समय सौराष्ट्र का गवर्नर सुविशाख था।
- भारत में सर्वप्रथम संस्कृत व तिथि लिखे सिक्के शक शासन रुद्रदामन ने शुरु किए।
- शक सातवाहन काल में सोने व चांदी के सिक्कों की विनिमय दर 1 : 35 थी।

❐ कुषाण वंश

- कुषाण पश्चिमी चीन क्षेत्र एवं मध्य एशिया के मूल निवासी थे। इनका सम्बन्ध यू-ची कबीले से था।

BOOSTER ACADEMY

❖ कुजुल कडफिसस

- भारत में कुषाण वंश की स्थापना की।

❖ विम कडफिसस/कुजुल कडफिसस-II

- भारत में वास्तविक कुषाण सत्ता की स्थापना की।
- कुषाणों में भारत में सर्वप्रथम शुद्ध सोने के सिक्के जारी किए। सिक्कों पर सर्वप्रथम शिव, नन्दी व त्रिशूल की आकृतियाँ मिलती हैं।
- उसने **'महेश्वर'** की उपाधि धारण की, वह शैव मतानुयायी था।

❖ कनिष्क प्रथम (78 ई. - 101 ई.)

- कुषाण वंश का सबसे महान शासक था।
- 78 ई. में राज्याभिषेक के साथ **शक संवत** आरम्भ किया।
- इसने **'देवपुत्र'** की उपाधि धारण की, इसे **'द्वितीय अशोक'** भी कहा जाता है।
  प्रथम राजधानी - पेशावर/पुरुष्पुर
  द्वितीय राजधानी – मथुरा
- कश्मीर में कनिष्कपुर नामक नगर बसाया।
- **कनिष्क ने पाटलिपुत्र पर आक्रमण किया तथा वहाँ से निम्न वस्तुएँ लाएँ-**
  1. बुद्ध का भिक्षापात्र **2. अनोखा मुर्गा**
  3. अश्वघोष
- कुंडलवन (कश्मीर) में वसुमित्र की अध्यक्षता में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन कनिष्क के समय हुआ।
- इसके समय गांधार व मथुरा मूर्तिकला शैली का विकास हुआ।
- इसने सिल्क मार्ग (रोम-चीन) पर नियंत्रण स्थापित किया।
- मथुरा से कनिष्क की प्रतिमा प्राप्त होती है।
- **दरबारी विद्वान**

विद्वान	**रचनाएँ**
1. वसुमित्र	विभाषाशास्त्र
2. नागार्जुन	माध्यमिकारिका (सापेक्षता का सिद्धान्त)
3. अश्वघोष	सौंधरानन्द, सारिपुत्र प्रकरण
	सूत्रालंकार, बुद्धचरित (बौद्ध धर्म का एनसाइक्लोपीडीया)
4. चरक	चरक संहिता

- सुश्रुत (सुश्रुत संहिता) कनिष्क के समकालीन था, दरबार में नहीं था।
- मानव के रूप में बुद्ध की आकृति का अंकन सर्वप्रथम कनिष्क की मुद्राओं पर हुआ।
- सर्वप्रथम मैत्रेय बुद्ध का अंकन कनिष्क के सिक्कों पर मिलता है।
- कनिष्क के ताम्बे की मुद्राओं पर **'साको मानो बुद्ध'** खुदा हुआ।
- कनिष्क की शैल प्रतिमाएं सुर्खकोटल (अफगानिस्तान) एवं सिर विहीन / कंबध मूर्ति माट (मथुरा) से मिलती है।

BOOSTER ACADEMY

❑ हुविष्क

- इसके समय सत्ता का केन्द्र पेशावर से मथुरा हो गया।
- इसके समय में सिक्कों पर सर्वाधिक संख्या में हिन्दू देवताओं का अंकन किया।
- वासुदेव कुषाण वंश का अन्तिम महान सम्राष्ट था।

❑ कुषाण शासन की विशेषताएँ

- कुषाणों ने भारत में संयुक्त शासन एवं द्वैध शासन प्रणाली की शुरूआत की।
- कुषाण शासकों ने **'देवपुत्र/देवप्रिय'** की उपाधि धारण की।
- शुद्ध सोने के सिक्के प्रचलित किए।
- घोड़े की लगाम, चमड़े के जूते, लम्बे कोट व पतलून बनाने का प्रचलन बढ़ा।
- शासक मंदिरों में अपनी मूर्तियाँ स्थापित करवाते थे।
- कुषाणों ने भारत में सर्वाधिक तांबे के सिक्के चलाये।

❑ मौर्योत्तर कालीन समाज

- इस समय स्मृतियों की रचना हुई।
- आपदधर्म - विपत्ति काल में विभिन्न वर्णों द्वारा अन्य वर्ण के कर्म को अपनाना।
- **पाणिनी व पंतजलि ने दो प्रकार के शूद्रों का उल्लेख किया-**
  (1) निरवसित - नगर से बाहर रहने वाले।
  (2) अनिरवसित - नगर सीमा में रहने वाले।

❑ मौर्यकालीन व्यापार वाणिज्य

- यह काल व्यापार की दृष्टि से समृद्ध था। इस काल को **'व्यापार वाणिज्य का स्वर्णकाल'** कहते हैं।
  कारण -
  (1) रेशम मार्ग पर भारत का अधिकार था।
  (2) रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार सम्बन्ध थे।
  (3) मुद्रा प्रणाली विकसित अवस्था में थी।
  (4) दक्षिण भारत में बन्दरगाहों की प्रचुरता थी, अरिकामेडू (पांडिचेरी) से रोमन सिक्के प्राप्त हुए हैं।
  (5) इसी समय 45 ई. में हिप्पालस (यूनानी नाविक) ने व्यापारिक पवनों की खोज की।
- शिल्पियों की श्रेणियों के प्रमुख को **'जेठ्क'** (ज्येष्ठक) कहा जाता था।

व्यापारिक संगठन	संगठन का प्रधान
निगम	श्रेष्ठि
श्रेणी	प्रमुख
पूग	ज्येष्ठक

- उज्जैन व अरिकमेडु-सूती वस्त्र के प्रमुख केन्द्र थे।

BOOSTER ACADEMY

- उज्जैन मनके बनाने का महत्वपूर्ण केन्द्र था।
- सटका (साटक) नामक वस्त्र निर्माण के लिए मथुरा प्रमुख केन्द्र था।
- कॉलची बन्दरगाह मोतियों के लिए प्रसिद्ध था।

मौर्योत्तर कालीन साहित्य

लेखक	**रचना**
पंतजलि	महाभाष्य
हॉल	गाथसप्तमी
भरतमुनि	नाट्यशास्त्र
चरक	चरक संहिता
अश्वघोष	सौन्दरानन्द, सारिपुत्र प्रकरण, बुद्ध चरित

मौर्योत्तर कालीन कला

- मौर्योत्तरकालीन मूर्तिकला पर बौद्ध धर्म एवं यूनानी प्रभाव पड़ा।
- मूर्तिकला की 3 प्रमुख शैलियाँ विकसित हुई।

विषय	गांधार	मथुरा	अमरावती
प्रभाव	यूनानी (हेलेनिस्टिक)	हिन्दू, बौद्ध, जैन	मुख्यत: बौद्ध
बुद्ध की मूर्तियाँ	बुद्ध की सर्वाधिक मूर्तियाँ	बुद्ध की प्रथम मूर्ति	
प्रतिमाएँ	खड़ी अवस्था में	पद्मासन अवस्था में	धार्मिक एवं गैर प्रतिमाएँ
विशेषता	भौतिकवादी व यथार्थवादी	आध्यामत्मिक	-
बुद्ध का चित्रण	ग्रीक देवता अपोलो के समान (घुंघरालो बाल, लम्बे वस्त्र)	प्रभा मंडल, प्रसन्नचित चेहरा, बालमुडित सिर	-
पत्थर	काला/नीला-धूसर बलुआ पत्थर	लाल बलुआ पत्थर	सफेद संगमरमर
मुख्य केन्द्र	तक्षशिला, बामियान कंधार क्षेत्र, कपिशा	मथुरा, साँची, सारनाथ	अमरावती, नागार्जुनकोंडा

BOOSTER ACADEMY

संगम काल

- दक्षिण भारत का क्रमबद्ध इतिहास संगम साहित्य से मिलता है। संगम का अर्थ – तमिल कवियों का संघ/परिषद्/गोष्ठी था
- इसे राजकीय संरक्षण प्राप्त था। (पाण्ड्य शासकों द्वारा)
- संगम साहित्य से ही ज्ञात होता है कि दक्षिण में वैदिक सभ्यता का प्रचार ऋषि अगस्त्य एंव कौंडिन्य ने किया।
- संगम साहित्य में दक्षिण के तीन महत्वपूर्ण राज्यों यथा चेर, चोल व पाण्ड्य का वर्णन मिलता है।
- तिरुक्काम्पुलियर चेर, चोल व पाण्ड्य तीनों का संगम स्थल था।
- संगम साहित्य धार्मिक साहित्य नहीं है।

संगम	स्थल	संरक्षक	अध्यक्ष	शासक	रचनाएँ
प्रथम	मदुरै	पाण्ड्य शासक	अगस्त्य ऋषि	89	उपलब्ध नहीं
द्वितीय	कपाटपुरम	पाण्ड्य शासक	अगस्त्य ऋषि	59	तोल्लकाप्पियम (तोल्लकाप्पियर कृत)
तृतीय	मदुरै	पाण्ड्य शासक	नक्कीरर	49	तिरुक्कुरल/ कुरल (तिरुवल्लुवर कृत)

संगम साहित्य

ग्रंथ	रचनाकार
तोल्लकाप्पियम	तोल्लकाप्पियर
तिरुक्कुरल (कुरल)	तिरुवल्लुवर
मणिमैखले	शीतलेसत्तनार
शिलप्पादिकारम्	इलंगोआदिगल
जीवक चिन्तामणि	तिरुतक्कदेवर
मरुगर्रूप्पादय	नक्कीरर

❑ संगमकालीन महाकाव्य

- इस काल में पाँच महाकाव्य (शिलप्पदिकारम्, मणिमैखले, जीवक चिंतामणि, वालयपति, कुंडलकेशि) लिखे गए। लेकिन वर्तमान में तीन ही उपलब्ध है –

❖ शिलप्पादिकारम्

- **रचनाकार**-इलंगोआदिगल (चेर शासक शेनगुट्टवन का भाई)
- कोवलन व कणग्गी की प्रेमकथा पर महाकाव्य है। इसमें अन्य प्रेमिका माधवी गणिका।

❖ मणिमैखले

- **रचनाकार** – शीतलेसत्तनार
- कोवलन तथा उसकी प्रेमिका माधवी से उत्पन्न पुत्री मणिमैखले पर आधारित महाकाव्य है।
- जहाँ शिल्प्पादिकारम् खत्म होता है वहाँ मणिमैखले महाकाव्य शुरु होता है।

BOOSTER ACADEMY

❖ जीवक चिंतामणि

- **रचनाकार** – तिरुतक्कदेवर (जैन धर्मावलम्बी)
- नायक – जीवक द्वारा विवाह के पश्चात् परिवार त्यागकर जैन धर्म अपनाकर सन्यास ग्रहण करता है।

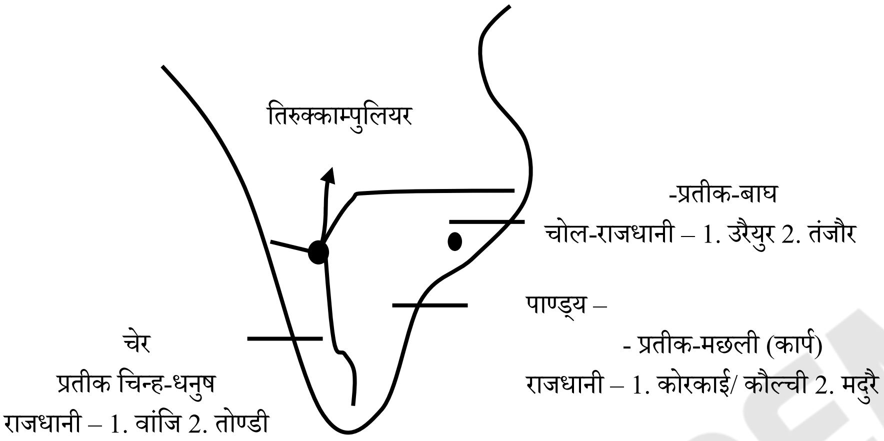

❑ चेर

- यह सबसे प्राचीन वंश, जिसका संगम साहित्य में सर्वाधिक वर्णन मिलता है।
- **चेरों का प्रतीक चिह्न – धनुष।**
  राजधानी – प्रथम - वांजि
  द्वितीय - तोण्डी
  चेर राज्य मालाबार क्षेत्र (केरल) में था।
  पुराणों में चेर वंश को **'केरलपुत'** कहा गया है।

❖ चेर वंश के प्रसिद्ध शासक

- **उदयिनजेरल :-** इसने **'पाकशाला'** का निर्माण करवाया, जिसमें जनता को भोजन करवाता था।
  इसने महाभारत के योद्धाओं को भोजन करवाया था।

- **शेनगुट्टुवन :-**
  इस वंश का सबसे महानतम शासक था।
  इसे **लाल** चेर व **भला चेर** कहा जाता है।

❑ चोल

- पेन्नारू तथा वेल्लारू नदियों के मध्य (तमिलनाडु) स्थित था।
  राजधानी – उरैयूर
  तंजौर (तंजावुर)
- उरैयूर सूती वस्त्रों का प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था।

BOOSTER ACADEMY

❖ करिकाल

- **करिकाल का अर्थ** – झुलसे पैरों वाला व शत्रु दल के हाथियों का विनाश करने वाला।
- चोल वंश का सबसे महान शासक था। (संगमकाल का भी)
- इसने तटीय राजधानी **'पुहार'** (कावेरीपत्तनम) की स्थापना की।

❑ पाण्ड्य

- प्रारम्भिक राजधानी कोरकाई (कौल्ची), वैगई नदी किनारे, बाद में मदुरै
- वैगई / वैगी नदी पाण्ड्यों की जीवन रेखा थी।
- प्रतीक चिह्न **कार्प / मछली।**
- पाण्ड्य राज्य का सर्वप्रथम उल्लेख **पाणिनी की अष्टाध्यायी में** मिलता है।
- मेगस्थनीज पाण्ड्य राज्य को **'माबर देश'** कहता है। माबर देश मोतियों के लिए विख्यात था।
- कोरकाई (कौल्ची) मोतियों के लिए विख्यात था।

❑ संगमकालीन शासन प्रणाली

- राजतंत्रात्मक एवं वंशानुगत शासन प्रणाली थी। राजा सत्ता का केन्द्र था।
- राजधानी में एक राज्यसभा (दरबार) थी जिसे **'नलबै'** कहा जाता था।
- राजा के सर्वोच्च न्यायालय को **'मनरम'** कहते थे।

❑ संगलकालीन महत्वपूर्ण शब्दावली

नाडू	प्रान्त
उर	नगर
पेरुर	बड़ा गाँव
सिरैयुर	छोटा गाँव
अवै	छोटे ग्राम की सभा
पेडियल	सार्वजनिक स्थल
सालै	प्रमुख सड़क
तेरू	प्रमुख गली
ओर्रार	गुप्तचर

BOOSTER ACADEMY

❑ सामाजिक स्थिति

संगम काल चार वर्ग में विभाजित था –

अरसर	अंडनार	वेनिगर	वेलालर
↓	↓	↓	↓
शासक	ब्राह्मण	वणिक	किसान

- खेतों में मजदूर – कडैसियर
- दास प्रथा नहीं थी।
- विधवा – विवाह एवं पुनर्विवाह का प्रचलन था।
- विदूषी महिला – अवैयार।

❑ आर्थिक स्थिति

राज्य	प्रमुख बंदरगाह
चेर राज्य	तोण्डी, मुशिरी, बंदर, वांजि, करोरा, नौरा
चोल राज्य	पुहार (कावेरीपत्तनम), उरैयूर, पोडुका
पाण्डय राज्य	शालियूर, कौरके, नेल्सिंडा

- अरिकामेडू से रोमन बस्ती के साक्ष्य मिले है।
- पुहार एक सर्वदेशीय महानगर था, यहाँ विभिन्न देशों के लोग रहते थे।
- मुरुगन की पूजा करते थे। इनका प्रतीक मुर्गा था।

BOOSTER ACADEMY

गुप्त साम्राज्य (319 - 550 ई.)

- मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद राजनीतिक एकता खण्डित हो गई थी। इसी बीच उत्तर में कुषाणों ने तथा दक्षिण में सातवाहनों ने स्थिरता लाने का प्रयास किया।
- K.M. मुंशी ने सर्वप्रथम गुप्तकाल को **"स्वर्णकाल"** कहा।
- **गुप्तों की उत्पत्ति से संबंधित विभिन्न मत –**

विद्वान	**मत**
1. ओझा, R.C. मजूमदार, वासुदेव	क्षत्रिय
2. दशरथ शर्मा, H.C. राय चौधरी	ब्राह्मण
3. K.P. जायसवाल	शूद्र
4. रोमिला थापर, अल्तेकर, R.S. शर्मा	वैश्य

- चंद्रगोमिन के व्याकरण में गुप्तों को चर्ट (जाट) कहा गया है।

Note:- वज्जिका कृत "कीर्तिकौमुदी" नाटक में चंद्रगुप्त प्रथम को **कारस्कर (शूद्र)** कहा है।

- गुप्त सम्भवतः वैश्य थे तथा कुषाणों के सामन्त रहे थे। कुषाणों से प्राप्त संसाधनों से गुप्त साम्राज्य का विस्तार हुआ।

❑ श्रीगुप्त (240 - 280 ई.)

- गुप्त साम्राज्य का आदिपुरूष / संस्थापक था।
- इसने **'महाराज'** की उपाधि धारण की थी। (सामंतों की उपाधि)
- इत्सिंग के अनुसार इसने मगध (पाटलिपुत्र) में मंदिर निर्माण करवाया था।

❑ घटोत्कच (280 - 319 ई.)

- श्रीगुप्त का पुत्र था इसकी जानकारी प्रभावती के पूना ताम्रपत्र से मिलती है।

❑ चन्द्रगुप्त प्रथम (319 - 350 ई.)

- गुप्तवंश का वास्तविक संस्थापक था।
- यह प्रथम शासक था जिसने **'महाराजाधिराज'** की उपाधि धारण की। **(श्रीगुप्त ने 'महाराज')**
- 319 ई. में गुप्त संवत् चलाया।
- लिच्छवी राजकुमारी **'कुमार देवी'** से विवाह कर वैशाली क्षेत्र को अधिकार में लिया।

  सिक्के - 1. राजा रानी प्रकार के सिक्के
  2. लिच्छवी प्रकार के सिक्के
  3. विवाह प्रकार के सिक्के

BOOSTER ACADEMY

❑ समुद्रगुप्त (350 - 375 ई.)

- गुप्त साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार इसके समय हुआ।
- **प्रयाग प्रशस्ति में उपाधियाँ -** लिच्छवी दौहित्र
  -धरणी बन्ध
  - कविराज
  - पृथिव्याम प्रतिरथ
- **'विक्रमांक'** समुद्रगुप्त की उपाधि थी।
- **रचना** – कृष्णचरित्र।
- विन्सेन्ट स्मिथ ने समुद्रगुप्त को **'भारत का नेपालियन'** कहा है।
- समुद्रगुप्त के सिक्कों पर उसे वीणा बजाते दिखाया है जो संगीत प्रेम को दर्शाता है।
- गया तथा नालन्दा ताम्रपत्र लेख में उसे परमभागवत कहा है।

❖ समुद्रगुप्त के सैन्य अभियान

आटविक राज्य	उत्तर भारत	दक्षिण भारत	सीमावर्ती राज्य	विदेशी राज्य
18 राज्यों पर विजय	9 राज्यों पर विजय, दो बार अभियान	12 राज्यों पर विजय	5 राजतंत्रात्मक राज्य (उ.पू. सीमा), 9 गणराज्य (उ.प.सीमा)	
पारिचारकीकृत नीति	प्रसभोद्धरण	ग्रहणमोक्षानुग्रह-की नीति	सर्वकारदान आज्ञाकरणप्रणामगमन	कंथोपायन आज्ञाकरण
(दास बनाने की नीति)	जड़ मूल से उखाड़ फेंकना	(राज्य जीतकर उनसे भेंट उपहार प्राप्त किए।)	(कर, आज्ञा पालन और दबरबार में उपस्थिति)	

- **समुद्रगुप्त की छः प्रकार की स्वर्ण मुद्राएँ प्राप्त होती है।**

1. गरूड़	गुप्त वंश का प्रतीक, अधिकारिक धर्म - भागवत धर्म, सौ युद्धों का विजेता
2. अश्वमेद्य प्रकार	अश्वमेघ का प्रमाण
3. धनुर्धारी प्रकार	अप्रतिरथ अंकित- उपाधि
4. परशु प्रकार	कृतान्त परशु- उपाधि
5. व्याघ्रहनन प्रकार	व्याघ्र - उपाधि
6. वीणा वादन प्रकार	वीणा बजाते दिखाया है

- **अश्वमेद्य यज्ञ -** अश्वमेद्य की जानकारी अश्वमेद्य मुद्रा एवं स्कन्दगुप्त के भितरी अभिलेख से मिलती है। प्रयाग प्रशस्ति में इसका उल्लेख नहीं है।

❖ प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तम्भ लेख)

- **हरिषेण** द्वारा रचित
- उत्कीर्णकर्ता – **तिलभट्ट**
- ब्राह्मी लिपि एवं विशुद्ध संस्कृत भाषा
- गद्य व पद्य (चम्पू शैली में)
- इसमें 33 पंक्तियां है, यह बिना तिथि का लेख है।
- समुद्रगुप्त को पृथ्वी पर निवास करने वाला देवता बातया है।
- **इस पर क्रमशः** अशोक - समुद्रगुप्त - अकबर - बीरबल - जहाँगीर के लेख है।
- प्रयाग प्रशस्ति अशोक के कौशाम्बी अभिलेख (इलाहाबाद लेख) पर उत्कीर्ण है। अकबर ने इसे कौशाम्बी से इलाहाबाद में स्थापित करवाया।

Note:- **एरण अभिलेख** में समुद्रगुप्त को **"प्रसन्न होने पर कुबेर तथा रूष्ट होने पर यमराज के समान बताया"** है। इसमें इसकी पत्नी **"दत्तदेवी"** का भी उल्लेख मिलता है।

❑ चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' (375-415 ई.)

- **विशाखदत्त** की कृति **देवीचन्द्रगुप्तम** में चन्द्रगुप्त द्वितीय के भाई रामगुप्त की कथा का वर्णन किया है। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने रामगुप्त को गद्दी से हटाकर उसकी पत्नी ध्रुवदेवी या ध्रुवस्वामिनी से विवाह किया और शासक बना।
- **उपाधियाँ -** विक्रमांक, विक्रमादित्य, परमभागवत, शकारि (अंतिम शक शासक रूद्रसिंह - III की हत्या कर उपाधि धारण की)
- गढ़वा अभिलेख में चन्द्रगुप्त द्वितीय को **'परमभागवत'** कहा है। यह प्रथम गुप्त शासक था जिसने परमभागवत की उपाधि धारण की थी।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शक शासक रूद्रसिंह तृतीय को पराजित कर, शकों का भारत से उन्मूलन किया। शक विजय के फलस्वरूप उसने चाँदी के **व्याघ्र शैली** के सिक्के चलवाए तथा **'विक्रमादित्य'** की उपाधि धारण की।
- इसका समय **'ब्राह्मण धर्म का चरमोत्कर्ष का काल'** था।

❖ मेहरौली लौह स्तम्भ लेख

- इसमें चंद्रगुप्त IInd की उपलब्धियों की जानकारी मिलती है।
- यह संस्कृत भाषा में है।
- यह मरणोत्तर अभिलेख है।
- सिंधु नदी को पार कर वाह्हिलको पराजित करने का उल्लेख।

❖ मथुरा लेख

- चंद्रगुप्त IInd के शासन का प्रथम लेख।
- सर्वप्रथम गुप्त संवत का प्रयोग (गुप्त संवत 61-380 ई.)

BOOSTER ACADEMY

- **चंद्रगुप्त IInd ने 8 प्रकार की मुद्राएं चलायी अर्थात्**
  (1) पर्यंक प्रकार की (2) धर्नुधारी
  (3) सिंह निहन्ता (4) अश्वारोही
  (5) ध्वजधारी (6) छत्रधारी
  (7) पर्यंक स्थित राजा – रानी (8) चक्र विक्रमं

❖ चंद्रगुप्त द्वितीय के वैवाहिक संबंध

- नागवंशीय राजकुमारी **कुबेरनागा** से विवाह एवं इनसे **प्रभावती गुप्त** पुत्री हुई।
- अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक शासक रूद्रसेन द्वितीय से किया, इसी वाकाटक वंश की सहायता से चंद्रगुप्त द्वितीय ने पश्चिमी भारत में शकों को पराजित किया।
- चंद्रगुप्त IInd ने अपने पुत्र कुमारगुप्त प्रथम का विवाह कुन्तल राज्य (कर्नाटक) के कदम्ब वंश के शासक काकुत्थवर्मन की पुत्री से किया।
- इसके समय चीनी यात्री फाह्यान आया था (स्थल मार्ग से आया - जल मार्ग से गया), रचना (फू - क्वो- की)। हालांकि यहाँ कहीं भी चन्द्रगुप्त का उल्लेख नहीं करता है। चाण्डालों का विस्तृत वर्णन करने वाला प्रथम विदेशी यात्री था।
- **चन्द्रगुप्त के नवरत्न -** वेतालभट्ट (जादूगर), वररूचि (व्याकरणविद्)
  घटकर्पर (कूटनीतिज्ञ), अमरसिंह (कोषकार),
  शंकु (वास्तुकार), धन्वन्तरि (चिकित्सक),
  क्षपणक (फलित ज्योतिष), कालिदास (कवि व साहित्यकार)
  वराहमिहिर (फलित ज्योतिष एवं खगोल शास्त्र)

❑ कुमारगुप्त प्रथम (महेन्द्रादित्य) (415 - 455 ई.)

- यह चन्द्रगुप्त तथा ध्रुवदेवी का पुत्र था, जिसने सर्वाधिक समय (40 वर्ष) तक शासन किया।
- कुमारगुप्त प्रथम के समय के सर्वाधिक गुप्तकालीन अभिलेख प्राप्त हुए है। (18 अभिलेख)
- इसने गरूड़ के स्थान पर मयूर की आकृति के सिक्के चलाएँ। (सर्वाधिक 14 प्रकार की मुद्राएं)
- बयाना से कुमारगुप्त प्रथम की 623 मुद्रायें मिली है।
- इसने नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना की, ह्वेनसांग इसे **'शक्रादित्य'** बताता है। इसे **'महायान बौद्ध धर्म का ऑक्सफोर्ड'** भी कहा जाता है।
- कुमारगुप्त पहला गुप्त शासक है। जिसके अभिलेख बंगाल से मिले है। (दामोदर ताम्रपत्र, धनदैह ताम्रपत्र, वैग्राम ताम्रपत्र)
- कुमारगुप्त प्रथम को तुमैन अभिलेख (ग्वालियर M.P.) में शरदकालीन सूर्य की भांति बताया है।
- मानकुंवर लेख (इलाहाबाद) में बुद्धमित्र द्वारा बुद्ध प्रतिमा स्थापित करवायें जाने का उल्लेख है।

❑ स्कन्दगुप्त (455 - 467 ई.)

- गुप्त वंश का अन्तिम महान शासक था।
- स्कन्दगुप्त वैष्णव था।
- जूनागढ़ अभिलेख के अनुसार इसने हूणों को पराजित किया।
- इसने अयोध्या को राजधानी बनाया।
- जूनागढ़ लेख के अनुसार इसके समय में सुदर्शन झील का पुननिर्माण किया गया। यह पुर्ननिर्माण सौराष्ट्र के **गवर्नर चक्रपालित** की देखरेख में किया गया। झील के किनारे एक विष्णु मंदिर का निर्माण भी करवाया।

शासक	सौराष्ट्र के गवर्नर	
चन्द्रगुप्त मौर्य	पुष्यगुप्त वैश्य	निर्माण
अशोक	तुषास्प	पुनर्निमाण
रूद्रदामन	सुविशाख	पुनर्निमाण
स्कन्दगुप्त	पर्णदत्त (इसके पुत्र चक्रपालित ने)	पुनर्निमाण

- भितरी अभिलेख के अनुसार स्कन्दगुप्त ने पुष्यमित्रों और हूणों को पराजित किया।
- स्कन्दगुप्त ने वृषभ शैली (नन्दी / बैल) की मुद्रा चलाई।
- अन्तिम गुप्त शासक विष्णुगुप्त था। (550 ई.)
- भानुगुप्त का एरण अभिलेख (510 ई.) सती प्रथा का प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य है।

❑ गुप्तकालीन प्रशासन

- गुप्तकाल में दैवीय उत्पत्ति का सिद्धान्त लोकप्रिय नहीं रहा।
- राजतंत्रात्मक एवं वंशानुगत शासन व्यवस्था थी। राजा सभी शक्तियों का केन्द्र था।
- गुप्त प्रशासन में विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति बढ़ने लगी। गुप्त काल के अन्त तक आते - आते प्रशासनिक अधिकारियों को भूमिदान किया जाने लगा जिससे सामन्तवाद को बढ़ावा मिला।
- **'कुमारमात्य'** सबसे उच्च अधिकारी होता था।
- गुप्त शासकों का राजचिन्ह गरूड़ था।

❑ गुप्तकालीन अधिकारी व विभाग

- संधिविग्राहिक — युद्ध व शांति का मंत्री
- महाबलाधिकृत — सेनापति
- महादण्डनायक — मुख्य न्यायाधीश
- प्रतिहार — अन्त: पुर का रक्षक
- दण्डपाशिक — पुलिस अधिकारी
- पुस्तपाल — भूमि का लेखा - जोखा रखने वाला अधिकारी

BOOSTER ACADEMY

- विनस्थितिस्थापक — धार्मिक एवं नैतिक मामलों का अधिकारी
- गौल्मिक — वन अधिकारी
- शौल्किक — सीमा शुल्क विभाग का प्रधान
- महाअक्षपटलिक — आय - व्यय का लेखा - जोखा रखने वाला अधिकारी
- पुरपाल — नगर का मुख्य अधिकारी
- महाभंडागाराधिकृत — राजकीय कोष का प्रधान
- अग्रहारिक — दान विभाग प्रमुख
- ध्रुवाधिकरणिक — राजस्व एकत्रित करने वाला अधिकारी
- करणिक — लिपिक

❑ प्रान्तीय, जिला व ग्राम प्रशासन

- प्रान्तों को **'भुक्ति/देश/अवनि'** कहा जाता था।
  आन्तरिक प्रान्त प्रमुख – उपरिक
  सीमान्त प्रान्त प्रमुख - गोप्ता
- प्रान्तों के नीचे विषय / जिला प्रशासनिक इकाई थी, इसका प्रमुख **'विषयपति'** था।
- **'विषयपति'** की सहायता के लिए **''विषय परिषद्''** थी, जिसका प्रमुख विषय महत्तर कहलाता था। इसमें शामिल थे-

नगर श्रेष्ठी	श्रेणियों/व्यापारियों का प्रमुख
सार्थवाह	व्यापारियों का नेता
प्रथम कुलिक	कारीगर समुदाय का प्रमुख
प्रथम कायस्थ	लिपिकों का प्रधान

- ग्राम की सबसे छोटी इकाई **पैठ** थी।

❑ न्याय व्यवस्था

- राजा सर्वोच्च न्यायाधीश था, उसकी अनुपस्थिति में **''प्राड्विवाक''** न्याय करता था।
- **महादण्डनायक, सर्वदण्डनायक, दण्डनायक** - मुख्य न्यायाधीश।
- स्मृतियों में पूग व कुल संस्थाओं का उल्लेख है जो अपने सदस्यों के विवादों का फैसला करती थी-
  पूग - नगर में विभिन्न जातियों की समिति।
  कुल - समान परिवार के सदस्यों की समिति।
- फाह्यान के अनुसार दण्ड सरल थे, शारीरिक यातनाएँ और मृत्युदण्ड नहीं थे।

BOOSTER ACADEMY

❑ राजस्व के स्रोत

- **राज्य की आय का मुख्य स्रोत भू** - राजस्व था।

कर	विषय
भाग	भूमि कर (1/6)
भोग	राजा को दैनिक वस्तुओं (फूल, फल, सब्जी) के रूप में दिया जाने वाला कर
उद्रंग	स्थायी कृषकों से प्राप्त कर
उपरिकर	अस्थायी कृषकों से प्राप्त कर
शुल्क	सीमा शुल्क, ब्रिकी शुल्क
भूगावात प्रत्याय	विदेशी वस्तुओं के आयात पर कर

- **कुटुम्बिन** - स्वतंत्र किसान।
- **कीनाश** - बटाई पर कृषि करने वाले किसान।
- **अग्रहार** - मंदिरों अथवा ब्राह्मणों को धार्मिक एवं शैक्षणिक उद्देश्यों से कर मुक्त भूमिदान।
- **ब्रह्मदेय** - ब्राह्मणों को भूमिदान।

❑ भूमि के प्रकार

क्षेत्र - खेती उपयुक्त भूमि।
वास्तु - निवास योग्य भूमि।
खिल - भूमि जो जोती नहीं जाती थी।
अप्रहत - जंगली भूमि।

- **भूमि के माप** - द्रोणवाप, आढ़वाप, कुल्यवाप, नल, निवर्तन, अंगुल, धनु, दण्ड, पाटक आदि।

सिक्के

- सर्वाधिक सोने के सिक्के गुप्त शासकों ने चलाएँ।
- बयाना (भरतपुर) से गुप्तकालीन सिक्कों का ढेर मिला है।
- **दीनार** - सोने का सिक्का
- **रूपक** - चाँदी का सिक्का
- **माषक** - ताम्बे का सिक्का

➢ पूर्व में ताम्रलिप्ति एवं पश्चिम में भड़ौच प्रमुख बन्दरगाह थे।

➢ गुप्तकाल में सूतीवस्त्र प्रमुख उद्योग था।

BOOSTER ACADEMY

❑ सैन्य व्यवस्था

- **महाबलाधिकृत** - सेना का सर्वोच्च अधिकारी।
- **चार अंग** - पैदल, रथ, अश्व, गज।
- **महापीलुपति** - गजसेना प्रधान।
- **भटाश्वपति** - अश्वसेना प्रधान।

❑ सामाजिक जीवन

- समाज चार वर्णों में विभाजित था। वर्णाधार कर्म न होकर जन्म था।
- नगरों का पतन गुप्तकाल की प्रमुख विशेषता थी। इसका प्रमुख कारण था व्यापार में गिरावट। परिणामस्वरूप ग्राम आत्मनिर्भर इकाईयों के रूप में उभरे।
- सती प्रथा प्रचलित थी। (भानुगुप्त का एरण अभिलेख इसका प्रथम साक्ष्य है)।
- **कायस्थ वर्ग** :
  - ये आय – व्ययकर, भूमिकर, लेखाकरण आदि कार्य करते थे।
  - कायस्थों का सर्वप्रथम उल्लेख "याज्ञवल्क्य स्मृति" में तथा एक **जाति** के रूप में सर्वप्रथम उल्लेख "औशनम स्मृति" में मिलता है।
- **दास प्रथा :**
  - गुप्तकाल में दास प्रथा कमजोर हुई, दास मुक्ति का विधान सर्वप्रथम नारद ने बताया।
  - मनु के 7 प्रकार के, मिताक्षरा एवं नारद ने 15 प्रकार के दासों का वर्णन किया।

- **धार्मिक दशा :**
  - गुप्तकाल ब्राह्मण धर्म का पुनरूत्थान काल माना जाता है। मंदिरों में मूर्तिपूजा का विकास गुप्तकाल से ही माना जाता है।
  - कुमारगुप्त का मंदसौर शिलालेख एवं स्कंदगुप्त का इन्दौर ताम्रलेख सूर्य उपासना से ही प्रारंभ होते हैं।
  - गुप्त शासक मुख्यत: वैष्णव धर्म के अनुयायी थे।
  - बादामी गुफाओं पर हरिहर का प्राचीनतम प्रतिमाशास्त्रीय अंकन है।
  - विष्णु के साथ लक्ष्मी का सर्वप्रथम उल्लेख जूनागढ़ अभिलेख में है।
  - गुप्त शासकों की धार्मिक सहिष्णुता से शैव धर्म का भी प्रचार हुआ, शिव-पार्वती की संयुक्त मूर्तियां (अर्द्धनारीश्वर) इसी काल में बननी शुरू हुई।
  - भगवान शिव के एकमुखी व चतुर्मुखी लिंग का निर्माण सर्वप्रथम गुप्तकाल में हुआ।
  - फाह्यान के अनुसार गुप्तकाल में पंजाब, कश्मीर एवं अफगानिस्तान बौद्ध धर्म के केन्द्र थे, गुप्तकाल में महायान सम्प्रदाय अधिक लोकप्रिय हुआ।
  - चंद्रगुप्त द्वितीय ने **"आम्रकार्द्धव"** नामक एक बौद्ध को उच्च पद दिया।
  - जैन धर्म को उच्च पद दिया।
  - जैन धर्म गुप्तकाल में जैन व्यापारियों में प्रचलित था।

BOOSTER ACADEMY

- बंगाल में पुण्ड्रवर्धन दिगम्बर सम्प्रदाय का केन्द्र था।
- आचार्य सिद्धसेन ने "न्यायवार्ता" एवं जैन मुनि सर्वनंदी ने "लोकविभंग" की रचना की।
- कहौम लेख के अनुसार स्कन्दगुप्त के समय मद्र नामक व्यक्ति ने पांच जैन तीर्थकरों की मूर्तियां स्थापित की।

❑ गुप्तकालीन कला, स्थापत्य एवं साहित्य का विकास

गुप्तकालीन कला एवं स्थापत्य

मंदिर | स्तूप सवर्धन | चित्रकला / गुफा | मूर्तिकला

❖ मंदिर:- विशेषताएँ

- अधिकांश मंदिर नागर शैली में बने।
- **चबूतरे पर मंदिर निर्माण -** सोपान (सीढ़िया) वर्गाकार चबुतरें
- चबूतरे के अन्तिम द्वार पर गर्भग्रह बनाया जाता था जिसमें मूर्ति स्थापित की जाती थी, यह सबसे पवित्र स्थान था।
- गर्भग्रह के ऊपर एक मंजिला शिखर बनाया जाता था, आरम्भिक मंदिरों में शिखर नहीं था
- गर्भग्रह के सामने मण्डप अथवा अर्धमण्डप बनाये जाते थे।
- गर्भग्रह के आन्तरिक भागों में प्रकृति चित्रण एवं इसके द्वार पर **''मकरवाहिनी गंगा'' एवं ''कूर्मवाहिनी यमुना''** की मूर्तियां बनी थी।
- गर्भग्रह के चारों ओर एक प्रदक्षिणापथ होता था।
- अधिकांश मंदिर प्रस्तर के बनाये जाते थें।

अपवाद:- दो मंदिर ईंटों के - 1. कानपुर का भीतरगांव मन्दिर
2. सिरपुर का लक्ष्मण मन्दिर (छत्तीसगढ़)

❑ मुख्य मंदिर:-

➢ **मध्य प्रदेश (M.P.) के –**

- **तिगवा का विष्णु मंदिर (जबलपुर, M.P.):-** समुद्रगुप्त ने बनवाया।
- **एरण का विष्णु मंदिर (सागर, M.P.):-** मंदिर के सामने बुधगुप्त का गरूड़ध्वज स्तम्भ बना है।
- **सांची का विष्णु मंदिर (17 नम्बर):-** नरसिंह मंदिर, प्राचीनतम मंदिर
- **नचना कुठार का पार्वती मंदिर (अजयगढ़ M.P.):-** रामायण, महाभारण का अंकन , शिव पार्वती वाद्यय बजाते हुए
- भूमरा का शिव मंदिर (सतना, M.P.)
- पिपरिया का विष्णु मंदिर (सतना M.P.)

Note:- उपरोक्त मंदिर शिखरविहिन है। तथा पाषाण के बने है।

BOOSTER ACADEMY

❖ उत्तर प्रदेश (U.P.)के मंदिर:-

➢ **देवगढ़ का दशावतार मंदिर (झांसी / ललितपुर U.P.)**

- विष्णु की शयनावस्था में मूर्ति।
- गुप्तकालीन मंदिर कला की सभी विशेषताएँ मिलने के कारण इसे सर्वश्रेष्ठ माना गया।
- विष्णु के दशावतारों की मूर्तियां मिली है।
- महाभारत का चिंत्राकन (पांच पाण्डव व द्रोपदी का चित्रण)
- नागर शैली का **पहला पुरातात्विक प्रमाण**
- भारतीय मंदिर निर्माण में **शिखर का पहला प्रयोग**

❖ कानपुर का भीतरगांव मंदिर:-

- ईटों से निर्मित मंदिर
- विष्णु का मंदिर
- कई चैत्याकार (अण्डाकार) मेहराब बने **(मेहराबों के प्रयोग का प्रथम उदाहरण)**
- रामायण व महाभारत का चित्रांकन हुआ

❖ सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर (छत्तीसगढ़)

- ईटों से बना है, विष्णु मंदिर है।
- हर्षगुप्त की महारानी वासटा के इसका निर्माण करवाया।

❒ स्तूप कला:-

- स्तूप कला बहुत पिछड़ी हुई थी।
- नवीन स्तूप की बजाय पुराने स्तूपों का सवर्धन हुआ

❖ उदाहरण:-

- **धमेख (सारनाथ) स्तूप:-** आरम्भ अशोक मौर्य के काल में तथा इसे पूर्ण कुमारदेवी गुप्त (कुमारगुप्त 1st की पत्नी) ने करवाया
- **मीरपुर खास का स्तूप:-** पाकिस्तान में
- जरासंध की बैठक का स्तूप (राजग्रह, बिहार)रत्नागिरी का स्तूप (महाराष्ट्र)
- सारनाथ में मूलगंधकुटी विहार का निर्माण किया।

❒ गुफा / चित्रकला

❖ उदयगिरि गुफा (विदिशा,M.P.)

- शैव व वैष्णव मत से सम्बन्ध
- कुल 9 गुफायें प्राप्त हुई है।

BOOSTER ACADEMY

- सर्वाधिक मूर्तियाँ वैष्णव है।
- **गुफा सं. 5-** नृवराह अवतार (विष्णु का), इसलिए इसे **वराह गुफा** भी कहते है, यह **उदयगिरि की सर्वश्रेष्ठ गुफा हैं।**

❖ अजन्ता की गुफायें:-

- **स्थिति:-** बाघोर नदी तट, पश्चिमी घाट (सहयाद्री) (औरंगाबाद जिला, महाराष्ट्र)
- **खोज -** मद्रास रेजीमेंट के सैनिक विलियम एरिस्कन (1819)
- अजन्ता में 29/30 गुफायें है। (29 पुर्ण + अपूर्ण)
- NCERT के अनुसार 29 गुफायें जबकि, A.S.I. के अनुसार 30 गुफायें
- 4 चैत्य गुफाए (9, 10, 19, 26,) इनमें चित्र नहीं है।
- 25 विहार गुफाएं, गुफा संख्या 13 सबसे प्राचीन है।
- गुफा सं. 8 - 13 तक की गुफाएं हीनयान सम्प्रदाय की है।
- गुफा संख्या 16, 17 व 19 गुप्तकालीन है, इन गुफाओं को वाकाटक नरेश पृथ्वीसेन द्वितीय के सामन्त व्याघ्रदेव (वराह देव) ने बनवाया।
- गुफा संख्या 9,10 सातवाहन शासकों के समय की (Oldest)
- वर्तमान में 17वीं गुफा में सबसे अधिक चित्र है (पहलें 16वीं गुफा में सर्वाधिक चित्र थे पर अधिकांश नष्ट हो गयें)
- गुफा संख्या 17 को **राशिचक्र गुफा** एवं **चित्रशाला** कहा जाता है इसमें सर्वश्रेष्ठ चित्र माता व शिशु का है, अधिकतर चित्र बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित है Ex. महाभिनिष्क्रमण, महापरिनिर्वाण आदि ।
- गुफा सं. 16 में मरणासन्न राजकुमारी का चित्र मिलता है। जो आनन्द की पत्नी सौन्धरा का है।

Note. इसमें 6 रंगों का प्रयोग (काला, लाल, पीला, नीला, हरा, सफेद)।
3. आलेखन:- फ्रेस्को - (नम फर्श पर चित्रण बनाना) व टेम्पेरो (सूखी फर्श पर चित्रण बनाना) दोनों विधियों का प्रयोग।

❖ बाघ की गुफाएं:-

- बाघिनी नदी तट पर (M.P.)
- **खोज -** 1818 ई. में डेजंरफील्ड ने की।
- यहाँ कुल 9 गुफाएँ है वर्तमान में केवल गुफा सं 4 व 5 में ही चित्र सुरक्षित है, इन दोनों गुफाओं को संयुक्त रूप से रंगमहल गुफा कहते है।

❖ ऐलोरा की गुफाएं:-

- **स्थिति -** औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
- यहां पर 7 वीं - 9वीं शताब्दी के बीच राष्ट्रकूट शासकों से निर्मित गुफाएं है। (कुल 34 गुफाएं)

✓ 1 - 12 तक की गुफाएँ बौद्ध धर्म से सम्बन्धित
✓ 13 - 29 तक की गुफाएँ हिन्दू धर्म से सम्बन्धित
✓ 30 - 34 तक की गुफाएँ जैन धर्म से सम्बन्धित

BOOSTER ACADEMY

❐ गुप्कालीन - मूर्तिकला:-

➢ **विशेषताएं:-**

- प्रस्तर, धातु, मृदा की मूर्तियां बनायी गयी।
- मथुरा, पाटलीपुत्र, सारनाथ (सबसे बड़ा मूर्तिकला का केन्द्र), रूपवास (भरतपुर) मूर्ति निर्माण के प्रमुख केन्द्र थे।
- बौद्ध धर्म, जैन धर्म, शैव वैष्णव धर्म की मूर्तियां बनी थी।

❖ बौद्ध मूर्तियां:-

- **सारनाथ :-** पदमासन अवस्था में धर्मचक्रप्रवर्तन मूर्ति
  पूर्णत मथुरा / स्वदेशी शैली की प्रभाव
  गुप्तकाल की सर्वोत्कृष्ट मूर्ति

✓ सारनाथ व बोधगया से प्राप्त भूमिस्पर्श मुद्रा की मूर्ति **'मार'** नाम दैत्य पर विजय का प्रतीक है।
✓ सुल्तानगंज (बिहार) से ताम्बे से बनी अभय मुद्रा में महात्मा बुद्ध की मूर्ति (7.5 फीट की मूर्ति)
✓ सारनाथ से बैठे युद्ध की मूर्ति एवं मथुरा से खड़े बद्ध की समभंग मुद्रा में मूर्ति मिली है।

❖ जैन धर्म की मूर्तियां:-

- मथुरा क पास कंकाली टीला पर महावीर स्वामी की पदमासन व ध्यानमुद्रा की मूर्ति प्राप्त हुई है।
- विदिशा (M.P.)से तीन जैन तीर्थकरों की मूर्तियां मिली है जिनमें 2 मूर्तियां 8 वें तीर्थकर **''चन्द्रप्रभु''** की तथा एक मूर्ति 9 वें तीर्थकर **''पुष्पदत्त''** की है। (ये मूर्तियां रामगुप्त के काल की है।)
- चौसा (बिहार) से मूर्तियों का भण्डार मिला है।

❖ शैव - वैष्णव मूर्तियां:-

- पहली बार नर - नारायण, दशावतार, त्रिमूर्ति, गंगा -यमुना, हरिहर की मूर्तियां बनी।
- **त्रिमूर्ति की मूर्ति** - एलीफेन्टा गुफा।
- **दशावतार मंदिर** - देवगढ़ व खजुराहों।
- **गंगा - यमुना** - प्रत्येक मंदिर में।
- **अर्द्धनारीश्वर** – मथुरा।
  Note - गुप्तकालीन मृणमूर्तिया (मिट्टी की मूर्तियां) निम्न स्थानों से प्राप्त हुई है - मथुरा (सर्वाधिक), मीरपुर खास, रंगमहल, हण्डियाल व देवियाल - **बंगाल**

❖ गुप्तकालीन साहित्य:-

- पुराणों का अब जो रूप प्राप्त होता है उसकी रचना गुप्तकाल में हुई।
- नारद, कात्यायन, पारशर व बृहस्पति स्मृति की रचना इसी काल में हुई।

Note - नारद व बृहस्पति स्मृति प्रधानतः **'विधि विषयक'** है जबकि कात्यायन स्मृति मुख्यतः **आर्थिक विषयों** पर लिखी गयी है।

रामायण व महाभारत को अन्तिम रूप गुप्तकाल में ही दिया गया - अर्थात्

BOOSTER ACADEMY

Booster Academy
Way To Success.....

रामायणः-

- **रचनाकारः-** वाल्मिकी
- आरम्भ में 6000 श्लोक थे, बाद में 24000 हो गए इसी कारण से रामायण को **'चतुर्विंशसहस्त्र संहिता'** कहा जाता है।
- **रामायण के अध्याय को काण्ड कहा जाता है। रामायण में सात काण्ड है अर्थात-**
  1. बालकाण्ड
  2. अयोध्याकाण्ड
  3. अरण्यककाण्ड
  4. किस्किन्धाकाण्ड
  5. सुन्दरकाण्ड
  6. लंकाकाण्ड / युद्धकाण्ड
  7. उत्तरकाण्ड

महाभारतः-

- **रचनाकार** – वेदव्यास
- धार्मिक मान्यतानुसार इसे भगवान गणेश ने लिखा था।
- महाभारत के अध्याय को **पर्व** कहते है, महाभारत में **18 पर्व** है।
- महाभारत का **छठा पर्व भीष्म पर्व** है, भीष्म पर्व में ही भगवद्गीता है, भगवद्गीता में 18 अध्याय है।
- **आरम्भ में** - 8000 श्लोक – जयसंहिता
  - 24000 श्लोक - भारत संहिता
  - 1,00000 श्लोक - महाभारत/शतसहस्त्र संहिता

❖ कालिदास

- गुप्तकाल में संस्कृत के महान् विद्वान कालिदास हुए, जिन्हें भारत का **'शेक्सपियर'** कहा जाता है। कालिदास की शैली को **'वेदर्भी'** शैली कहा जाता है।

कालिदास की रचनाएं

खण्डकाव्य
1. ऋतु संहार
2. मेघदूत

महाकाव्य
1. रघुवंश
2. कुमार संभव

नाटक
1. मालविकाग्निमित्र
2. विक्रमोर्वशीय
3. अभिज्ञानशाकुतंलम

विविध
1. कुन्तलेश्वरदैत्य
2. ज्योतिषविद्यावरण

❖ ऋतुसंहारः-

- 6 ऋतुओं का वर्णन, प्रकृति चित्रण, प्रथम काव्य रचना।

BOOSTER ACADEMY

❖ मेघदूत:-

- यह काव्य वाकाटक वंश शासक प्रवरसेन द्वितीय के दरबार में लिखा गया।
- रामगिरी की पहाड़ियों में कुबेर द्वारा यक्ष को निष्कासित किया, इस संदर्भ में यक्ष द्वारा अपनी प्रियतमा यक्षिणी को सन्देश भेजने हेतु मेघ से की जाने वाली याचना।

❖ रघुवंश:-

- ईक्ष्वाकु वंश के सभी शासकों (राजा दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक 40 राजाओं का उल्लेख) का उल्लेख, 19 सर्गों में किया गया है।
- सभी रसों का प्रयोग हुआ, इस कारण कालिदास को **'रससिद्धि'** की उपाधि मिली है।

❖ कुमारसंभव:-

- 17 सर्गों में लिखा गया है।
- **शिव** - पार्वती के पुत्र **''कार्तिकेय''** के जन्म की कहानी।

❖ मालविकाग्निमित्र:-

- इसमें 5 खण्ड है, यह कालिदास की प्रथम नाटक है।
- शुंग वंश के राजकुमार अग्निमित्र व मालविका के मध्य की प्रेम - प्रणय का नाट्य रूपान्तरण।

❖ विक्रमोर्वशीय:-

- विक्रम (पुरूवा/अर्जुन) व उर्वशी के मध्य प्रेम कहानी।
- यह पांच खण्डों में है।

❖ अभिज्ञानशाकुंतलम:-

- महाभारत के आदि पर्व से यह कहानी ली गई है।
- हस्तिनापुर के राजा दुष्यन्त व वन कन्या शकुंतला के मध्य प्रेम विवाह, विरह, पुनः मिलन का वर्णन किया है।
- उपमा का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण तथा यह कालिदास का अन्तिम साहित्य।
- विलियम जोंस ने इसका अंग्रेजी अनुवाद तथा गैटे ने इसका जर्मन अनुवाद किया।

❖ अन्य साहित्यकार:-

साहित्यकार		रचना
• शुद्रक	-	मृच्छकटिकम (मिट्टी का खिलौना)
	-	ब्राह्मण चारूदत्त तथा गणिका बसन्तसेना की कहानी
• विष्णुशर्मा	-	पंचतंत्र

- **विशाखदत्त -** 1. मुद्राराक्षस (नायिका विहीन नाट्य)
  2. देवीचन्द्रगुप्तम् (रामगुप्त – ध्रुवस्वामिनी, चन्द्रगुप्त द्वितीय की कहानी)
  3. अभिसार वंचिका
- **भारवि -** किरातार्जुनियम (महाभारत पर आधारित)
- **अमरसिंह -** अमरकोष (संस्कृत का विश्वकोष कहा जाता है इसे लिंगानुशासन/त्रिकाण्ड कहते है)

- **भास** – स्वप्नवासवदत्ता
- **कामन्दक** – नीतिसार
- **क्षेमेन्द्र** – वृहत्कथामंजरी
- **वात्स्यायन** – कामसूत्र
- **सिद्धसेन** – न्यायवतार
- **चन्द्रगोमिन** – चन्द्रव्याकरण
- **बुद्धघोष** - विसुद्धिमग
- **वत्सभट्टि** – रावणवध
- **दण्डिन** - काव्यादर्श, दशकुमारचरित, अवन्ति सुन्दरी कथा
- **माघ** - शिशुपाल वध

❒ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी:-

- इस दृष्टिकोण से गुप्तकाल भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल था।
- मैहरोली का लौह स्तम्भ (दिल्ली) (चन्द्रगुप्त 2nd से सम्बन्धित) गुप्तकालीन रसायन विद्या का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।
- गुप्तकाल में शून्य का सिद्धांत व दशमलव प्रणाली का विकास हुआ।

❖ आर्यभट्टः-

- 5 वीं शताब्दी, कुसुमपुर (पाटलिपुत्र) के निवासी थे ।
- आर्यभट्ट बीजगणित के जनक थे व इन्होंने सूर्य सिद्धांत का प्रतिपादन किया। आर्यभट्ट को प्रथम ऐतिहासिक खगोलशास्त्री कहा जाता है।
- आर्यभट्ट ने चन्द्रग्रहण व सूर्यग्रहण की वैज्ञानिक व्याख्या की।
- आर्यभट्ट ने कहा था कि **''पृथ्वी अपनी धुरी पर घुमती हुई सूर्य की परिक्रमा करती है।''**
- आर्यभट्ट ने त्रिभूज का क्षेत्रफल का सूत्र दिया।
- आर्यभट्ट ने पृथ्वी की त्रिज्या व π पाई का माप बताया।

Note:- आर्यभट्ट ने **''आर्यभट्टीयम''** नामक गणित की पुस्तक लिखी, इसके चार भाग है। अर्थात्

दशगतिकापाद
गणितपाद
कालक्रियापाद
गोलापाद

❖ वराहमिहिर:-

- छठी शताब्दी, उज्जैन (अवंति) का निवासी।
- वराहमिहिर **''चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर घुमता है। एवं पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घुमती है।''**

Booster Academy
Way To Success.....

- **वराहमिहिर ने खगोलशास्त्र एवं फलित ज्योतिष विद्या पर अनेक ग्रन्थ लिखे - यथा-**

✓ पंचसिद्धांन्तिका
✓ लघुजात्तक
✓ वृहज्जातक
✓ वृहत्संहिता (यह प्रथम विश्वकोषीय ग्रन्थ माना जाता है।)
✓ योगयात्रा

❖ भास्कर प्रथम:-

- छठी एवं सातवी शताब्दी (600 ई.)।
- **इन्होंने आर्यभट्ट की पुस्तकों पर कार्य किया एवं आर्यभट्ट के सिद्धांतों को सही माना, इनकी पुस्तकें**
  1. महाभास्कर्य
  2. लघुभास्कर्य

❖ ब्रह्मगुप्त:- (598 ई. जन्म, भीनमाल - जालौर)

- ब्रह्मगुप्त के गुरूत्वाकर्षण के सिद्धांत पर कार्य करते हुए कहा था कि **''पृथ्वी सभी वस्तुओं को अपनी ओर आकर्षित करती है।''**
  प्रमुख पुस्तकेः- 1. **खण्डखाद्यक** 2. **ब्रह्मसिंद्धत/ब्रह्मस्फुट सिंद्धात** 3. **ध्यानगर्भ**

❖ भास्कराचार्य 2nd :-

- 12 वीं सदी के गणितज्ञ थे।
- इनकी प्रसिद्ध रचना **''सिद्धांत शिरोमणि''** थी, इसके चार भाग थे 1. **लीलावती (यह भास्कराचार्य की पुत्री थी)** 2. **गणिताध्ययन** 3. **गोलाध्ययन** 4. **बीजगणित**

➢ **वागभट्ट** ने आयुर्वेद के दो प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे, यथा - 1. **अष्टांग हृदय** 2. **अष्टांग संग्रह**
➢ **पालकाप्य ने हाथियों की चिकित्सा सम्बन्धी ग्रंथ लिखा - ''हस्त्यायुर्वेद''**
➢ **धन्वतरि** नामक आयुर्वेद का चिकित्सक चन्द्रगुप्त 2nd के दरबार में था, जिससे **''निघण्टू''** ग्रन्थ लिखा।
➢ **सुश्रुत** गुप्तकाल में शल्यचिकित्सक थे, इनकी पुस्तक **''सुश्रुत संहिता''** के उपदेष्टा धनवंतरी थें, इसमें 121 उपकरणों का उल्लेख है।
➢ **नागार्जुन** ने रस चिकित्सा प्रणाली द्वारा सोने, चांदी, तांबे आदि धातुओं की भस्म से रोगों की चिकित्सा की।

BOOSTER ACADEMY

गुप्तोत्तर काल

❑ थानेश्वर का पुष्यभूति (वर्धन वंश)

- इस वंश का संस्थापक पुष्यभूति था। इसी के नाम पर यह वंश **"पुष्यभूति वंश"** के नाम से विख्यात हुआ। बाणभट्ट के हर्षचरित में इसका वर्णन मिलता है।

थानेश्वर का पुष्यभूति वंश –

1. नरवर्धन
↓
2. राज्यवर्धन
↓
3. आदित्य वर्धन
↓
4. प्रभाकर वर्धन
↓
2 पुत्र + 1 पुत्री
↓
5 राज्यवर्धन | 6 हर्षवर्धन | राजश्री

- दिल्ली के निकट थानेश्वर में शिव उपासक पुष्यभूति ने इस वंश की स्थापना 6ठीं शताब्दी में की। थानेश्वर को स्थाण्वींश्वर भी कहते है।
- इस वंश के प्रथम चार राजा क्रमशः नरवर्धन, राज्यवर्धन, आदित्यवर्धन और प्रभाकरवर्धन सभी सूर्य के उपासक थे।
- हर्षचरित में प्रभाकरवर्धन को **"हूणहरिणकेसरी"** कहा है। अर्थात प्रभाकरवर्धन हूण रुपी हिंरण के लिए सिंह के समान थे। सर्वप्रथम प्रभाकरवर्धन ने ही इस वंश में हूणों को परास्त किया।

❑ हर्षवर्धन (606 - 647)

- सिंहासनारोहण के समय आयु 16 वर्ष
- **पिता** - प्रभाकरवर्धन,
- **माता** – यशोमती
- **उपनाम - "शीलादित्य",** हर्ष स्वयं को महाराज के स्थान पर **'कुमार'** कहता था।
- **भाई** - राज्यवर्धन (हर्ष से बड़ा था)
- **ममेरा भाई** - भण्डी (यह हर्ष का प्रधान सचिव था)
- **बहिन** - राज्यश्री (इसका विवाह कन्नौज के मौखरि शासक ग्रहवर्मन के साथ हुआ।), गौड़ के शासक शंशाक ने हर्ष के भाई राज्यवर्धन का तथा मालवा के शासक देवगुप्त ने हर्ष के बहनोई ग्रहवर्मा का वध कर दिया।

BOOSTER ACADEMY

- हर्ष ने बौद्ध भिक्षु **दिवाकर मित्र** की सहायता से अपनी बहिन राज्यश्री को विंध्याचल के जगलों में ढूंढा।
- रविकीर्ति के ऐहोल अभिलेख के अनुसार वातापी के चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने हर्ष को नर्मदा नदी के तट पर पराजित किया। **(630 - 634 ई.)**
- हर्ष सूर्य व शिव के साथ बुद्ध की उपासना भी करता था बाद में उसका झुकाव महायान बौद्ध धर्म की ओर अधिक हो गया।
- हर्ष प्रत्येक पाचवें वर्ष प्रयाग में महोत्सव (धर्म महासम्मेलन) करके दान करता था। चीनी यात्री हेनसांग 643 ई. में इस प्रकार के छठें (6 वें) महोत्सव में शामिल हुआ था।
- हर्ष उच्च कोटि का कवि था। उसने संस्कृत में नागानन्द, रत्नावली व प्रियदर्शिका नामक तीन नाटकों की रचना की। अतः हर्ष को **'साहित्यकार सम्राट'** भी कहा जाता है।
- **'कादम्बरी' व 'हर्षचरित'** के लेखक बाणभट्ट, सुभाषितावली व सूर्यशतक के लेखक **'मयूर'** तथा हेनसांग को हर्षवर्धन ने आश्रय दिया।
- हर्ष की सभा में मातग दिवाकर नामक विद्वान था जो कि चाण्डाल था।
- हेनसांग चीनी सम्राट ताइशुंग का समकालीन था।
- यूरोपीय लेखक ने हर्ष को **''हिन्दुकाल का अकबर''** कहा है।
- हर्ष को सकलोत्तरापथनाथ (सम्पूर्ण उत्तरी भारत का सम्राट) कहा है।
- हर्ष की 647 ई. में मृत्यु के बाद ही पुष्यभूति वंश का अंत हो गया।
- हर्ष के प्रशासन व पदाधिकारियों के नाम बंसखेडा अभिलेख में मिलते है।
- हर्ष के प्रशासन में अवन्ति (युद्ध व शान्ति का अधिकारी, विदेश मंत्री), सिंघनाद - सेनापति, कुंत्तल (अश्व सेना का प्रधान), स्कन्दगुप्त (हस्ति सेना का प्रधान) थे।

❑ हेनसांग (युवान - चुवांग):-

- **जन्म 600 ई.** चीन के होनान् प्रांत में
- हेनसांग 629 ई. में चीन से भारत पहुँचा तथा वह सर्वप्रथम भारतीय राज्य कपिशा पहुँचा व बाद में हर्ष की राजधानी कन्नौज पहुँचा।
- हेनसांग ने कन्नौज की धर्मसभा की अध्यक्षता की तथा 643 ई. प्रयाग की छठी महामोक्ष परिषद में भाग लिया व 644 ई. में वह भारत से चला गया।
- हेनसांग ने अपनी यात्रा का विवरण **'सि-यू-की'** (पश्चिमी संसार का विवरण) में लिखा। हेनसांग को **''तीर्थ यात्रियों का राजकुमार''** भी कहते है।

गुप्तोत्तर काल में दक्षिण भारत
(चालुक्य, पललव एवं चोल)

चालुक्य

- **वातापी/बादामी के चालुक्य (पश्चिमी)** **(550-750 ई.)** **राष्ट्रकूटों के उदय के इनका अन्त** → **संस्थापक – पुलकेशियन प्रथम**
- **कल्याणी के चालुक्य (पश्चिमी)** **(950-1100 ई.)** **राष्ट्रकूटों के पतन से इनका उदय** → **संस्थापक- तैलप II**
- **वेंगी के चालुक्य (पूर्वी)** **(600-1200 ई.)** **संस्थापक-विष्णुवर्धन** **विलय – चोल साम्राज्य में**

❑ बादामी/वातापी के चालुक्य (550-750 ई.)

- **राजधानी** – वातापी
- **संस्थापक** - पुलकेशिन प्रथम

❖ पुलकेशिन प्रथम (535-566 ई.)

- **उपाधियाँ** - महाराज, श्रीवल्लभ, श्रीपृथ्वीवल्लभ।
- वातापी में दुर्ग का निर्माण करवाया।

❖ कीर्तिवर्मन

- इसे **'वातापी का प्रथम निर्माता'** कहा जाता है।

❖ पुलकेशिन द्वितीय (609-642 ई.)

- वातापी चालुक्यों में सबसे महान व शक्तिशाली शासक था।
- अपने चाचा मंगलेश की हत्या कर गद्दी पर बैठा।
- रविकीर्ति द्वारा लिखित एहोल अभिलेख से चालुक्यों के बारे में जानकारी मिलती है। इसमें रविकीर्ति ने स्वयं की तुलना कालिदास व भारवी से की है।
- पुलकेशिन II ने नर्मदा नदी तट पर हर्ष को पराजित किया।
- अश्वमेद्य व वाजपेय यज्ञ किये।
- **उपाधियाँ - 'परमेश्वर', 'सत्याश्रय'।**
- पल्लव चालुक्य संघर्ष हुआ। पुलकेशिन द्वितीय ने महेन्द्रवर्मन प्रथम से उत्तरी प्रदेश छीन लिया और उसे अपने भाई विष्णुवर्धन को सौंप दिया। यह शाखा **वेंगी के चालुक्य कहलायी।**
- पुलकेशिन II को पल्लव राजा नरसिंहवर्मन प्रथम ने वातापी पर आक्रमण कर मार डाला और **'वातापीकोण्ड'** की उपाधि धारण की।
- वातापी चालुक्यों का अन्तिम शासक कीर्तिवर्मन-II था, जिसकी दन्तिदुर्ग ने हत्या कर, राष्ट्रकूट वंश की स्थापना की।

BOOSTER ACADEMY

Booster Academy
Way To Success.....

कल्याणी के चालुक्य

- वातापी के चालुक्यों के पतन के बाद राष्ट्रकूट शासक बने, राष्ट्रकूट के पतन के बाद कल्याणी के चालुक्य शासक बने।
- **संस्थापक** - तैलप द्वितीय
- सोमेश्वर ने राजधानी को मान्यखेत से कल्याणी स्थानांतरित किया।

विक्रमादित्य षष्टम्

- कल्याणी के चालुक्यों में महानतम शासक था।
- **दरबारी विद्वान** – (i) विल्हण – विक्रमांकदेवचरित
  (ii) विज्ञानेश्वर - मिताक्षरा (याज्ञवलक्य स्मृति पर टीका है)

चालुक्य संस्कृति

- **राज चिह्न** - मयूर ध्वज
- **कुल देवता** - विष्णु एवं प्रतीक-वराह

चालुक्य कालीन कला क्षेत्र

- **बादामी**
  - **4 गुफा मंदिर**
    - **प्रथम-शैव**
    - **द्वितीय व तृतीय-वैष्णव**
    - **चतुर्थ-जैन**
- **एहोल**
  - **मंदिरों का नगर, 70 मंदिर**
    - **माँ दुर्गा मंदिर**
    - **मेगुती जैन मंदिर**
    - **लाडखां सूर्य मंदिर**
- **पट्डकल**
  - **नागर शैली के 4 मंदिर**
    - **पापनाथ मंदिर**
  - **द्रविड शैली के 6 मंदिर**
    - **विरुपाक्ष मंदिर**
    - **संगमेश्वर मंदिर**
    - **त्रेलोकेश्वर मंदिर (मल्लिकार्जुन)**

पल्लव वंश

- **संस्थापक** - सिंह विष्णु/सिंह वर्मा
- **राजधानी** – कांची
- **प्रतीक चिह्न** – सिंह
- संगम साहित्य में पल्लवों को **'तोडियर'** कहा गया है।

सिंह विष्णु

- इसके दरबार में भारवि था।
- **भारवि की रचना** - किरातार्जुनीयम् (संस्कृत में), भागवान शिव एवं अर्जुन की कहानी।

BOOSTER ACADEMY

❖ महेन्द्रवर्मन प्रथम (600-630 ई.)

रचनाएं
- मत्तविलासप्रहसन → कापालिकों व बौद्ध भिक्षुओं पर व्यंग्य किया।
- भगवतज्जुदियम

- यह वातापी के चालुक्य पुलकेशियन II[nd] से पराजित हुआ।
- इसके समय स्थापत्य कला के प्रथम चरण (महेन्द्रवर्मन शैली) का आरम्भ हुआ।
- इसके शासनकाल में चीनी यात्री ह्वेनसांग आया था।

❖ नरसिंहवर्मन प्रथम (630-668 ई.)

उपाधियाँ
- वातापीकोण्ड → वातापी चालुक्य पुलकेशियन II को पराजित कर मार डाला
- महामल्ल → मामल्लपुरम नगर बसाया (वर्तमान-महाबलीपुरम)

- इसने महाबलीपुरम में **'एकाश्म रथ मंदिरों'** का निर्माण करवाया। यह **'महामल्ल शैली'** कहलायी।

❖ नरसिंहवर्मन द्वितीय (700-728 ई.)/राजसिंह

- कांची में **'कैलाशनाथ मंदिर'** व महाबलीपुरम् के शोर मंदिर का निर्माण करवाया। यह **'राजसिंह शैली'** में निर्मित है।
- **दरबारी -** दण्डिन (रचनाएँ - दशकुमारचरित, काव्यादर्श, अवन्ति सुन्दरी कथा)।
- इसने काँची में एक घटिका (संस्कृत महाविद्यालय) की स्थापना की।
- इसने एक दूत मण्डल चीन भेजा। चीनी बौद्ध यात्रियों के लिए नागपट्टनम में एक विहार का निर्माण करवाया।

❖ पल्लव स्थापत्य कला

- पल्लव कला ही द्रविड़ कला की आरम्भिक अवस्था थी। इसे प्रारम्भ करने का श्रेय महेन्द्रवर्मन प्रथम को जाता है।

मंदिर स्थापत्य के तीन अंग
- **मण्डप**
- **रथ**
- **मुख्य मंदिर**

❖ पल्लव वास्तुकला के चार चरण-

1. महेन्द्रवर्मन शैली

- पहाड़ों को काटकर गुहा मंदिर का निर्माण, जिन्हें **'मण्डप'** कहा गया।

BOOSTER ACADEMY

EX. भैरवकोंडा का मण्डप, पल्लवरम का पंचपाण्डव मण्डप, मडग्गपट्टु का त्रिमूर्ति मण्डप।

2. महामल्ल शैली

- नरसिंहवर्मन प्रथम के काल में शुरू।
- **दो प्रकार -** 1. मण्डप 2. रथ/एकाश्म मंदिर।
- रथ मंदिर को **'सप्त पैगोड़ा'** कहा जाता है, ये ग्रेनाइट के बने है।
- **8 रथ मंदिर (महाबलीपुरम् में) -**
  1. द्रौपदी रथ (सबसे छोटा)
  2. धर्मराज रथ (सबसे बड़ा)
  3. अर्जुन रथ
  4. भीम रथ
  5. गणेश रथ
  6. पिंडारी रथ
  7. नकुल-सहदेव रथ
  8. वलैंयकट्टैथ रथ
- ये एक चट्टान से बने एकाश्म मंदिर है।
- महाबलीपुरम में स्वतंत्र रूप से खड़े शिलाखण्डों पर अर्जुन की तपस्या, गंगावतरण का दृश्य, भागीरथ की तपस्या महिषासुर का वध आदि मूर्तियां उत्कीर्ण है।

3. नरसिंहवर्मन द्वितीय/राजसिंह शैली

- गुहा मंदिरों के स्थान पर स्वतंत्र मंदिरों का निर्माण शुरु (इमारती मंदिर)
- काँची का कैलाशनाथ मंदिर
- मामल्लपुरम् का तटीय (शोर) मंदिर

4. नन्दीवर्मन/अपराजित शैली

- अपेक्षाकृत छोटे मंदिर
- काँची-मुक्तेश्वर, मंतगेश्वर मंदिर

❑ चोल साम्राज्य

- **संस्थापक** – विजयालय
- **राजधानी** – तंजौर
- **विजयालय** - पल्लवों का सामन्त था।
- पाण्ड्यों को हराकर उसने तंजौर पर अधिकार किया।

❖ आदित्य प्रथम

- पल्लव सत्ता को समाप्त कर चोलों ने स्वतंत्र सत्ता स्थापित की।

BOOSTER ACADEMY

- **परान्तक प्रथम**
- उत्तरमेरुर अभिलेख (919 ई. व 921 ई.) - चोल स्थानीय स्वशासन की जानकारी मिलती है।
- इसे **'उत्तम चोल'** भी कहा जाता था।
- **उपाधि** – मदुरैकोण्ड।

❖ परान्तक द्वितीय

- पाण्ड्य नरेश वीर पाण्ड्य को पराजित किया।
- इसे **'सुन्दर चोल'** भी कहा जाता है।

❖ उत्तमचोल

- चोलों में सर्वप्रथम सोने के सिक्के जारी किये।

❖ राजराज प्रथम

- **प्रारम्भिक नाम** – अरुमोलिवर्मन।
- लौह/रक्त नीति को अपनाया।
- इसने श्रीलंका पर आक्रमण कर महेन्द्र पंचम को पराजित किया और श्रीलंका के उत्तरी भाग को चोल राज्य में मिला लिया। इसे मुंडीचोलमंडलम नाम दिया।
- तंजौर में **वृहदेश्वर या राजराजेश्वर मंदिर** (शिव) का निर्माण करवाया।

❖ राजेन्द्र प्रथम

- इसे स्मिथ ने **'दक्षिण का नेपोलियन'** कहा है।
- इसने सम्पूर्ण श्रीलंका को जीता।
- इसके समय में बंगाल की खाड़ी **'चोलों की झील'** कहलाती थी।
- बंगाल के पाल शासक महिपाल प्रथम को पराजित कर गंगाघाटी अभियान सफल बनाया। इसलिए गंगैकोण्डचोल की उपाधि धारण की।
- **'गंगैकोण्डचोलपुरम'** को नई राजधानी बनाई।
- गंगैकोण्डचोलपुरम् में गंगैकोण्डचोलपुरम् मंदिर बनवाया।

❖ कुलोतुंग प्रथम

- यह शैव मातानुयायी था।
- वैष्णव सुधारक रामानुज को श्रीरंगम् छोड़ने के लिए विवश किया। भगवान विष्णु की मूर्ति को समुद्र में फिंकवा दिया जिसे रामानुज ने पुनः स्थापित करवाया।

❖ चोल शासन की विशेषताएँ –

- शासन स्वरुप राजतंत्रात्मक था।
- चोल शासक शैव मतावलम्बी थे।
- **अधिकारियों की दो श्रेणियों थीं-**
  उच्च श्रेणी – **पेरुन्दनम**
  निम्न श्रेणी – **शिरुन्दनम**
- उच्च अधिकारी - **'उडैनकूट्टम'**
- परान्तक प्रथम के उत्तरमेरूर अभिलेखों से चोलों की स्थानीय स्वशासन की जानकारी मिलती है। (स्थानीय स्वशासन चोलों की महत्वपूर्ण देन है।)
- **चोल अभिलेखों में तीन प्रकार की सभाओं का उल्लेख है।**
  (1) उर : यह सभी लोगों की ग्राम सभा
  (2) सभा / महासभा – गांव के वरिष्ठ ब्राह्मणों की सभा
  (3) नगरम् – यह व्यापारिक समुदाय की प्रशासनिक सभा थी।
- **वारियम** – स्थानीय प्रशासन की समितियां वारियम (समिति) की सदस्यता के लिए निम्नलिखित शर्तें
  (1) 35-70 के बीच आयु।
  (2) वैदिक मंत्रों का ज्ञाता हो।
  (3) डेढ़ एकड़ भूमि का मालिक हो।
  (4) अपनी भूमि में बने मकान में रहना।
- **समिति के सदस्यों की कार्यावधि एक वर्ष की होती थी।**
  प्रमुख समितियां (वारियम)
  (1) **तोट्टावारियम** – उद्यान समिति
  (2) **पोनवारियम** – स्वर्ण समिति
  (3) **सम्बत्सवारियम** – वार्षिक समिति
  (4) **येरिवारियम** – तड़ाग / तालाब समिति
  (5) **कोंयिल्वारियम** – मंदिर प्रबंधन समिति
  (6) **उदासिनवारियम** – विदेशियों की देखरेख हेतु

- शैक्षणिक प्रयोजन के लिए दी गई भूमि – **शालाभोग**
  ब्राह्मणों की सामूहिक भूमि - **अग्रहार (गणयोग्य)**
  बेगार – **बेट्टी**
  भू-राजस्व – **कडमै**
  राजस्व – **आयम**
  व्यापारिक बस्ती – **वीरपत्तम**
- चोल काल में पल्लवों के समय शुरु द्रविड़ शैली अब चरमोत्कर्ष पर थी।
- द्रविड़ शैली की प्रमुख विशेषता **वर्गाकार या ऊँचे विमान** थी।
- **राजराज प्रथम द्वारा निर्मित तंजौर का वृहदेश्वर मंदिर (राजराजेश्वर मंदिर) द्रविड़ स्थापत्य का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।**

BOOSTER ACADEMY
92162 61592, 92562 61594
Download The App Now : Booster Academy
/KAPIL CHOUDHARY RTS
/BOOSTER ACADEMY RAS

- **लेपाक्षी मंदिर में नन्दी की सबसे बड़ी मूर्ति है।**
- **अलंकृत एवं विशाल गोपुरम् इस समय की महत्वपूर्ण विशेषता है।**
- नटराज की मूर्ति बनना इस शासनकाल की प्रमुख विशेषता थी।

❖ चोलकालीन प्रमुख मंदिर

मंदिर	**शासक**
(1) चोलेश्वर	विजयालय
(2) कोरंगनाथ	परान्तक प्रथम
(3) वृहदेश्वर मंदिर	राजराज प्रथम
(4) ऐरावतेश्वर मंदिर	राजराज द्वितीय
(5) त्रिभुनवेश्वर तथा कम्हरेश्वर मंदिर	कुलोत्तुंग तृतीय

BOOSTER ACADEMY

प्राचीन भारत के विविध तथ्य :

- **कन्नड़ साहित्य के त्रिरत्न** – (रचनाएं – कन्नड़ भाषा)
  (1) पंप – आदिपुराण, विक्रमार्जुन विजय, पंपभारत।
  (2) पोन्न – शांतिपुराण
  (3) रन्ना / रन्न – अजित पुराण
  Note:- राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष ने **"कविराज मार्ग"** की रचना की थी।
- **तेलगू साहित्य के त्रिरत्न**
  (1) ननैया
  (2) टिक्कन – इसने महाभारत का तेलगू अनुवाद किया था।
  (3) येराप्रागड़
- **तमिल साहित्य के त्रिरत्न**
  (1) कम्बन – इसने कुलोतुंग IIIrd के समय तमिल भाषा में रामायण (रामावतरम्) (अनुवाद) लिखा जो तमिल साहित्य का महाकाव्य माना जाता है।
  (2) ओट्टकटन
  (3) पुगलेनिंद

❒ प्राचीन भारत में शिक्षा एवं इसके प्रमुख केन्द्र

❖ आचार्यो के प्रकार :

(1) आचार्य (नि:शुल्क पढाते थे)
(2) उपाध्याय (जीविकोपार्जन हेतु सशुल्क पढाते थे)
(3) चरक (यायावर या भ्रमणशील अध्यापक अर्थात् एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूम-घूम कर पढाने वाले)
(4) प्रवक्ता
(5) क्षोत्रिय

❖ स्त्रियां भी शिक्षा ग्रहण करती थी अर्थात्

(1) सद्योवधु : जो विवाह होने तक बह्मचार्य / शिक्षा का पालन।
(2) बह्मवादिनी : जो जीवन भर ब्रह्मचार्य का पालन कर ज्ञानार्जन करती थी।

- **हिन्दू शिक्षा के प्रमुख केन्द्र** :
  तक्षशिला
  (1) यहां पर नेत्र चिकित्सा भी होती थी। इसकी स्थापना भरत ने की तथा प्रशासन तक्ष को सौंपा।
  - कौटिल्य, वैद्य जीवक, मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त, पाणिनी, पंतजलि आदि ने यहां पर शिक्षा ग्रहण की।

❖ कांची:

- पल्लवों की राजधानी एवं दक्षिणी भारत में शिक्षा का प्रमुख केन्द्र।
- दण्डिन, शुद्रक, भारवि आदि ने अपने ग्रंथों की रचना कांची में ही की।
- कदम्ब वंशी शासक मयूरशर्मन ने भी कांची में ही शिक्षा प्राप्त की

BOOSTER ACADEMY

- **घटिका** – पल्लव काल में विद्यालयों को घटिका कहा जाता है।

❖ बौद्ध शिक्षा के प्रमुख केन्द्र

(1) नालंदा विश्वविद्यालय

- स्थिति – **राजगिरी (बिहार), महात्मा बुद्ध के शिष्य सुधर्मन की जन्म भूमि**
- इसके खण्डहरों की खोज कनिघंम द्वारा।
- निर्माण – पांचवीं शताब्दी में कुमारगुप्त प्रथम के समय।

Note:- नालंदा विश्वविद्यालय के खर्चे हेतु 200 गाँवों की आय दी जाती थी।

- नालंदा विश्वविद्यालय महायान बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र था।
- नालंदा विश्वविद्यालय के तीन भवनों (रत्नोदधि, रत्नसागर व रत्नरंजक) में **"धर्मगज्ज"** नामक भव्य पुस्तकालय था।
- ह्नेनसांग के समय इस विश्वविद्यालय में 10000 से भी ज्यादा विद्यार्थी पढ़ते थे तथा 1510 शिक्षक थे।
- ह्नेनसांग ने यहां पर **योगाशास्त्र** का अध्ययन किया।
- चीनी यात्री ह्नेनसांग के समय यहां का कुलपति "**शीलभद्र**" था तथा इत्सिंग के समय **"राहुलमित्र"** था।
- 1203 ई. में इस विश्वविद्यालय को बख्तियार खिलजी ने नष्ट कर दिया।

❖ विक्रमशिला विश्वविद्यालय :

- **संस्थापक** – 8वीं शताब्दी में पाल शासक धर्मपाल द्वारा निर्माण।
- **स्थिति** : - अन्तीचक गांव (भागलपुर जिला, बिहार)
- विक्रमशिला विश्वविद्यालय तंत्रयान / वज्रयान शाखा का प्रमुख केन्द्र था।
- बौद्ध विद्वान दीपंकर श्री अतिशा (11वीं शताब्दी) ने यहां से शिक्षा प्राप्त की, यहां अध्यापन का कार्य किया एवं यहां पर कुलपति भी रहे।
- 1203 ई. में इसे बख्तियार खिलजी ने जला दिया था।

षड्दर्शन

दर्शन	**प्रतिपादक**
(1) सांख्य दर्शन	ऋषि कपिल
(2) योग दर्शन	पंतजलि
(3) न्याय दर्शन	गौतम (अक्षपाद)
(4) वैशेषिक	कणाद / उलूक
(5) मीमांसा (पूर्व मीमांसा)	जैमिनी
(6) उत्तर मीमांसा	वादरायण

❖ प्रमुख मंदिर (नागर शैली)

BOOSTER ACADEMY

(1) **खजुराहों के मंदिर** (M.P.)

- इनका निर्माण चंदेल शासकों द्वारा करवाया गया था।

Note:- खजुराहों के मंदिरों में सर्वाधिक प्रसिद्ध मंदिर कदांरिया महादेव का मंदिर है जिसका निर्माण विद्याधर चंदेल के द्वारा किया गया।

- चित्रगुप्त मंदिर खजुराहों का एकमात्र सूर्य मंदिर है।

❒ ओडिशा / उडीसा के प्रमुख मंदिर

- भुवनेश्वर को मंदिरों की नगरी कहा जाता है।

❖ लिंगराज मंदिर

- स्थिति – भुवनेश्वर, नागर शैली का सर्वोत्कृष्ट मंदिर
- निर्माण – सोमवंशी शासक ललतिन्दु केसरी ने इसकी नींव रखी थी तथा ययाति प्रथम शासक ने इसे वर्तमान स्वरूप दिया।

❖ पुरी का जगन्नाथ मंदिर – श्रीकृष्ण को समर्पित

- 12वीं शताब्दी में इसका निर्माण गंग शासक **"अनंतवर्मा चोड्गंग"** ने करवाया।

❖ कोर्णाक का सूर्य मंदिर / काला पेगोडा

- निर्माणकर्ता – गंग शासक नरसिंह देव प्रथम द्वारा।
- उड़ीसा का विशालतम मंदिर।
- सूर्य की धूप द्वारा कुष्ठ रोगों का इलाज।

BOOSTER ACADEMY

त्रिपक्षीय संघर्ष (Tripartite conflict)

- गुप्तोत्तर काल में पाटलिपुत्र के स्थान पर कन्नौज का राजनैतिक सत्ता के केन्द्र के रूप में उदय हुआ, कन्नौज को **"सम्राटों की क्रीडा स्थली"** भी कहा जाता है।
- हर्ष की मृत्यु के बाद कन्नौज की गद्दी पर शासन करने वाला प्रमुख शासक **यशोवर्मन** था।
- यशोवर्मन के दरबार में वाकपति एवं भवभूति नामक विद्वान रहते थे।
- वाकपति की रचना – गोडवाहों (प्राकृत भाषा)
- भवभूति रचनाएं – मालतीमाधव, उत्तररामचरित, महावीरचरित
- यशोवर्मन की मृत्यु के पश्चात् कन्नौज अधिपत्य को लेकर तीन महाशक्तियों के मध्य संघर्ष हुआ, जिसे त्रिपक्षीय संघर्ष कहते है। ये तीन शक्तियां – **गुर्जर-प्रतिहार, पाल एवं राष्ट्रकूट**

❒ गुर्जर – प्रतिहार

- हरिशचंद्र – आदिपुरूष / संस्थापक
- इन्हे **'रोहिलद्धि'** भी कहा जाता है।
- गुर्जर प्रतिहार स्वयं को लक्ष्मण (सौमित्र) का वंशज मानते थे।
- प्रारंभ में इनकी राजधानी मण्डौर एवं कालान्तर में भीनमाल को बनाया।

❖ नागभट्ट प्रथम:

- अरबों (जुनैद के नेतृत्व वाली सेना) को पराजित किया।
- मिहिरभोज की ग्वालियर प्रशस्ति में नागभट्ट प्रथम को "नारायण अवतार" तथा "म्लेच्छों (अरबों) का नाशक" बताया है।

❖ वत्सराज

- प्रतिहार साम्राज्य का **वास्तविक संस्थापक।**
- वत्सराज के समय के कन्नौज के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष शुरू हुआ।

❖ नागभट्ट द्वितीय

- कन्नौज को राजधानी बनाया।
- ग्वालियर प्रशस्ति के अनुसार नागभट्ट द्वितीय के तुरूष्कों (मुसलमानों) को पराजित किया।
- नागभट्ट द्वितीय ने गंगा में जल समाधि द्वारा प्राण त्यागे।

❖ मिहिरभोज

- **उपाधियां** – आदिवराह (ग्वालियर अभिलेख)
  प्रभास (दौलतपुर) अभिलेख
- **शून्य का प्रथम अभिलेखीय** प्रमाण मिहिरभोज (भोज - प्रतिहार) के ग्वालियर अभिलेख से मिलता है।

BOOSTER ACADEMY

- इसके समय अरब यात्री सुलेमान भारत आया था, जिसने मिहिरभोज को अरबों का स्वाभाविक शत्रु बताया।

❖ महेन्द्रपाल प्रथम :

- इनके गुरू राजशेखर थे, जो इनके दरबारी विद्वान भी थे, इनकी पुस्तकें –
  1. काव्यमीमांसा
  2. हरविलास
  3. भुवनकोष

  (1–3) — काव्य ग्रंथ

  4. विद्वसाल भंजिका
  5. बाल भारत (प्रंचड पाण्डव)
  6. बाल रामायण
  7. कर्पूरमंजरी

  (4–7) — नाटक

- कर्पूरमंजरी प्राकृत भाषा में लिखा नाटक है। जो राजशेखर ने अपनी पत्नी अवन्तिसुन्दरी के आग्रह पर इसकी रचना की।
- राजशेखर ने महेन्द्रपाल प्रथम को निम्नलिखित उपाधियां दी, निर्भयराज, रघुकुल चूडामणि एवं रघुकुल तिलक।

❖ महीपाल प्रथम

- राजशेखर महीपाल प्रथम का ही गुरू था, इसने महीपाल प्रथम को "रघुकुल मुक्तामणि" एवं "रघुवंश मुकुट मणि" की उपाधियां दी।
- बगदाद यात्री अलमसूदी (पुस्तक – मुरूजल जहाब) महीपाल प्रथम के समय भारत आया एवं इसने महीपाल को "बऊर / बौरा" कहा जाता है।

Note:- अल मसूदी ने गुर्जर – प्रतिहार राज्यों को **"अल जुजर"** कहा।

- सास – बहू अभिलेख महीपाल द्वितीय का है।

Note:- इस वंश का अंतिम शासक **यशपाल** था।

BOOSTER ACADEMY

पाल वंश

- इस वंश का संस्थापक "गोपाल" था।
- पाल वंश के संस्थापक बौद्ध धर्म के अनुयायी थे।

❒ प्रमुख शासक

❖ धर्मपाल

- पाल वंश का सबसे महान शासक
- **"विक्रमशील", "निर्वाण नारायण", "राजत्रयाधिपति"** आदि उपाधियां धारण की।
- **"विक्रमशिला विश्वविद्यालय"** की स्थापना की।
- गुजराती कवि सोढ्ढल ने **उदय सुंदरी कथा में धर्मपाल को "उत्तरापथ स्वामी"** कहा है।

❖ महीपाल प्रथम

- पाल वंश का दूसरा संस्थापक
- महीपाल ने दीपकंर श्रीज्ञान (अतिसा) नामक बौद्ध भिक्षु के नेतृत्व में एक बौद्ध प्रचार मण्डल तिब्बत भेजा।

❖ रामपाल

- इसके दरबार में "संध्याकरनंदी" विद्वान था इसके द्वारा "रामपाल चरित / रामचरित" लिखा गया था, जिसमें कैवर्त किसान विद्रोह का उल्लेख है।

BOOSTER ACADEMY

राष्ट्रकूट वंश

- दक्षिण से उत्तर भारत की राजनीति में हस्तक्षेप करने वाली दक्षिण की पहली शक्ति राष्ट्रकूट थी।

❖ दन्तिदुर्ग

- राष्ट्रकूट वंश का संस्थापक
- इसने ऐलोरा में दशावतार मंदिर (गुफा सं. 15) का निर्माण करवाया।

❖ कृष्ण प्रथम

- उपाधियां – शुभतुंग, क्षतप्रजाबाध : आदि।
- पथरीली पहाड़ी के पाषाण को काटकर **ऐलोरा में प्रसिद्ध कैलाश मंदिर** (गुफा सं. 16, गुहा मंदिर) का निर्माण करवाया, इस मंदिर का मुख्य वास्तुकार "कोंकण" था, इस मंदिर को शैलकृत स्थापत्य का आश्चर्य कहा जाता है।

❖ ध्रुव प्रथम

- उपाधि – धारा वर्ष
- प्रथम राष्ट्रकूट शासक जिसने त्रिकोणीय संघर्ष में भाग लिया।

❖ अमोघवर्ष

- जैन धर्म का अनुयायी
- लक्ष्मी देवी का भक्त (प्रजा को महामारी से बचाने हेतु अपने बांये हाथ की अंगुली काटकर लक्ष्मी देवी को भेंट कर दी थी।
- अमोघवर्ष की रचनाएं – कविराज मार्ग, रत्नामालिका
- अमोघवर्ष ने निम्नलिखित विद्वानों को अपने दरबार में आश्रय दिया।

विद्वान	**रचना**
जिनसेन	आदिपुराण
शकटायन	अमोघवृत्ति
महावीर चार्य	गणित सार संग्रह

- अरब यात्री सुलेमान ने अमोघवर्ष के राज्य को **"बल्हर"** कहा।

❖ इंद्र तृतीय

- अरब यात्री **अल मसूदी** ने राष्ट्रकूट शासक इन्द्र तृतीय को भारत का सर्वश्रेष्ठ शासक बताया है।

❖ कृष्ण तृतीय

- उपाधि – **अकालवर्ष**
- कृष्ण तृतीय के काल में हलायुध ने **"कवि रहस्य",** कन्नड़ भाषा के कवि पम्पा ने **"आदि पुराण तथा कन्नड कवि पोन्न ने शांति पुराण"** की रचना की।

Note:- राष्ट्रकूटों ने अपने राज्य में अरब व्यापारियों को बसने, इस्लाम के प्रचार एवं मस्जिद बनाने की स्वतंत्रता दी।

Booster Academy
Way To Success.....

Note:- महिलाएं चेहरे पर पर्दा नहीं करती (अरब लेखक अबुजैद के अनुसार)

- त्रिपक्षीय संघर्ष आठवीं शताब्दी के अंत से शुरू होकर लगभग 150 वर्षों तक अनेक चरणों में चला।
- त्रिपक्षीय संघर्ष में अन्ततोगत्वा गुर्जर – प्रतिहारों की ही विजय रही। नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया और कन्नौज को प्रतिहारों की स्थायी राजधानी बनाया।
- त्रिपक्षीय संघर्ष का प्रथम चरण वत्सराज, ध्रुव प्रथम व धर्मपाल के बीच हुआ।

गुर्जर -प्रतिहार	पाल	राष्ट्रकूट
वत्सराज (783-800 ई.)	धर्मपाल (770-810 ई.)	ध्रुव प्रथम (780-793 ई.)
नागभट्ट द्वितीय (800-833 ई.)	देवपाल (810-850 ई.)	गोविंद तृतीय (793-814 ई.)
मिहिरभोज (836-885 ई.)	विग्रहपाल (850-854 ई.)	अमोघवर्ष प्रथम (814-878 ई.)
महेन्द्रपाल प्रथम (885-910 ई.)	नारायण पाल (854-915 ई.)	कृष्ण द्वितीय (878-915 ई.)
महीपाल प्रथम (912-943 ई.)		इन्द्र तृतीय (915-922 ई.)

BOOSTER ACADEMY